# जन्म-मरण की पहेली



सन्तराम बी. ए.





Sri Kanth Kaul

विश्वेश्वरानन्द संस्थान प्रकाशन—६२६

Vishveshvaranand Institute Publication—626

# सर्वदानन्द विश्व ग्रन्थमाला
# SARVADANAND UNIVERSAL SERIES

ग्रन्थ—६५

Volume—LXV





1974 ई०

२०३१ वि०

## अस्याः स्मारकग्रन्थमालायाः समर्पणम्

पञ्चापे लब्धजन्माऽऽसीद् होश्यारपुर-मण्डले ।
महात्मा **सर्वदानन्दस्** तपः-सिद्धो यतीश्वरः ॥ १ ॥

वेद-वेदान्त-सच्छ्रद्धः प्रशान्ताऽशेष-वासनः ।
सत्यधर्म-प्रचारार्थं लोकसेवा-दृढव्रतः ॥ २ ॥

सत्प्रेरणाभिराशीर्भिर् योऽभवद् मुनि-सत्तमः ।
अस्माकं सर्वदा मान्यः **संस्थानस्याऽस्य** पोषकः ॥ ३ ॥

तस्याऽस्तु सुचिर-स्मृत्यै पूजायै च समर्पिता ।
**श्रीविश्वग्रन्थमालेयं** तन्नाम्ना योपशोभिता ॥ ४ ॥

आद्य संस्थापक सम्पादक

**स्व० विश्वबन्धु**

संपादक

**रत्नाराम**

संचालक, विश्वेश्वरानन्द संस्थान

प्रकाशक

**विश्वेश्वरानन्द वैदिक-शोध-संस्थान, होशिआरपुर**

स. वि. ग्रन्थमाला—६५  S.U. Series—65



# जन्म-मरण की पहेली



लेखक

सन्तराम, बी. ए.

होशिआरपुर

विश्वेश्वरानन्द वैदिक-शोध-संस्थान

१९७४

प्रथम संस्करण

सन् १९७४ (ई०) संवत् २०३१ (वि०)

मूल्य : रु० ३.४०.

मुद्रक एवं प्रकाशक :

देवदत्त शास्त्री, विद्याभास्कर,

विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोधसंस्थान प्रैस,

साधुआश्रम, होशिआरपुर (पं., भारत)

# विषय-सूची

# प्रकाशकीय

इन पंक्तियों के लेखक को 'जन्म-मरण' के विषय में बहुत जिज्ञासा रही है। इसमें उसका एक निजी अनुभव है। बात सन १९१२-१३ की होगी जब मैं बारह-तेरह वर्ष का था। तब डी०ए०वी० कालेज, लाहौर के संस्कृत-विभाग की आरम्भिक कक्षा में अध्ययन करते हुए मुझे अपने कुछ सहपाठी समवयस्क छात्रों के साथ 'जहांगीर के मकबरे' को पहली बार देखने के लिए जाने का अवसर मिला। मकबरे को देखकर मेरे सभी साथियों को उसके कुछ थोड़ी दूर बसी 'शाहदरे' की बस्ती देखने का चाव हुआ। उसके बाजार को देखते हुए हम एक खाली स्थान पर बैठ गये। कुछ देर गप-शप करने के बाद हम फिर उस बाजार में चल पड़े। मैंने अपने साथियों को कहा कि मुझे कुछ ऐसा भासता है कि इस बाजार में थोड़ी दूर और आगे जाने पर बाएं हाथ एक गली आती है। उस गली में कुछ दूर चलने पर उस गली को छतने वाली एक डयोढ़ी आती है। उसके पास ही एक मकान है, जिसके दरवाजे हरे रंग के हैं और मुंह पश्चिम की ओर है। ये सब मैं अपने साथियों से किसी अज्ञात अन्त:प्रेरणा-वश होकर ही कह बैठा था, क्यों कि पहले कभी भी मुझे इस स्थान को देखने का अवसर नहीं मिला था। कौतुक से हम उधर चल पड़े। गली आ गई और हम उधर मुड़ गये। थोड़ी दूर पर सचमुच वह स्थान आ गया। साथी भी हैरान थे और मैं भी हैरान था। मकान का दरवाजा खुला था। अन्दर एक बड़ा भारी सेहन था। जब उधर देखा, तो कोई व्यक्ति नहीं दिखाई दिया। भय से हम में से किसी की भी अन्दर जाने की हिम्मत न पड़ी।

इन पंक्तियों के लेखक का घर गुजरात जिले के एक छोटे से कस्बे में था, जिसमें मुसलमान तो बहुत अधिक संख्या में थे ही, पर हिन्दुओं के भी काफ़ी घर थे। घर जाते हुए 'शाहदरे' का स्टेशन लाहौर से गाड़ी पर जाते हुए दूसरा था। जब गाड़ी शाहदरे से चलती

थी, तो कुछ दूरी पर जाते हुए लाइन की बाईं ओर काफ़ी खुला मैदान था। उसे देखते हुए मुझे सदा यह अनुभव होता था, कि यह मेरा परिचित स्थान है। मैं यहां जैसे खेलता रहा हूँ। उस स्थान से मुझे 'उन्स' हो गया। अत: जब कभी गाड़ी से घर जाता या आता, तो उस स्थान को देखने की मेरी उत्सुकता बढ़ जाती। यह सभी कुछ क्यों होता था, इसका उत्तर सिवाय विस्मय के मेरे पास कोई नहीं था। बात आई-गई होगी। वह क्यों हुआ, इस जिज्ञासा को हल करने का सुयोग, साधन तथा अवसर नहीं मिल पाया।

अत:, इन पंक्तियों के लेखक को पुनर्जन्म पर विश्वास होना स्वाभाविक है। इसलिये इस पुस्तक के विषय में उसकी रुचि अधिक है। ऐसी घटनाएं कभी-कभी श्रवणगोचर होती हैं और समाचार-पत्रों में प्रकाशित होती रहती हैं।

इस पुस्तक के लेखक मेरे गुरुसमान मान्य श्री सन्तराम जी को भी इस विषय में बड़ी रुचि है। अविभाजित पंजाब से अब तक इस प्रान्त में वे हिन्दी के एक कुशल व प्रतिष्ठित लेखक हैं। इस संस्थान ने उनकी बीस से ऊपर पुस्तकें प्रकाशित की हैं तथा अन्य भी मान्य प्रकाशकों द्वारा उनकी बहुत सी पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं। श्री सन्तराम जी चिरायु हों और उनकी शक्ति बनी रहे ताकि वे हिन्दी-साहित्य की आगे और भी सेवा कर सकें।

प्रस्तुत ग्रन्थ 'जन्म-मरण की पहेली' पाठकों को बहुत रुचिकर लगेगा। मुझे आशा है कि भारतवर्ष तथा बिदेश के प्रामाणिक पत्रों में इस सम्बन्ध में जो घटनाएं प्रकाशित हुई हैं, उन्हें यहां एकत्र पढ़ने से पाठकों को इस पहेली के विषय में सोचने की काफ़ी सहायता मिलेगी। इस ग्रंथ के सुचारुरूप से प्रकाशन तथा प्रूफ़-संशोधन के कार्य में संस्थान के कर्मिष्ठ प्रा. रत्नचन्द शर्मा, एम.ए., एम.ओ.एल. ने जो सहयोग प्रदान किया है, उस के लिए लेखक तथा प्रकाशक आभारी हैं।

प्रकाशक : **देवदत्त शास्त्री**

# १. कर्मवाद और जन्मान्तर

मनुष्य इस संसार में कहां से आता है और मृत्यु के उपरान्त कहां चला जाता है ? क्या शरीर के अन्त के साथ उसके जीवन का भी अन्त हो जाता है, या उसकी देह के नष्ट हो जाने के बाद भी उसकी आत्मा नहीं मरती ? संसार में हम कुछ लोगों को नीरोग, कुछ को रोगी, कुछ को धनी और कुछ को दरिद्र, कुछ को सुखी और कुछ को दुःखी, कुछ को बुद्धिमान् और कुछ को मूढ़ पाते हैं। इस विषमता का क्या कारण है ? यह और ऐसे ही दूसरे प्रश्न सब देशों और सब युगों के विचारशील व्यक्तियों को बेचैन करते रहे हैं और अब भी कर रहे हैं। मिस्र, ईराक, चीन, यूनान, ब्रिटेन आदि देशों और ईसाई, मुसलमान तथा यहूदी प्रभृति धर्मों के लोगों ने मनुष्य की इस जिज्ञासा को शान्त करने के लिए अपनी बुद्धि, अनुभव और चिन्तन के अनुसार विभिन्न समाधान उपस्थित किए हैं। परन्तु इनका जैसा अच्छा समाधान प्राचीन भारत के मनीषियों ने प्रस्तुत किया है, उतना अच्छा कदाचित् ही किसी दूसरे ने किया हो। कर्मवाद और जन्मान्तर से बढ़कर संतोषदायक इन जटिल प्रश्नों का दूसरा कोई समाधान आज तक नहीं मिला।

**कर्म-सिद्धान्त—**

कर्म का सिद्धान्त जटिल होते हुए भी बड़ा सरल है। यह सिद्धान्त कहता है कि मनुष्य जैसा भी अच्छा या बुरा कर्म करता है वह वैसा ही अच्छा या बुरा फल पाता है। जैसे कोई

मनुष्य बबूल का बीज बो कर आम का फल नहीं खा सकता, उसी प्रकार कोई मनुष्य कुकर्म करके सुखी होने की आशा नहीं रख सकता। मनुष्य कर्म करने में स्वतंत्र है। वह अपनी इच्छा से अच्छे या बुरे कर्म कर सकता है, परन्तु इन कर्मों का फल भोगने में वह स्वतंत्र नहीं। अपने कर्मों का फल भोगना उसके लिए अनिवार्य है। कई कर्म ऐसे होते हैं जिनका फल मनुष्य को तत्काल मिल जाता है और कई कर्म ऐसे होते हैं जिनका फल भोगने के लिए उसे कुछ देर ठहरना पड़ता है। इतना ही नहीं, जिन कर्मों का पुरस्कार या दण्ड वह इस जन्म में नहीं पा सकता उनका फल उसे अगले जन्म में मिलता है। कर्म-विपाक की इस रीति को स्पष्ट करने के लिए एक उदाहरण सुनिए :—

कई वर्ष हुए "थियोसोफिस्ट" पत्र में एक सच्ची कहानी छपी थी। वह कहानी श्रीयुत हीरेन्द्रनाथ दत्त, एम० ए०, 'वेदान्तरत्न' ने अपनी बंगला-पुस्तक "कर्मवाद और जन्मान्तर" में भी दी है। इससे कर्म की विपाक-रीति का पता लगता है। यदि कोई एक जन्म में समीप के आत्मीय की, जिस पर कि दयान्वित और सस्नेह व्यवहार करना उसका कर्तव्य है, अवज्ञा और अनादर करता है तो यह असम्भव नहीं कि अगले जन्म में वही अवज्ञात आत्मीय उसका विशेष आदर-पात्र होकर जन्म लेगा और उसके दुलार को आकर्षित करके वह उसकी आंखों का तारा होगा। फिर अकाल में उसके सभी स्नेह-बन्धनों को तोड़-ताड़कर उसे अपार शोक-सागर में बहा कर धोखा दे जाएगा। वह कहानी इस प्रकार है—

महाराष्ट्र के पहाड़ी प्रदेश में एक डाकू रहता था। लूट-खसोट करना उसका व्यवसाय था। दैवयोग की बात है

कि एक दिन एक बनिया बहुत-सी धन-सम्पदा साथ लिए उस पहाड़ी मार्ग से अपने देश को जा रहा था। वह डाकू के पंजे में पड़ गया। उसने डाकू से गिड़गिड़ा कर कहा कि मेरी धन-सम्पदा बेशक ले लो, परन्तु मेरे प्राण छोड़ दो। किन्तु, निर्दय डाकू ने उसकी प्रार्थना अनसुनी कर दी और धन-दौलत लूटने के साथ उसकी हत्या भी कर डाली। बहुत-सा धन और माल हाथ लग जाने के कारण, अब उस डाकू ने डकैती करना छोड़ दिया। अब वह एक धनी मनुष्य की भांति रहने लगा। उसे कोई सन्तान न थी। बुढ़ापे में उसके यहां एक सुकुमार पुत्र का जन्म हुआ। वह बेटा वृद्ध पिता को प्राणों से भी अधिक प्रिय था। बुड्ढे ने इस बेटे को पालने-पोसने और लिखाने-पढ़ाने में बहुत धन व्यय किया। विवाह-योग्य हो जाने पर उसने एक सुन्दरी कन्या के साथ उसका विवाह कर दिया। बुड्ढे की मानों सभी कामनाएं पूर्ण हो गईं। उसके हृदय में आशा का फव्वारा छूटने लगा। इसके कुछ काल उपरान्त उस लड़के को एकाएक ऐसा रोग हो गया कि उसे खटिया पकड़नी पड़ी। पिता ने बहुत धन खर्च करके बड़े-बड़े प्रसिद्ध वैद्यों से उसकी चिकित्सा कराई और चतुर पण्डितों से पूजा-पाठ कराकर उसे बचाने के लिए भरसक यत्न किया। परन्तु उसका कोई भी उपाय सफल नहीं हुआ। धीरे-धीरे सभी ने उसके जीने की आशा छोड़ दी।

इसी बीच एक दिन रोगी को कुछ आराम-सा मालूम हुआ। प्रसन्नता से उसके पिता का मुखमण्डल खिल गया। वह बेटे के पलंग पर एक ओर जा बैठा। पुत्र ने संकेत से बताया कि मैं पिता से कुछ गुप्त बात करना चाहता हूं। तब नौकर-चाकरों और वैद्यों को दूसरे कमरे में भेज दिया गया। एकान्त पाकर

पुत्र ने पिता से कहा, "बाबू जी, आपने मुझे पहचाना भी ?" पिता ने समझा, लड़का बेहोशी में बक रहा है। उसने उसे दिलासा देकर कहा, "बेटा, यह क्या कहते हो ? भला मैं तुम्हें पहचानूंगा नहीं ? तुम तो मेरे प्राण हो।"

बेटे ने कहा, "मैं यह नहीं पूछता। आपको उस दिन की याद है जिस दिन आपने अमुक पहाड़ी रास्ते में अमुक बनिए को जान से मारकर उसका सर्वस्व लूट लिया था ?" बुड्ढे के सिर पर मानो गाज गिरी। उसने अचकचा कर सोचा कि उससे यह बात किसने कह दी। उसने प्रकाश्य रूप से पूछा, यह सब क्या कहते हो ? वैद्य को बुलाऊं ?"

बेटे ने कहा, "देखिए, मुझे अब समय नहीं है। मरने से पहले मैं अन्तिम बात कह देना चाहता हूं। मैं वही बनिया हूं जिसे आपने बुरी तरह से मार डाला था। मैं इस जन्म में आपका बेटा हुआ हूं। मैं जब से जन्मा हूं, तब से लेकर आज तक मेरे लिए जितना रुपया-पैसा खर्च किया गया है उसका हिसाब करने से आपको यह मालूम हो जाएगा कि उस बनिए का जितना धन आपने लूटा था उतना ही यह खर्च हुआ है। अब मैं जाता हूं। उस रुपए का व्याज प्राप्त करने के लिए मैं अपनी छोटी आयु की स्त्री को छोड़े जाता हूं। इसका पालन आपको जीवनभर करना है।"

बस, बेटे की आंखें सदा के लिए बन्द हो गईं।

कोई-कोई मनुष्य जन्म से ही अन्धा, लूला, लंगड़ा या पागल उत्पन्न होता है। इसका कारण बताते हुए श्री हीरेन्द्रनाथ दत्त लिखते हैं—"कर्मतत्त्व का पता लगाने से मालूम होता है कि आत्मापराध-रूपी वृक्ष का ही यह विषमय

फल है। जो पाप-प्रवृत्ति से, प्रवंचना से, प्राकृतिक विधि का उल्लंघन करते हैं, अथवा व्याधित, पीड़ित, आर्त्त, भीत या शरणागत पर अमानुषिक अत्याचार करते हैं, अगले जन्म में उनकी ऐसी ही दुर्दशा होती है। कर्मदेवता उन्हे ऐसे वंश में ले जाते हैं, उन्हें ऐसी कोख में पहुंचा देते हैं, ऐसे बीज से जन्म दिलाते हैं जहां ऐसी व्याधि उत्तराधिकार सूत्र से सन्तान में संक्रमित हो सकती है। इसके फलस्वरूप वह जन्म से ही अंधा, बहरा, लूला, लंगड़ा, जड़ या उन्मत्त प्रकृति का होता है और जन्म-भर उस पुराने पाप के निशान को लादे रहता है।"

मैडम ब्लैवट्स्की एक रूसी महिला थीं। उन्होंने थियॉसोफिस्ट समाज अर्थात् तत्त्वविद्या-मण्डली की स्थापना की थी। वे शिवाजी के पिछले जन्म के सम्बन्ध में आगे लिखी कहानी कहा करती थीं—

डोल गुर्की नाम का एक रूसी धनी-मानी सज्जन था। उसे वैराग्य हो गया और वह अपने सारे ऐश्वर्य-वैभव पर लात मार कर संन्यासी हो गया। वह घूमते-घामते जहांगीर के राजसिंहासन पर बैठने के कई वर्ष पूर्व भारत में आया। इस यात्रा में वह तिब्बत में एक सिद्ध योगी का शिष्य हो गया और उसने योगविद्या के कई दुर्लभ ग्रन्थ इकट्ठे कर लिए। दिल्ली में रहने के दिनों में कुछ असहिष्णु कट्टर मुसलमानों से उसका झगड़ा हो गया। उन्होंने उसे बहुत तंग किया। उसने बादशाह के पास शिकायत की, पर कुछ फल न हुआ। मुसलमानों ने उसके प्राणों से भी प्यारे योगविद्या के ग्रन्थ जला दिए। इससे डोल गुर्की के हृदय पर भारी चोट लगी। मर्माहत हो उसने मुगल-साम्राज्य को ही नष्ट कर डालने के भाव से भावित हो कर उन जलते हुए ग्रन्थों के अलाव में

कूदकर प्राण दे दिए। वही डोल गुर्की पुनः जन्म लेकर शिवाजी के रूप में प्रकट हुआ। इतिहास इस बात का साक्षी है कि शिवाजी ने किस कौशल, एकाग्रता, उद्यम और निष्ठा के साथ मुगल-साम्राज्य के उन्मूलन को ही अपना जीवन-व्रत बनाया था। महाभारतकाल में अम्बा ने भी भीष्म से इसी प्रकार दूसरे जन्म में शिखण्डी बनकर बदला लिया था।

ये कहानियां चाहे काल्पनिक हों और चाहे सत्य, ये सब इस बात का बढ़िया उदाहरण हैं कि एक जन्म में किए हुए कर्म का विपाक अगले जन्म में कैसे होता है।

गीता कहती है—

यं यं वापि स्मरन् भावं
त्यजत्यन्ते कलेबरम्।
तं तमेवैति कौन्तेय
सदा तद्भावभावितः। (भगवद्गीता ८,६)

अर्थात्, जिस-जिस भाव से विशेषरूप से भावित होकर जीव देह का त्याग करता है, उसी भाव को दूसरे जन्म में प्राप्त हो जाता है।

हम पहले कह चुके हैं कि जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है। अपने पूर्वजन्म के कर्मों के विपाक के अनुसार उसे अच्छी-बुरी पारिपार्श्विक अवस्था में जन्म मिल जाता है। इसके बाद उसे अच्छे-बुरे चाहे जैसे कर्म करने की स्वतन्त्रता रहती है। जिस जीवात्मा को अपने पूर्वजन्म के अच्छे कर्मों के कारण अच्छी पारिपार्श्विक अवस्था में जन्म मिला है उसके लिए आगे उन्नति करना सुगम होता है। उसे उन्नति के सभी साधन सुलभ होते हैं। परन्तु यदि वह उनसे लाभ न उठा

कर कुकर्म में प्रवृत्त हो जाता है तो उसका पुण्य क्षीण हो कर वह अधोगति को प्राप्त हो जाता है। इसी प्रकार जिस आत्मा को अपने पूर्वजन्म के कुकर्मों के कारण बुरे वंश या अनुकूल पारिपार्श्विक अवस्था में जन्म मिला है, वह भी पुण्यकर्म करके अपने को उन्नत दशा में ले जा सकता है। अन्तर केवल इतना है कि उसे अवस्थाओं के अनुकूल न होने के कारण, अपनी उन्नति के लिए विशेष प्रयत्न करना पड़ेगा।

यह शंका हो सकती है कि जिस मनुष्य को दण्ड भोगने के लिए अछूत, शूद्र, अपढ़, दरिद्र या रोगी का जन्म दिया गया है उसे उसकी पतित अवस्था से निकाल कर उन्नत या सुखी बनाने का यत्न करना क्या विधाता के दण्ड-विधान में अनुचित हस्तक्षेप करके उसे विफल करने की कुचेष्टा करना नहीं? इसका उत्तर यह है कि विधाता के कर्म-विपाक-स्वरूप दण्ड-विधान से किसी को बचाना मानव की शक्ति से बाहर है। वह विधान अचल है। संभव है कि जिस समय आपके मन में दुःखी मनुष्य के प्रति सहानुभूति के भाव उत्पन्न हों वह समय उसकी दण्ड-अवधि की समाप्ति का हो। दूसरे की सेवा और उपकार करने के अवसर को कभी हाथ से न जाने देना चाहिए। यदि कोई इस अवसर से चूक जाता है तो उसे दूसरे जन्म में बहुत व्यर्थता और विडम्बना सहनी पड़ती है। उसकी प्रबल आकांक्षा पग-पग पर कुण्ठित होती है। उसकी उच्च आशा प्रायः धूल में मिल जाती है और उसकी लोकोपकार करने की इच्छाशक्ति, सामर्थ्य न रहने के कारण, निष्फलता की दलदल में फँस जाती है। इस प्रकार दलितों और दुःखियों को उनके उद्धार में सहायता न देने से मनुष्य

उस पुण्य से वंचित हो जाता है जो वह परोपकार द्वारा अर्जित कर सकता था।

जैसा ऊपर कहा गया, अपने पूर्वजन्मों के कुकर्मों के अनुसार जीवात्मा बुरी या अनुकूल परिस्थिति में जन्म लेता है। इसके बाद उसे चाहे जैसी उन्नति करने का पूर्ण अधिकार रहता है। उस उन्नति में, उसकी दुर्दशा को सुधारने में सहायता देना महापुण्य और उसके मार्ग में बाधा देना महा-पाप हो जाता है।

मनुष्य की आत्मा सत्कर्मों से परिष्कृत और उन्नत हो जाती है और दुष्कर्मों से वह मलिन तथा पतित होती रहती है। सुकृत के प्रताप से जीवात्मा को आगे जो जन्म या योनि मिलती है उसमें वह अपने ज्ञान और सामर्थ्य को और भी बढ़ा सकता है और अतीव घोर दुष्कर्मों के दण्डस्वरूप वह भेड़, बकरी, सिंह, सर्प आदि पशुयोनि में ही नहीं वरन् वनस्पतियों की योनि में भी गिर सकता है। इन योनियों में वह कोई उत्तरदायित्व का नया कर्म नहीं कर सकता। वहां वह केवल अपने पिछले जन्म के कुकर्मों का दण्ड ही भोगता है। इन योनियों में उसे उससे बदला लेने के लिए नहीं वरन् उसके सुधार के लिए ही डाला जाता है। जैसे किसी मद्यप, डाकू या चोर को कारावास-दण्ड इसलिए दिया जाता है क्योंकि बन्दीगृह में वह ये कुकर्म नहीं कर सकता और देर तक कुकर्म न करने से उसका दुष्कर्म करने का स्वभाव या अभ्यास छूट जाता है। उसी प्रकार वनस्पति और पशु-योनि में चिर-काल तक बंद रह कर जीवात्मा की हिंसा और कुकर्म की प्रवृत्ति कुण्ठित हो जाती है। यह कारावास-दण्ड भोगने के उपरान्त उसे फिर मनुष्य-जन्म मिलता है। इसमें वह अपने

कर्मों का उत्तरदायी होता है और सुकर्म द्वारा अपने को उन्नत कर सकता है। इसी बात को ईशोपनिषद् में इस प्रकार कहा गया है :—

ओ३म् असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसावृताः।
तांस्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः।

(ईशोपनिषद् ३)

अर्थात्, अपनी आत्मा का हनन करने वाले लोग उन स्थानों को प्राप्त होते हैं जहां पापात्माओं का वास है और जो अज्ञान के अन्धकार से घिरे हुए हैं।

## जन्मान्तर—

थोड़े से शून्यवादियों को छोड़कर संसार के सभी धर्म आत्मा की अमरता को स्वीकार करते हैं। हिन्दू दार्शनिक तो कहते हैं कि जिस प्रकार मनुष्य फटे-पुराने कपड़े उतार कर नए कपड़े पहन लेता है उसी प्रकार जीवात्मा एक शरीर को छोड़कर दूसरा शरीर धारण कर लेता है। मुसलमानों के सूफ़ी सम्प्रदाय के सन्त मौलाना जलालुद्दीन सूफ़ी कहते हैं कि मैं सहस्रों बार वनस्पति के रूप में प्रकट होता रहा हूं :—"हम चो सब्ज़ा हज़ार बार रोईदा अम।"

एडविन आर्नेल्ड आत्मा के अनादित्व तथा अमरत्व को इन शब्दों में व्यक्त करते हैं :—

"Never the spirit was born !
The spirit shall cease to be never !

Never the time it was not;
End and beginning are dreams.
Birthless and endless remains
The spirit for ever.
Death hath not touched it at all,
Death though the house of it seems!'

भावार्थ :—आत्मा अजन्मा और अमर है। कोई ऐसा समय न था जब यह नहीं थी। इसका अन्त और आरम्भ स्वप्न मात्र है। यह जन्म और मरण से रहित आत्मा सदा बनी रहती है। मृत्यु ने इसे कभी स्पर्श नहीं किया।

---

# २. पश्चिम में आत्मा के आवागमन के प्रमाण

"प्राचीन काल से यह धारणा प्रचलित है कि आत्मा अविनाशी है। जब तक वह मुक्त नहीं हो जाती, नये जीवन में वह जन्म लेती रहती है। आज के समय में भी इस मत में विश्वास रखने वाले लोगों की कमी नहीं है जो मरणोत्तर जीवन में विश्वास रखते हैं। ऐसे लोगों का मानना है कि यह आवागमन का सतत चक्र है व हर जन्म एक पुनर्जन्म है। पश्चिम में दसवें पोप और वैनेडिक्ट पन्द्रहवें भी इस विश्वास के समर्थकों में से हैं। वे ऐसा मानते थे कि मरणोपरांत आत्माएं इस जगत् में लौटती हैं और अपनी वापसी के प्रमाण छोड़ जाती हैं।

उन्होंने रोम में इन प्रमाणों का संग्रहालय स्थापित किया है, जिसे 'परगेटरी संग्रहालय' कहा जाता है। इसका दूसरा नाम 'हाउस आफ़ शैडोज़' (प्रेतों का घर) भी है। इस संग्रहालय में जले हुए वस्त्र एक चित्र (पेंटिंग), अनेक छाया-चित्र और एक तख्ता आदि बहुत सी वस्तुएं हैं। इन के बारे में इस संग्रहालय के क्यूरेटर का कहना है कि इन वस्तुओं पर मरणोपरान्त लौटी हुई आत्माओं के हाथों के चिह्न हैं।

टाइबर नदी के किनारे एक चर्च के पार्श्वभाग में बना यह संग्रहालय अपने आप में काफ़ी रहस्यमय है।

इस तक पहुंचने के लिए कहीं कोई दिशा-संकेत नहीं है। संग्रहालय देखने के इच्छुक व्यक्ति इसके प्रबन्धक से निवेदन करके ही उसे देख सकते हैं। वह स्वयं उन्हें अन्धेरे गलियारों से होकर एक ऐसे कमरे में ले जाता है जिसमें एक भी खिड़की या रोशनदान नहीं है। यहीं वह विचित्र संग्रहालय है।

संग्रहालय का क्यूरेटर बताता है कि 1 नवम्बर 1731 की रात को एक दिवंगत पादरी पेजिनी ने एक भिक्षुणी (नन) मदर शियराह साबेल फोरनारी को दर्शन दिए तथा उससे काफ़ी देर तक बातचीत की। इस बातचीत का ब्योरा तो भिक्षुणी ने नहीं दिया लेकिन उसने इतना बताया कि फ़ादर पैजिनी अपनी भेंट के अनेक चिह्न छोड़ गए हैं। फ़ादर पैजिनी ने अपनी अंगुली से एक क्रास बनाया और मेज पर बाईं हथेली की छाप छोड़ी। उस क्रास और फ़ादर पैजिनी की हथेली के निशान को मेज में से काटकर संग्रहालय में रख लिया गया है। यह संग्रहालय की बहुमूल्यतम वस्तु मानी जाती है।

संग्रहालय में मदाम लीलीयो के बेटे की एक कमीज रखी है जिसकी आस्तीन पर उनकी हथेली का जला हुआ निशान है। अपनी मृत्यु के 27 वर्ष बाद 21 जून 1789 को वे अचानक अपने बेटे के सामने आकर खड़ी हो गईं और उससे गिड़गिड़ाकर बोलीं कि तुम अपना पापपूर्ण आचरण छोड़ दो। बेटे ने मां को वचन दे दिया और मां ने चलते समय अपनी भेंट के प्रमाण-स्वरूप बेटे की कमीज की आस्तीन पर अपने हाथ का जला हुआ निशान छोड़ दिया जिससे कि उसे यह विश्वास रहे कि मां सचमुच आई थी, उसका आना

मानसिक विक्षिप्तता का लक्षण या भ्रांति न था। इस घटना के बाद बेटे ने अपने आचरण को सुधार लिया।

संग्रहालय में 1814 की एक प्रार्थनावली है जिस पर कुछ अंगुलियों के निशान हैं जिनके कारण पुस्तक के कुछ पृष्ठों में जलने के छेद हो गए हैं। इसके पीछे एक कहानी है। मारगेरिटा डेमर ले की सास को मरे 30 बरस हो गए थे। एक दिन वह मारगेरिटा के पास आई और उससे बोली कि तुम तो तीर्थयात्रा करो और मेरी शांति के लिए दो प्रार्थना-सभाओं का आयोजन करो।

मारगेरिटा ने अपनी सास की दोनों इच्छाएं पूरी कर दीं। इसके बाद वह मारगेरिटा के पास पुनः आई और उससे बोली कि मुझे मुक्ति मिल गई है। इस बार जब सास जाने लगी तो मारगेरिटा ने कहा कि आप अपनी भेंट का कोई प्रमाण छोड़ जाइए। यह सुनकर सास ने पास रखी प्रार्थनावली पर हाथ रख दिया जिससे पुस्तक पर उसकी अंगुलियों के निशान पड़ गए और उसके कुछ पत्रों में जलने से छेद हो गए।

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में फ़ादर विट्टोर जुएट ने इस संग्रहालय की वस्तुओं को छांटना शुरू किया तथा उन्होंने दूर-दराज की यात्रा करके अनेक महत्त्वपूर्ण वस्तुओं का संग्रह किया। संग्रहालय 1920 तक खुला रखा, लेकिन उस समय संग्रहालय का कार्यभार फ़ादर गिल्ला ग्रेमिग्नी के कन्धों पर आया। उन्होंने संग्रहालय के पुनर्गठन तथा अप्रमाणिक वस्तुओं को नष्ट करने के लिए उसे 30 वर्ष

तक बन्द रखा और जब 1950 में वह फिर से खुला तो उस में बहुत थोड़ी सी चीजें बची थी।

इधर संग्रहालय में फिर अनेक प्रमाणों का संग्रह हुआ है। पश्चिमी देशों में जहां एक तरफ नास्तिकता बढ़ी है, वहां कुछ क्षेत्रों में आत्मा, परमात्मा, पुनर्जन्म, भूत, प्रेत, पराविद्या आदि के प्रति विश्वास बढ़ा है। आश्चर्य की बात तो यह है कि रूस जैसे नास्तिक देशों में भी परा विद्याओं का अध्ययन किया जा रहा है।

स्मरण रहे विश्व के कोने-कोने में आदिवासी एवं ग्रामीण अंचलों में प्रेतात्माओं के सम्बन्ध में अनेक कथाएं व विवरण अत्यन्त प्राचीन काल से पीढ़ी दर पीढ़ी सुरक्षित चले आ रहे हैं। यहां तक कि सभ्य जातियों में उनके उत्सवों व रिवाजों पर इनके अस्तित्व की छाप है। कुछ विद्वानों ने इन सब को पुस्तकों व चित्रों द्वारा सुरक्षित करने का सफल प्रयास किया है। प्लैन्चेट आदि विद्याएं भी अब लिखित रूप में उपलब्ध हो गयी हैं पर इस दिशा में उक्त संग्रहालय के पास उसके प्रमाणों के सम्बन्ध में निरन्तर पूछताछ का सिलसिला बना हुआ है। इन पूछताछ करने वालों में अनेक प्रोफ़ैसर व प्राच्य-विद्याओं के विद्वान् भी हैं।"

(वीर प्रताप, जालंधर, ४ फरवरी १९७३)

श्री नार्मन विन्सेण्ट पील लिखते हैं :—

सर जेम्ज़ जीन्स ने कहा था, "समस्त संसार स्पन्दन में है।" आइन्स्टीन कहता है, "जड़ पदार्थ और शक्ति दोनों एक दूसरे में बदल दिए जा सकते हैं, दोनों एक ही वस्तु हैं।" ऐसा जान पड़ता है कि मनीषियों ने किसी ऐसे आध्यात्मिक

पदार्थ को पहचान लिया है जो जीवन के मर्म में गहरा पड़ा हुआ है।

श्रीमती टॉमस एडीसन ने श्री पील को बताया था कि एडीसन मृत्यु के बाद होने वाले जीवन में विश्वास रखता था। वह जानता था कि आत्मा एक वास्तविक अस्तित्व है जो मृत्यु के उपरान्त शरीर को छोड़ जाती है।

मरते समय एडीसन कुछ बड़बड़ा रहा था। उसके डाक्टर ने कान लगाकर सुना। वह कह रहा था, "अहा, कैसा सुन्दर दृश्य है!" लोगों का अनुभव यह है कि मृत्यु के आगे जीवन और सौंदर्य दोनों हैं। अलबत्ता, कभी-कभी रोग में पीड़ा होती है और शारीरिक मृत्यु की ओर मानव-प्राणी का पथ, हो सकता है, कठिन हो, परन्तु मृत्यु की घड़ी में, जैसा कि निपुण डाक्टर ने बताया है, अनेक रोगियों ने, मृत्यु के समय, प्रकट किया है कि हम कुछ देख रहे हैं। वे बहुधा कहते हैं कि हम एक अद्भुत प्रकाश देख रहे और संगीत सुन रहे हैं।"

पील कहता है जब मेरा एक मित्र मरने लगा तो मैं उसके पास था। जब उपत्यका का कुहरा उस पर छाया, तब सहसा उसने अपने पुत्र से कहा, जो उसके पास बैठा था—"जिम, मैं सुन्दर भवन देख रहा हूँ। उनमें से एक में प्रकाश है और प्रकाश मेरे लिए है। घर बहुत सुन्दर है।" तब वह चल दिया।

उसके पुत्र ने बताया, "मेरा पिता वैज्ञानिक था। अपने काम में उसने कभी किसी ऐसी बात की रिपोर्ट नहीं की जो प्रमाणित तथ्य नहीं था। बरसों का स्वभाव बदल

नहीं सकता। वह वही बता रहा था जो कुछ उसे दीख रहा था।"

डाक्टर लेज़्ली वैदरहैड लण्डन के सिटी टैम्पल का मिनिस्टर, कहता है :—

"एक समय मैं एक मरते हुए मनुष्य के सिरहाने बैठा था। उसका हाथ मेरे हाथ में था। डाक्टर ने कहा कि मैं जितना समझता था उससे अधिक कस कर उसका हाथ पकड़ा होगा क्योंकि रोगी ने एक अनोखी बात कही—"मुझे पीछे की ओर मत खींचो, आगे कितना आश्चर्यजनक दीख पड़ता है।"

डा. वैदरहैड से एक प्रसिद्ध चिकित्सक विलियम हण्टर ने अपनी मृत्युशय्या पर कहा था :—

"यदि मुझ में लेखनी पकड़ने की शक्ति होती तो मैं लिखता कि मृत्यु कितनी आसान और आनन्दप्रद है।"

---

## ३. कुछ एक जन्म-स्मर बच्चों के वृत्तांत

जीवात्मा मृत्यु के उपरान्त दूसरा जन्म ले लेता है, यह कोई कोरी कल्पना या वाद-मात्र ही नहीं। यह एक ठोस सच्चाई है। पत्र-पत्रिकाओं में आए दिन ऐसे बच्चों के समाचार छपा करते हैं, जो अपने पूर्वजन्मों की बात बताते हैं। पूर्वजन्म की बातें बताने वाले बच्चे केवल भारत के हिन्दू घरों में ही जन्म लेते हों, सो बात नहीं; यूरोप, अमेरिका, ब्रह्मा, चीन आदि सभी देशों और मुसलमान, ईसाई आदि सभी घरानों में वे जन्म लेते देखे जाते हैं। श्रीयुत हीरेन्द्र नाथ दत्त की बंगला पुस्तक "कर्मवाद और जन्मान्तर", प्राध्यापक नन्दलाल खन्ना की पुस्तक "पुनर्जन्म-मीमांसा" और श्री राजेन्द्र की पुस्तक "पूर्वजन्म-स्मृति", में ऐसे बहुसंख्यक जन्मस्मर, अर्थात् पूर्वजन्म की बातें बताने वाले बालकों के वृत्तांत संगृहीत हैं। जिज्ञासु सज्जन वहां देख सकते हैं। मुझे भी लगभग चालीस-बयालीस वर्ष से इस विषय में विशेष रुचि रही है। मैंने भी ऐसे बहुत से जन्मस्मर बालकों के वृत्तांत इकट्ठे कर रखे हैं। उनमें से कुछ एक निम्नलिखित हैं :—

### (क) श्री मेलाराम की जन्म-स्मर लड़की—

सन् १९२३ में मुझे श्री मेलाराम नाम के एक सज्जन लाहौर में मिले थे। वे मुलतान ज़िले के तलम्बा नामक गांव

में पटवारी थे। उन्होंने मुझे बताया कि पहले मैं तलम्बा से कोई बीस मील की दूरी पर एक गांव में पटवारी था। वहां मेरे यहां एक लड़की उत्पन्न हुई। कुछ दिन बाद मेरी बदली तलम्बा की हो गई। मैं वहां बाल-बच्चों-सहित रहता था। जब मेरी लड़की चार वर्ष की हुई तो एक दिन वह अपनी माता से कहने लगी कि आज मैं अपने घर जाऊंगी। मेरी स्त्री ने पूछा, "तेरा घर कहाँ है?" तब वह आगे-आगे चल पड़ी और मेरी स्त्री उसके पीछे-पीछे हो ली। लड़की चलते-चलते एक दूसरे मनुष्य के घर पहुँची और उसकी पत्नी की ओर संकेत करके कहने लगी कि यह मेरी मां थी। मेरा नाम पिछले जन्म में वासन्ती था। तब मैं बड़ी थी और पानी से भरी बटलोही उठा सकती थी।

उस स्त्री ने भी कहा कि कोई चार वर्ष हुए वासन्ती नाम की मेरी एक कन्या बारह वर्ष की आयु में इन्फ़्लूयंज़ा ज्वर से मर गई थी।

लड़की ने यह भी बताया कि मैं स्कूल जाया करती थी। हमारा स्कूल गांव के उस ओर था। परन्तु इस समय वह स्कूल उस ओर न था। मेरी पत्नी ने कहा 'तू झूठ कहती है।' तब उस स्त्री ने कहा—'नहीं, यह लड़की ठीक कहती है। पहले स्कूल उधर ही हुआ करता था जिधर यह कहती है।'

इस छोटी बालिका को अभी पढ़ना आरम्भ भी नहीं कराया गया था कि वह एक दिन देवनागरी की वर्णमाला बोल कर सुनाने लगी और बोली, मैं यह पढ़ा करती थी। जब वह कोई पांच वर्ष की हुई, तो उसको सारी वर्णमाला

भूल गई। अब वह उसे दुबारा सीख रही है। महाशय मेलाराम ने अपनी लड़की का यह वृत्तांत लाहौर के "आर्य गज़ट" नामक उर्दू साप्ताहिक पत्र में भी छपवाया था।

श्रावण संवत् १९८४ विक्रमी को लखनऊ से निकलने वाली मासिक पत्रिका "माधुरी" में "पुनर्जन्म" पर श्रीकृष्ण बिहारी मिश्र का एक लेख छपा था। उसमें आपने सात ऐसे बच्चों के वृत्तांत दिए थे जिन्होंने अपने पूर्वजन्म की बातें बताई थीं। उसमें ऐसे बच्चों के चित्र भी दिए गए थे। एक वृत्तांत वहीं से लेकर आगे दिया जाता है।

## (ख) हीरा कुंवरी का वृत्तान्त—

बाबू श्यामसुन्दर लाल स्टेशन मास्टर हलद्वानी, आर. के. आर. ने दिनांक २१ अगस्त, सन् १९२६ को मुझे दर्शन देने की कृपा की और अपनी पुत्री हीरा कुंवरी को भी अपने साथ लेते आए। इस कन्या का जन्म सितम्बर सन् १९१९ में बरेली में हुआ था और उसने एक बड़े ही विचित्र ढंग से अपने पूर्वजन्म के मकान को पहचाना था। पूर्वजन्म में यह कन्या एक लड़का थी। यह गोकुल, ज़िला मथुरा का रहने वाला था। यह सन् १९१८ के अक्टूबर मास में बारह वर्ष की आयु में मरा था।

बाबू श्यामसुन्दर लाल जी अगस्त सन् १९२२ में तीर्थयात्रा के लिए गोकुल आए थे। जिस समय वे उस स्थान से होकर निकल रहे थे जिसे लोग नन्द और यशोदा का पुराना घर बताते हैं तो यह लड़की बरजोरी नौकर की गोद में से उतर पड़ी। पास ही एक छोटा-सा मकान था। उसके

द्वार पर एक बुढ़िया बैठी थी। लड़की बड़ी तेज़ी के साथ उस मकान के भीतर घुसती चली गई। उसकी मां भी उसके साथ-साथ गई। यहां वह लड़की लड़के की तरह बातें करने लगी। पहले उसनें उस तख्ती के विषय में पूछा जिस पर वह लिखा करती थी। दूसरी चीज़ जिसके बारे में उसने पूछा वह चौकी थी जिस पर बैठ कर वह लिखा करती थी। इन प्रश्नों को सुनकर वह बुढ़िया रोने लगी।

तब उस लड़की ने बुढ़िया से कहा कि हमारी मां को पान दो। सुपारी हमारे पीतल के सरोते से काट लो। इस के बाद उसने अपनी मां से कहा कि तुम चली जाओ, क्योंकि मैं अपने घर आ गई हूँ। किन्तु जाने के पहले पान ले लो।

हीरा कुंवरी की माता ने नौकर को इशारा किया और वह लड़की को उठा कर मकान से बाहर ले आया।

इस के बाद सब लोग यमुना जी की ओर चले गये। वहां पहुँच कर उन्होंने कछुओं को चने और लाई चुगाई। कछुओं को देख कर हीरा कुंवरी ने कहा—"तुमने पहले मुझे डुबा दिया था और इस बार फिर वही करने के लिए आए हो ?"

यह सुनते ही जो बुढ़िया साथ में आई थी वह फिर फूट-फूट कर रोने लगी। आगे और पूछने पर उस लड़की ने वह स्थान भी बताया जहाँ नहाते समय वह फिसल पड़ी थी और डूब कर मर गई थी। बुढ़िया ने लड़की की सभी बातों को सच्ची बताया। उस ने कहा, लगभग चार वर्ष हुए मेरा एक बारह वर्ष का लड़का इसी स्थान पर डूब कर मर गया था।

## (ग) खेमकरण का एक जन्म-स्मर लड़का—

पूर्व जन्म की बातें बताने वाले जन्म-स्मर बालकों की ऐसी ही कई और भी घटनाएं मैंने पढ़ और सुन रखी थीं। परन्तु बिना स्वयं परीक्षा किए उन पर विश्वास करने को मन नहीं होता था। सन् १९१६ में मैं पट्टी जिला अमृतसर में कृषिकार्य किया करता था। पट्टी के निकट खेमकरण नामक स्थान में एक ऐसे ही जन्म-स्मर लड़के के होने का समाचार मिला। सुनने में आया कि लड़का कोई पांच वर्ष का है। एक दिन उसका पिता मकान बनाने के लिए लकड़ी लाने कहीं बाहर जाने लगा। लड़के ने पिता से कहा कि आप मेरी दूकान से ही क्यों लकड़ी नहीं ले आते ? मेरी दुकान अमृतसर के अमुक बाजार में है और मेरे लड़कों के नाम अमुक-अमुक हैं।

पिता लड़के की बात सुन कर चकित रह गया। पता लगाने पर मालूम हुआ कि सचमुच अमृतसर के उस बाजार में एक लकड़ी की दुकान है और उसके वर्तमान स्वामियों के नाम वही हैं जो लड़के ने बताए थे। लड़का अपने पूर्व जन्म की और भी कई बातें बताता है। इस पर लड़के का पिता डर गया। उसे आशंका हो गई कि कहीं लड़के के पहले घर वाले उसे उस से छीन कर अमृतसर न ले जाएं। इसलिए वह लड़के को डरा धमका कर उसे अपने पूर्वजन्म की बातें बताने से रोकने लगा।

इस समाचार को सुन कर, इसकी परीक्षा करने के लिए मैं खेमकरण जाकर वहां के आर्य-समाज के प्रधान के द्वारा उस लड़के से मिला। लड़के का नाम गणपति था। उस समय

पिता की मारपीट से भयभीत होकर उसने ऐसी बातें बताना बंद कर दिया था। मैंने उसे एकान्त में ले जाकर प्यार किया और विश्वास दिलाया कि तुम्हारा पिता तुम्हें इस के लिए नहीं पीटेगा। तब उसने डरते-डरते मुझे ऊपर लिखी सभी बातें सच बताईं। मुझे विश्वास हो गया कि बात बनावटी नहीं, लड़के को सचमुच पूर्वजन्म की स्मृति है।

## (घ) पिछले दो जन्मों की बातें बताने वाली लड़की —स्वर्णलता—

इस लड़की का पता सेठ सोहनलाल मेमोरियल इन्स्टीटयूट आफ़ पैरा-साईकॉलोजी, श्रीगङ्गानगर से लगा है। उन्होंने जो जानकारी अपने प्रतिवेदन में दी है वही आगे दी जाती है।

लड़की का नाम स्वर्णलता और उसके पिता का नाम श्री एम० एल० मिश्र है। श्री मिश्र छत्रपुर, मध्यप्रदेश में स्कूलों के ज़िला इन्स्पैक्टर हैं। जनता उच्चतर माध्यमिक स्कूल वैकुण्ठपुर के प्रिंसिपल श्री कृष्णप्रसाद वर्मा से इस लड़की का पता मिलने पर इन्स्टीटयूट के निर्देशक श्री एच० एन० बनर्जी ने पत्र-व्यवहार द्वारा स्वर्णलता के पिता से सम्पर्क स्थापित किया। लड़की के पिता ने अपने दिनांक ३० सितम्बर सन् १९५८ के पत्र में स्वर्णलता के संबन्ध में आगे लिखी जानकारी दी :—

कुमारी स्वर्णलता जबलपुर से पन्ना जा रही थी। कटनी पहुँच कर उसने बताया कि मैं कटनी के निकट एक नदी में नहाया करती थी। उसने यह भी कहा कि मेरा घर कटनी में था। मैं उसी में रहती थी। हमारे घर के पास ही एक



नौ-वर्षीय अद्भुत बालिका स्वर्णलता, जो अपने पिछले
दो जन्मों का हाल बताने का दावा करती है,
अपने पिता और छोटी बहन के साथ।

कन्या पाठशाला थी। मेरे परिवार का मुखिया श्री हीरालाल पाठक था। वर्तमान परिवार में जन्म लेने के पूर्व कटनी में मेरे दो पुत्र थे। उनके नाम थे कृष्णदत्त पाठक और शिवदत्त पाठक। मैं उस परिवार में सबसे बड़ी थी। वहां मेरा नाम कमलेश था।

यह लड़की बड़ी रहस्यमयी है। इसे हम देर तक समझ ही नहीं पाये। कुछ समय बीत जाने पर हम समझ सके कि यह कटनी में अपने पूर्वजन्म की बातें बता रही है। स्वभावतः हमने ऊपर बताई बातों की सचाई को जानने का यत्न किया। विद्वानों का बहुधा यही मत था कि लड़की को बहुत तंग न किया जाय। इस पर हमने लड़की को कटनी ले जाने या उसके मस्तिष्क पर और दबाव डालने का विचार छोड़ दिया। उपरिलिखित बातें स्वर्णलता ने कोई साढ़े तीन वर्ष की आयु में बताई थीं।

जब स्वर्णलता कोई सात वर्ष की हुई तो उसने एक दिन अपनी माता से कहा कि मैं आप को एक बहुत अच्छा तमाशा दिखाऊँगी और साथ ही एक ऐसा सुरीला गाना सुनाऊंगी जो आपने पहले कभी नहीं सुना होगा। अचम्भा देखने के विचार से उसकी माता सहमत हो गई। तब लड़की ने नाचते हुए एक विचित्र एवं अपरिचित भाषा में गाना आरम्भ कर दिया। इस खेल ने माता को स्तम्भित कर दिया। उसने समझा कि लड़की के मस्तिष्क में फिर कोई विकार हो गया है। उसने मेरे कार्यालय 'गवर्नमेण्ट पॉलिटेकनीक' नौगांव, में मुझे सूचित किया। मैं दौड़ा-दौड़ा घर पहुँचा। लड़की ने फिर खेल दिखलाया जो कि बिल्कुल

स्वाभाविक था। मैंने गवर्नमेण्ट पॉलिटेकनीक, नौगांव के सीनियर लेकचरर, श्री एस० एन० नन्दी को बुला भेजा। वे बंगाली सज्जन थे। उन्होंने लड़की का गाना सुनकर मालूम किया कि लड़की बंगला-मिश्रित गीत गा रही है। डा० डी० एन० मुखर्जी नामक एक विख्यात सेवानिवृत बंगाली महाशय ने भी लड़की की परीक्षा की। उन्होंने कहा कि लड़की श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर का गाना गा रही है। गीत की भाषा बंगला और असमी मिली-जुली है। हाल में राजगढ़ राज्य की कौंसिल आफ़ एडमिनिस्ट्रेशन के सेवानिवृत्त शिक्षा-सदस्य बाबू गौरीशङ्कर श्रीवास्तव ने लड़की की जांच की। लड़की का गाना सुनकर और बंगला भाषा में उससे कुछ प्रश्न पूछ कर वे बोले कि यदि लड़की को मेरे पास तीन मास रहने दिया जाय तो वह बड़ी आसानी से बंगला भाषा सीख जायगी।

बाद को मेरे पूज्य ज्येष्ठ भ्राता, पण्डित आर० एस० मिश्र, शास्त्री, संस्कृत के सेवानिवृत्त लेकचरर ने भी लड़की की परीक्षा की। उनके मतानुसार भारत में अपने दो पूर्व-जन्मों का वृत्तांत बताने वाली लड़की का यह एकमात्र उदाहरण है। उन्होंने मुझे किसी विद्वान् मनोविज्ञानी से भी इस लड़की की परीक्षा कराने का सुझाव दिया।

नौगांव में मेरे प्रवास-काल में कई लोग स्वर्णलता को देखने आए। उनमें एक ग्वालियर के लिखितप्रमाण-विशेषज्ञ श्री बनमाली भी थे। परन्तु हमने इस डर से कि कहीं कोई मानसिक गड़बड़ न हो जाय और इस विषय में अधिक पत्र-व्यवहार से बचने के लिए बात को अब तक गुप्त ही रखा। जब सागर विश्वविद्यालय के उपकुलपति, डा० डी० पी० मिश्र

तुलसी-जयन्ती-समारोह का उद्घाटन करने छत्रपुर आए तो उन्होंने भी लड़की की जांच की और कहा कि विशेषज्ञ मनोविज्ञानियों से लड़की की परीक्षा करानी चाहिए। उन्होंने प्रस्ताव किया कि लड़की को सन् १९५८ के नवम्बर मास में सागर विश्वविद्यालय में भेजना चाहिए।

**इसी घटना का जो सचित्र विस्तृत वृत्तान्त दैनिक हिन्दुस्तान नई दिल्ली, के २८ अगस्त १९५९ के अंक में छपा वह इस प्रकार है :—**

"दशवर्षीया ब्राह्मणलड़की स्वर्णलता ने २०वीं शताब्दी के इस वैज्ञानिक युग में उन व्यक्तियों को खुली चुनौती दी है जो पुनर्जन्म में और आत्मा की अनश्वरता में विश्वास नहीं रखते और उसे एक कपोल-कल्पित और अंधविश्वास की बात मानकर चलते हैं। छत्रपुरस्थित मध्यप्रदेश के शिक्षा-विभाग के एक कर्मचारी की इस पुत्री ने न केवल अपने पिछले एक जन्म की, अपितु दो जन्मों की आश्चर्य-जनक कथाओं को सुना कर मनोविज्ञानशास्त्रियों, नृशास्त्र के विशेषज्ञों और चिकित्सकों को अपने ऊपर प्रयोग और परीक्षण करने के लिए आमंत्रित किया है।

जब इस विचित्र बालिका के कथन की सत्यता की पुष्टि के लिए सेठ गोविन्द दास से सम्पर्क स्थापित किया गया, तो उन्होंने कहा कि ऐसा कोई भी कारण नहीं दीखता जिससे बालिका के कथन पर अविश्वास किया जा सके और कहा जा सके कि वह झूठ बोलती है। कटनी के श्री हरिप्रसाद पाठक जिनको वह अपने पूर्वजन्म का छोटा भाई बताती है, उस समय मेरे निवास-स्थान पर उपस्थित थे। अन्य दूसरे

प्रतिष्ठित व्यक्तियों की उपस्थिति में स्वर्णलता ने कटनी के श्री हरिप्रसाद पाठक के परिवार से संबद्ध जिन घटनाओं का उल्लेख किया, श्री पाठक ने उनकी पुष्टि की और उनको शब्दशः सत्य बतलाया।

पाठक जी से मेरा पुराना परिचय और संबंध है। मैं नहीं समझता कि पाठक जी भी झूठ बोलेंगे। पूर्वजन्मों का वृत्तान्त बताने की प्रतिज्ञा करने वाली उक्त दशवर्षीया बालिका का आगमन हाल में जबलपुर में हुआ, यहां वह अपने ननिहाल में लगभग दो सप्ताह रुकी। जबलपुर के मालदार-पुरा में रहने वाले सामुद्रिक-ज्ञानदाता पण्डित राधिकाप्रसाद पाठक की वह दौहित्री है और श्री रंगनाथ पाठक उसके मामा हैं। जबलपुर के प्रवासकाल में उसे देखने के लिए पन्द्रह दिनों तक बराबर जिज्ञासुओं की भीड़ लगी रही। मुझे भी उसे देखने का अवसर मिला। स्वर्णलता ने न केवल जिज्ञासुओं द्वारा कौतूहल-पूर्वक पूछे गये उनके प्रश्नों के उत्तर दिये, अपितु हाव-भाव के द्वारा नृत्य के साथ वे गाने भी गाये जो बंगलामिश्रित असमी भाषा से मिलते जुलते हैं, हालांकि इस बालिका को अभी तक इस जन्म में किसी भी प्रकार की नृत्य-कला की शिक्षा नहीं दी गई और न हो उसने कभी मध्य प्रदेश के बाहर पग रखा है।

## कटनी में जन्म—

स्वर्णलता ने प्रश्नोत्तर के मध्य कहा कि मेरा एक जन्म कटनी में झर्रा-टिकुरिया मुहल्ले के एक नागरिक श्री हरिप्रसाद पाठक के घर में हुआ था। उस समय मेरे चार भाई थे और दो बहनें थीं। सबसे बड़ी मैं ही थी। उस समय मेरा नाम

लिया था। मैं अपने अग्रज को बाबू कह कर संबोधित करती थी। ३९-४० वर्ष की अवस्था में मेरी मृत्यु हो गई। उसके पूर्व मेरे गले में पीड़ा थी। उसकी चिकित्सा के लिए मुझे कटनी से जबलपुर लाया गया। यहां पर डा० बराट ने मेरा उपचार किया। परन्तु पूरी तरह मैं अच्छी नहीं हो पाई। उस समय मेरे सामने ही मेरी एक बहन की मृत्यु हो गई थी।

स्वर्णलता ने आगे कहा कि उस जन्म में मेरा विवाह मैहर में चिन्तामणि पाण्डेय के साथ हुआ था। उनकी अवस्था उस समय लगभग बाईस वर्ष की थी। उनके घर में क्या व्यवसाय होता था इसका मुझे स्मरण नहीं है, पर इतना अवश्य ज्ञात है कि मेरे तत्कालीन पतिदेव का रंग सांवला था। मेरे उस समय दो पुत्र और एक पुत्री थी।

## सिलहट में जन्म—

स्वर्णलता ने अपना कथन जारी रखते हुए बतलाया कि उसका एक जन्म सिलहट में भी हुआ था। उस समय उसका नाम कमलेश था, पिता का नाम रमेश और माता का नाम शशिमाता था और एक सहेली का नाम मधु था। उसके घर में मोटरकार भी थी। उसमें बैठ कर वह स्कूल पढ़ने जाया करती थी। मोटर के दुर्घटनाग्रस्त हो जाने से उसकी मृत्यु हो गई थी। उसे इतना याद है कि मृत्यु घटनास्थल पर नहीं वरन् अस्पताल में हुई थी। स्वर्णलता के कथनानुसार उस समय उसकी आयु नौ दस वर्ष के लगभग थी।

स्वर्णलता के वर्तमान पिता श्री मनोहरलाल मिश्र इन दिनों छत्रपुरस्थित ज़िला शालानिरीक्षक के कार्यालय

से संबन्धित हैं। इसके पूर्व वे रीवां में राजस्व-विभाग के अधीक्षक के कार्यालय से, पन्ना में उपज़िलाशालानिरीक्षक के क़ार्यालय से और नौगांव छावनी में प्रशासकीय पॉलीटेकनीक के अधीक्षक के कार्यालय से संबंधित रहे हैं।

## स्मृतियां जाग उठीं—

अपनी विचित्र पुत्री के विषय में जानकारी देते हुए श्री मिश्र ने कहा कि लगभग सात वर्ष पूर्व, जब मैं जबलपुर से पन्ना सपरिवार एक मोटर ट्रक में लौट रहा था तो कटनी के निकट स्वर्णलता ने, जिसकी आयु तीन साढ़े तीन वर्ष की रही होगी, ड्राईवर से ट्रक को बाईं ओर मोड़ने और अपने घर ले चलने को क़हा और साथ ही मुझ से कहा कि आप मोटर-स्टैण्ड पर गंदी चाय मत तैयार कराइए मेरे घर चलिएगा, पास ही में है। वहीं बढ़िया दूध की चाय पिलाऊंगी। उस समय हम लोगों ने उसकी बातों का कुछ ख्याल नहीं किया और समझा कि वह वैसे ही बाल-सुलभतावश बहकी हुई बातें कर रही है। कुछ दिन उपरान्त जब लड़की की मां गेहूं साफ़ कर रही थी तो स्वर्णलता ने कहा—मां, गाना सुनोगी ? चलो, आज मैं तुम्हें गाना सुनाऊं।"

उसकी मां ने स्वाभाविक रूप से कहा 'हाँ, सुनाओ, अवश्य सुनेंगे।'

तब स्वर्णलता ने एक नहीं, अनेक गाने सुनाए। पर उनकी भाषा विचित्र थी। अतः समझ में कुछ नहीं आया। किन्तु जब उसने गाना गाना बंद नहीं किया और लगातार गाने पर गाना गाती रही, तो उसकी मां को ऐसा लगा कि लड़की को हवा-बहर लग गई है। उसके निदानस्वरूप उन्होंने

अपने पति को न बताकर तांत्रिकों की सहायता ली। कार्यालय से लौटने पर मिश्र जी ने निकटवर्ती और परिचित डाक्टर डी० एन० मुकरजी को बुलाया। लड़की के गानों को सुनकर उन्होंने बतलाया कि लड़की जो भाषा बोल रही है वह बंगला-मिश्रित असमी है। वे बोले कि लड़की के मस्तिष्क में किसी प्रकार की विकृति नहीं है। इसी बीच सागर के श्री गौरीशंकर श्रीवास्तव, अवकाश-प्राप्त शिक्षा-सदस्य, परामर्श-दात्री समिति, राजगढ़ राज्य का आगमन भी नौगांव में हुआ। श्रीवास्तव का बंगला भाषा पर अधिकार है। इसलिए उन्होंने लड़की को देखकर सम्मति दी कि यदि स्वर्णलता उनके सान्निध्य में दो तीन मास रहे तो वह अच्छी तरह से बंगला बोल सकती है!

इसी बीच श्री हेमेन्द्र बैनर्जी, अवैतनिक संचालक, सेठ सोहनलाल इन्स्टीटयूट आफ़ पैरा-साईकॉलोजी, श्रीगंगानगर, राजस्थान का छत्रपुर आगमन हुआ। श्री बैनर्जी को उक्त लड़की के विषय की जानकारी किसी तरह पहले से मिल चुकी थी। स्वर्णलता से उन्होंने पर्याप्त समय तक नाना प्रकार की वार्ता की। उन्होंने उसकी पूर्वजन्म-संबंधी स्मृतियों तथा गीतों का टेप-रीकार्डिङ्ग किया और उसकी आगे जांच करने की बात कही। श्री बनर्जी ने लड़की के पिता को बतलाया कि यदि सरकार की सहायता से स्वर्णलता को परीक्षणार्थ विदेश भेजा जाय तो पुनर्जन्म-संबंधी घटनाओं पर पर्याप्त प्रकाश पड़ सकता है। लड़की के बयानों का टेप-रीकार्डिंग करने के अतिरिक्त श्री बनर्जी ने अन्य कई व्यक्तियों के कथनों को भी लिपिबद्ध किया। उन्होंने निजी सूत्रों से गुप्त रीति से पता लगाया कि पिता-पुत्री किसी प्रकार

का जाल सर्वसाधारण को ठगने के लिए तो नहीं रच रहे हैं। पर वहां उनके समक्ष सभी ने एक ही प्रकार से लड़की और उसके अभिभावकों के कथन की पुष्टि की।

### श्री बनर्जी की खोज—

स्वर्णलता ने कटनी-संबंधी जो कहानी श्री बनर्जी को सुनाई थी उसकी वास्तविकता का पता लगाने श्री बनर्जी कटनी आए और श्री हरिप्रसाद पाठक के परिवार से मिले। वहाँ उन्होंने पाया कि अनेक घटनाएं और तथ्य स्वर्णलता के कथन से सामंजस्य रखते हैं। श्री बनर्जी के परीक्षण के पूर्व दतिया म्यूनिसिपल बोर्ड के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री एच० पी० पस्तोरे सोहम ने भी स्वर्णलता की जानकारी प्राप्त की थी। अपने एक प्रतिवेदन में श्री पस्तोरे ने निष्कर्ष निकाला कि यह स्पष्ट है कि स्वर्णलता को अपने पिछले जन्मों की स्मृति है। उपर्युक्त लड़की अब धीरे-धीरे पुरानी स्मृतियों को भूलती जा रही है और ऐसी आशंका है कि कदाचित् अगले एक दो वर्ष में वह पूर्वजन्मों की स्मृतियां पूर्णतः भूल जायगी। सम्मोहनक्रिया के वशीभूत होकर लड़की अपने पूर्वजन्मों का खुलासा अधिक स्पष्ट रूप से कर सकती है और अधिक विस्तार के साथ अपनी आत्मकथाओं को सुना सकती है।

जब श्री बनर्जी के द्वारा स्वर्णलता की जानकारी श्री हरिप्रसाद पाठक को मिली तो उनको भी उसे देखने की स्वाभाविक रूप से उत्सुकता उत्पन्न हुई और वे अपने कुछ मित्रों को लेकर छत्रपुर गये। उन्होंने पिछली १२ एप्रिल को प्रथम बार कुमारी स्वर्णलता से भेंट की। श्री पाठक और उनके साथी, बिना किसी पूर्व सूचना के छत्रपुर आए

थे। जिस समय वे मिश्रजी के घर पहुँचे तब स्वर्णलता बाहर गई हुई थी। जब वह देवपूजन के पश्चात् घर लौटी तो श्री पाठक ने उससे कटनी-संबंधी पूर्वजन्म की स्मृतियों के बारे में पूछताछ की। उन्होंने यह भी जानना चाहा कि उनका मकान कैसा है, कहां है और उसके आस-पास क्या है? लड़की ने जो भी उत्तर दिए उनसे उनको सन्तोष हुआ, परन्तु वह पाठक जी का सही नाम नहीं बतला सकी। हरिप्रसाद की जगह उसने हीरालाल का उच्चारण किया। सन्तुष्ट हो कर श्री पाठक कटनी वापस लौटे और उन्होंने मैहर-स्थित स्वर्णलता के तत्कालीन ससुराल वालों को घटना-क्रम से सूचित किया। फलतः मैहर से भी कुमारी स्वर्णलता, अर्थात् तत्कालीन बिया के पति श्री चिन्तामणि पाण्डेय और पुत्र मुरली छत्रपुर पहुँचे। वहां तत्कालीन पति-पुत्र को स्वर्णलता ने न केवल पहचान ही लिया अपितु श्री चिन्तामणि पाण्डेय को एक ग्रुप फोटो में भी पहचान लिया, जबकि उनकी अवस्था लगभग २३ वर्ष की थी। यद्यपि मुरली ने स्वर्णलता को अपना परिचय रामप्रसाद देकर भ्रमित करना चाहा, तथापि उसकी चाल निष्फल रही। स्वर्णलता ने बराबर कहा कि वह उसका उस जन्म का पुत्र है और उसका नाम मुरली है, न कि रामप्रसाद, जैसा कि वह कहता है। मैहर संबंधी अन्य बातों का भी खुलासा उसने किया।

श्री हरिप्रसाद पाठक का आमंत्रण पाकर मिश्र जी सपरिवार गत १३ जुलाई को कटनी पहुँचे। साथ में स्वर्णलता थी। उसके आने के पूर्व ही श्री पाठक ने एक कमरे में अनेक वृद्ध-वृद्धाओं के चित्र लगा दिए थे। गांव के लोगों को भी एकत्रित कर रक्खा था। जैसे ही स्वर्णलता अपने पूर्वजन्म के

पैतृक घर में पहुँची उसने उस नीम के पेड़ के संबंध में पूछा जो उसके उस जन्म में घर के द्वार पर था परन्तु हाल की एक आंधी में गिर गया था। इस के अतिरिक्त उसने उस घर के पुराने चरवाहे को भी पहचान लिया जो भीड़ में एक ओर दुबका बैठा था। साथ ही श्री हरिप्रसाद पाठक के एक घनिष्ठ मित्र, श्री भैरवनाथ चतुर्वेदी की भावज को भी पहचाना, जबकि वह उनकी बहू के संबंध में कुछ भी जानकारी नहीं दे सकी। इसी प्रकार चतुर्वेदी जी से उसने कहा कि आप चश्मा उतार लीजिए। जिस समय मैं थी तब आप चश्मा नहीं लगाया करते थे। जब लड़की को चित्रों से सज्जित कमरे में ले जाया गया तो स्वर्णलता ने पाठक जी के माता-पिता को पहचान लिया, जो पूर्वजन्म में उसके भी माता-पिता थे। इस प्रकार की अन्य दूसरी कठिनतम परीक्षाएं भी उस लड़की की ली गईं। उनमें भी लड़की का दावा सही निकला। यहां भी उसने पाठक-परिवार के साथ चार दिन अपने वर्तमान माता-पिता और भाई-बहन के साथ व्यतीत किए। कटनी में रहकर भी वह अपने सिलहट-संबंधी जन्म की बातें बतलाती रही।

स्वर्णलता ने एक प्रश्न के उत्तर में बतलाया कि उसको पूर्वजन्म की स्मृतियां या तो जिज्ञासुओं द्वारा प्रश्न करने के संदर्भ में अथवा किसी प्रकार की डांट-डपट किए जाने पर आती हैं। जिस समय वह पूर्वजन्म की बातें बतलाती हैं उस समय वह वर्तमान अवस्था को भूल जाती है। अभी तक न तो वह किसी गम्भीर व्याधि से पीड़ित हुई है और न उसे स्वप्न आदि ही आते हैं। पूर्वजन्म की घटनाओं का वर्णन करते हुए उसकी मुखाकृति और क्रियाओं में गम्भीरता

स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। एक प्रश्न के उत्तर में उसने बतलाया कि वह केवल अपने से सम्बद्ध घटनाओं और संस्मरणों का उल्लेख कर सकती है, किन्तु पूर्वजन्मों में उसके ग्राम, नगर या देश में कौन से और किस प्रकार के परिवर्तन हुए, उनका उसे ख्याल नहीं है। कुमारी स्वर्णलता सब प्रकार के लालच और प्रलोभन से दूर है। वह दबी इच्छा रखती है कि जिस प्रकार कटनी में पाठक-परिवार में सबसे बड़ी होने के कारण उसका शासन चलता था, ठीक उसी प्रकार उसके आदेश का पालन दूसरे लोग इस जन्म में भी करें। साथ ही उसका आकर्षण कटनी और छत्रपुर दोनों के प्रति समान है। वह दोनों स्थानों में रहना चाहती है। (हमारे जबलपुर स्थित संवाददाता द्वारा)

## (ङ) सुनाम के एक गांव का विचित्र बालक—

20 जून 1973 के 'प्रताप' जालन्धर में छपा है कि इस लड़के ने अपने पहले जन्म के माता-पिता और बहन को दर्जनों लोगों की विद्यमानता में पहचान लिया। पहले वह 'मौजो-वाल' में एक ब्राह्मण का लड़का था। इस ब्राह्मण के स्वप्न में आकर उसने सब कुछ बताया। सैंकड़ों लोग इसे देखने के लिए समूह के समूह जा रहे हैं। सुनाम से पांच मील दूर 'अगरहां' नामक गांव के एक जाट जमींदार बलदेवसिंह के सात-आठ वर्षीय लड़के हरदयालसिंह ने जो कि पहली कक्षा में पढ़ रहा है, अपने पूर्वजन्म का वृत्तान्त बता कर अपने वर्तमान माता-पिता तथा अन्य लोगों को आश्चर्यचकित कर दिया। हमारे प्रतिनिधि ने गत-दिवस उस स्थान पर जाकर सब बातों की जांच की। हरदयालसिंह ने हैडमास्टर श्री जगदीशचन्द्र की विद्यमानता

में हमारे प्रतिनिधि को बताया कि वह पूर्वजन्म में 'मौजोवाल' नामक गांव के एक ब्राह्मण का लड़का था। उसकी माता का नाम माया था। उसकी चार बहनें थीं। दो बहनों के विवाह मोड़ां तथा बालियां नामक गांवों में हुए थे और कहा—"मैं खेती का काम करता था। हमारी चौबीस बीघे भूमि थी। मैं अपने पूर्वजन्म के माता-पिता के पास जाना चाहता हूँ। परन्तु वर्तमान माता-पिता तथा भाई मुझे जाने नहीं देते।" हरदयाल सिंह ने जिसके पूर्वजन्म का नाम बलराज था, अपने पूर्वजन्म के माता-पिता तथा बहनों को दर्जनों ही लोगों की उपस्थिति में पहचान लिया और वर्तमान माता-पिता से कहा कि "ये मेरे 'मौजोवाल' वाले माता-पिता तथा बहनें हैं।" और वह प्यार से अपने पूर्वजन्म के माता-पिता की गोद में चला गया। तब दोनों पिता तथा पुत्र भावनाओं के वशीभूत होकर रोते रहे। इसके पश्चात् वे हँसते भी देखे गए। लड़के ने अपने एक मित्र हरदेवसिंह को भी पहचान लिया। इससे वह अपने हल आदि की मरम्मत कराया करता था। उसने एक दुकानदार मित्र, बलदेव को भी पहचान लिया।

हरदयालसिंह के पूर्वजन्म के पिता श्री अमोलक राम ने बताया कि बलराज की बीस वर्ष की आयु में मृत्यु हो गई थी। पिछले दिनों वह मेरे स्वप्न में आया और उसने कहा—"पिता जी, आप रोना बिलखना बन्द कर दें, मैंने गांव 'अगरहां' में जन्म लिया है।" दूसरे दिन ही वर्तमान हरदयाल सिंह (बलराज) का वर्तमान भाई गांव 'मौजोवाल' में आया और उसने कुछ लोगों से पूछा कि क्या यहां एक ब्राह्मण जिसकी चार लड़कियां हैं और जिसका इकलौता लड़का सात-आठ वर्ष पहले मर गया था, रहता है? इस पर लोगों ने उसे

अमोलक शर्मा ब्राह्मण से मिला दिया। अमोलक शर्मा ने 'अगरहा' का नाम सुनते ही बताया कि "मेरे लड़के ने मर कर आपके घर जन्म लिया है। वह यह बात मुझे स्वप्न में आकर बता चुका है। मैं इसकी खोज में ही था।" वर्तमान हरदयाल और पूर्वजन्म के बलराज ने अपने मकान का नक्शा और 'मौजोवाल' के बारे में शत प्रतिशत ठीक बता दिया। हरदयाल सिंह के वर्तमान माता-पिता ने भी हमारे प्रतिनिधि को बताया कि हरदयाल सिंह ने तीन वर्ष की आयु में ही यह कहना आरम्भ कर दिया था कि मैं 'मौजोवाल' के ब्राह्मण का पुत्र हूं। मेरी वहां पर चार बहनें हैं। मेरी सगाई हो चुकी है। लोग दूर-दूर से इस लड़के को देखने के लिए आ रहे हैं।

उपर्युक्त समाचार को समाचारपत्रों में पढ़ कर मैंने श्री जगदीश चन्द्र मुख्याध्यापक को पत्र लिखकर हरदयाल के सम्बन्ध में कुछ बातें पूछीं। मेरे पत्र के उत्तर में जो कुछ उन्होंने लिखा वह आगे दिया जाता है:—

"'मौजोवाल' में (बलराज की) केवल 19 वर्ष की आयु में मृत्यु हुई। वह खेत से घर लौटा तो तीव्र बुखार चढ़ा हुआ था और इसी से उसकी मृत्यु हो गई। उसके पश्चात् भाई बखतौर ग्राम में, जो कि भटिंडा के समीप है, जा कर उसने जन्म लिया और 9 दिन का हो कर मर गया। उस समय वह कहता है उसकी 6 उंगलियां थीं। वह कहता है कि उसे यह एक स्वप्न-सा दिखाई दिया। उसके पश्चात् उसने 'अगरहा' में जन्म लिया। मैंने यह भी पूछा कि 'अगरहा' में जन्म क्यों लिया। उसने कहा उसे तो स्वप्न ही दिखाई दिया। उसने 'अगरहा' में एक जाट के लड़के को

कहा, कि पहिले वह गंढूआं में नाई का पुत्र था, जो कि अगरहां से ४ कोस की दूरी पर है। और भी आने वाले लोग जब उससे अपने किसी काम के विषय में पूछते हैं, तो वह बताता है कि उनका वह कार्य सिद्ध होगा, या नहीं। स्कूल समय में भी बहुत से दर्शक आते हैं।

हरदयाल यह नहीं बता सका कि वह बीच वाला समय कहां रहा। केवल इतना बताता है, कि स्वप्न ही देखा। मैं आशा करता हूँ, कि आपने अपने प्रश्नों का उत्तर भली-भांति पा लिया होगा। और कोई प्रश्न पूछना हो, तो अवश्य लिखें।"

## (च) कुछ रहस्यमयी घटनाएँ—

देश के अध्यात्मवादी विचारकों और विश्वविद्यालयों की मनोविज्ञानशालाओं के प्राध्यापकों के विचारार्थ मैं यहां कुछ रहस्यमयी घटनाएँ दे रहा हूँ। मुझे तो इनका कोई समाधान नहीं सूझ रहा। आशा है वे लोग इस पर प्रकाश डालने की अवश्य कृपा करेंगे। वैसे तो कहा है :—

भीखा बात अगम्य की कहन सुनन की नाँहि।
जो जाने सो न कहे, कहे सो जाने नाँहि॥

**पहली घटना** मेरे अपने एकमात्र पुत्र, वेदव्रत की है। वह दसवीं कक्षा में लाहौर के दयानन्द एंग्लो वैदिक हाई स्कूल में पढ़ता था। उसकी माता का देहान्त हो चुका था। एक दिन अकस्मात् वह मुझ से बोला—"पिता जी, मुझे मर जाना है।" मैंने कहा—"बेटा, तुम चंगे-भले हो। ऐसे अशुभ विचार मन में क्यों लाते हो ?"

वह बोला—"नहीं, पिताजी, मैं अवश्य मर जाऊँगा। आप चाहे कुछ कर लें।"

बात गई बीती। इसके कोई एक मास उपरान्त मई सन् १९२८ में उसे अचानक निमोनिया हो गया। वह बहुत शान्त प्रकृति और कम बोलने वाला लड़का था। परन्तु आठ दिन बीमार रहने के बाद, अपनी मृत्यु से कोई दो घंटे पहले, वह अपनी छोटी बहन को सम्बोधन करके बोला—"गार्गि, वह देखो तुम्हारी मां मुझे खड़ी बुला रही है।"

इसके उपरान्त मुझ से बोला—"पिताजी, मुझे छाती से लगाकर प्यार कीजिए।"

पहले तो मैं समझा कि वह चित्त-विभ्रम में यों ही बक रहा है। परन्तु जब उसने दो तीन बार फिर वही बात कही तो मैंने उसे छाती से लगा कर प्यार किया। इसके कुछ ही काल उपरान्त उसने सदा के लिए आंखें बंद कर लीं। उस की मृत्यु से मुझे जितना दुःख हुआ, उतना न पहले कभी हुआ था और न बाद में अभी तक हुआ है।

एक दूसरी घटना सुनिए। यह मैं जालन्धर से निकलने वाले उर्दू दैनिक पत्र "प्रताप" से लेकर दे रहा हूँ।

"सुनाम—27 जुलाई 1973—कोई विश्वास करे न करे, परन्तु यह एक दिलचस्प सच्चाई और आश्चर्य-जनक घटना है। गतदिवस यहां से कोई दो मील के अन्तर पर गांव वक्शीवाला के गुरुद्वारा के एक ग्रन्थी ज्ञानसिंह ने अपनी मृत्यु के तीन-चार दिन पहले घोषणा कर दी। उसने परिवार के लोगों को बताया कि मुझे विधि (प्रकृति) की चिट्ठी आ गई है कि मैं तीन चार दिन तक चल बसूंगा और मेरा 'नाभा'

में जन्म होगा। परिवार के लोगों ने इसे एक हँसी की बात समझकर टाल दिया। ग्रन्थी ज्ञानसिंह की बहिन अपने ससुराल से मायके आयी हुई थी। जब वह वापिस जाने को तैयार हुई, तो ग्रन्थी ने उसे यह कहकर रोक लिया कि मैं तीन-चार दिन ही हूँ। यहां मिलकर रह लो। फिर पता नहीं मैं कहां हूँगा और आप कहां होंगी।" बहन ने उसका कहना मान लिया। उसने मौत से एक घण्टा पहले अपनी बहिन के साथ खाना खाया। मृत्यु से बीस मिनट पहले ग्रन्थी ने अपनी पत्नी से कहा कि मेरे बाकी बीस मिनट रह गये हैं। परन्तु उसकी पत्नी ने फिर भी इसे हँसी (मजाक) ही समझा। ग्रन्थी ने तैयारी शुरू कर दी। हाथ-मुँह धोकर गुरुद्वारा साहिब के एक प्रसिद्ध साधु की समाधि पर माथा टेकने के बाद उसने गुरु ग्रन्थ साहिब का पाठ किया। जब पांच मिनट बाकी रह गये तो ग्रन्थी ने फिर अपनी धर्मपत्नी को चेतावनी दी कि "समय बहुत कम है, केवल पांच मिनट रह गये हैं। कोई बात करनी हो तो कर लो, नहीं तो पछताओगी।" पत्नी ने फिर कहा कि "आपको तो हर समय हँसी ही सूझती है।" तो ग्रन्थी ने उत्तर दिया—"अच्छा, आपकी इच्छा, मैं तो चलता हूँ।" इतना कहकर वे फिर गुरुद्वारा में चले गये। गुरु ग्रन्थ साहिब के सामने खड़े हो कर उन्होंने दोनों हाथ खड़े किये और उनके प्राण-पखेरू उड़ गये। ग्रन्थी साहिब हँसमुख और साधु-स्वभाव के थे।"

यूरोप और अमेरिका के लोग तो भौतिकवाद से ऊब कर अब अध्यात्मवाद की ओर जा रहे हैं। पिछले दिनों नार्वे का एक बाईस वर्षीय नवयुवक साधु-आश्रम, होशियारपुर में आया था। मुझसे वह मिला था। मेरे पूछने पर उसने बताया था कि 'मैं योगी की तलाश में फिर रहा हूँ। उससे योग सीखना चाहता हूँ।' इसी तलाश में वह नेपाल गया था। हम भारतीयों को भी चाहिए कि इस विषय की शोध करें।

## (छ) पुनर्जन्म की एक और घटना—

ज्ञान-मण्डल, सन्त कबीर रोड, बनारस से निकलने वाले 'समाज' नामक पत्र के १ सितम्बर सन् १९४१ के अंक में पुनर्जन्म की आगे लिखी घटना छपी थी।

बदायूं जिले के बिसौली नामक कस्बे के इन्टरमीडिएट कालेज के प्रोफ़ैसर श्री बांकेलाल शर्मा का पंचवर्षीय पुत्र अपने को मुरादाबाद की बिस्कुट कम्पनी मोहन ब्रदर्ज़ के स्वामी श्री मोहनलाल का भाई बताता है जिसका नाम परमानन्द था और जिसकी मृत्यु ९ मई १९४३ को पेट के तीव्र शूल से सहारनपुर में हुई थी। बालक का जन्म उनकी मृत्यु के ठीक ९ महीने ६ दिन बाद १५ मार्च १९४४ को हुआ। इस बालक का नाम प्रमोद है।

इस बालक के सम्बन्ध में विवरण अभी हाल में 'लीडर' ने प्रकाशित किया है। उसके संवाददाता के कथनानुसार जैसे ही वह बालक शब्दोच्चारण करने में समर्थ हुआ वह मोहन, मुरादाबाद और सहारनपुर शब्द कहने लगा। कुछ दिनों बाद वह मोहन ब्रदर्ज़ भी कहने लगा। जब कभी वह अपने किसी सम्बन्धी को बिस्कुट मक्खन खरीदते देखता वह कहा करता कि मेरी मुरादाबाद में बिस्कुट की फ़ैक्टरी है। अगर वह किसी बड़ी दूकान को देखता तो कहा करता कि इससे बड़ी दूकान मेरी मुरादाबाद में है। वह अक्सर मुरादाबाद जाने के लिए ज़िद भी किया करता। बच्चे का नाम भी जो पंडितों ने जन्मकुण्डली में लिखा है वह परमानन्द ही है। किन्तु उसके बड़े भाई का नाम विनोद है इससे लोग उसे प्रमोद कहते हैं। पर वह इस बात पर अक्सर

ज़िद करता कि उसका नाम परमानन्द है। उसके भाई हैं, बेटे हैं, लड़के हैं और बीवी है जो मुरादाबाद में रहते हैं।

इस साल के आरम्भ की बात है बिसौली के लाला रघुनन्दन लाल ने इस लड़के की ये सारी बातें मुरादाबाद के अपने एक सम्बन्धी से कहीं। उस सम्बन्धी ने ये सारी बातें जाकर मोहन कम्पनी के मालिक श्री मोहनलाल से कहीं। श्री मोहनलाल अपने अन्य सम्बन्धियों के साथ पिछली जुलाई में बिसौली गये और प्रमोद के पिता से मिले। उस समय प्रमोद अन्य लोगोंके साथ कहीं बाहर गया हुआ था। इससे उनकी उससे भेंट न हो सकी। श्री मोहनलाल के कहने पर प्रोफ़ैसर बांकेलाल ने लड़के को लेकर स्वतन्त्रता-दिवस की छुट्टियों में मुरादाबाद आना स्वीकार किया।

गत १५ अगस्त को मुरादाबाद स्टेशन पर ट्रेन से उतरते ही उसने अपने भाई को पहचान लिया और उनसे चिमट गया। स्टेशन से श्री मोहनलाल के घर जाते हुए रास्ते में उसने टाउनहाल को पहचान लिया और कहा कि अब दूकान के पास आ गये हैं। लड़के की परीक्षा के लिए तांगे वाले को दूकान पर तांगा न रोकने का आदेश था। अतः जैसे ही तांगा दूकान के सामने से आगे बढ़ा, लड़के ने मोहन ब्रदर्ज़ की दूकान पर तांगा रोकने को कहा। उसके बाद वह तांगे से उतरकर उनके मकान की तरफ जो कि दूकान के सामने ही है, बढ़ा और घर में पहुँच कर वह सीधे उस कमरे में गया जिसमें परमानन्द अपनी पूजा की सामग्री और अपना सामान रखते थे।

उसने अपनी पत्नी एवं अन्य सम्बन्धियों को तत्काल पहचान लिया और उनसे सम्बन्धित अपने पिछले जीवन की



प्रमोद



परमानन्द

कई घटनाएं बताईं जिनकी सत्यता को सब ने स्वीकार किया। लड़का केवल अपने बड़े लड़के को नहीं पहचान सका जिसकी आयु इस समय १७ वर्ष है। मृत्यु के समय उसकी अवस्था १३ वर्ष की थी। प्रमोद ने जब कहा कि हम सब एक साथ बैठकर शिकंजबी पिया करते थे तो सभी भाई जो वहां उपस्थित थे रो पड़े।

उसके बाद लड़के ने गद्दी पर जाने की इच्छा प्रकट की। दूकान में पहुँच कर वह सोडावाटर मशीन के पास गया और सोडावाटर बनाने की पद्धति बताई। उस लड़के ने अपने इस जीवन में कभी भी सोडावाटर बनाने की मशीन नहीं देखी थी, यह ध्यान देने की बात है। मशीन चलाई गई और जब उसने काम नहीं किया तो लड़के ने झट से कहा कि पानी का कनेक्शन बन्द होगा। वस्तुतः ही पानी का कनेक्शन बन्द था।

उसके बाद उसने विक्टरी होटल चलने को कहा जिसका संचालन परमानन्द के चचेरे भाई कर्मचन्द करते हैं। बालक बिना कुछ कहे उस भवन की ओर चला और ऊपरी मंजिल पर पहुँचा और उसे देखकर कहा कि 'वह मेरे सामने नहीं बना था।'

मुरादाबाद के प्रमुख रईस साहुनन्द लालसरन जी प्रमोद को अपने साथ बैठाकर मेस्टन पार्क ले गये और उससे उस जगह को बताने को कहा जहां उसकी सिविललाइन्ज वाली दूकान थी। तत्काल वह गुजराती बिल्डिंग की ओर ले गया और उस दूकान को दिखाया जिस में मोहन ब्रदर्ज़ की ब्रांच थी। मेस्टन पार्क के रास्ते में उसने इलाहाबाद बैंक, वाटर-वर्क्स और जेल को बताया। लड़के ने कुछ ऐसे आदमियों को

पहचाना जो मोहनलाल की दूकान पर उसके विगत जीवन में आया करते थे।

एक बात और उल्लेखनीय है कि उस दिन से पूर्व न तो प्रो० बांकेलाल और न प्रमोद कभी मुरादाबाद आये थे। संवाददाता का कहना है कि लड़के की बिना झिझक बातचीत का ढंग और सच्ची बातें ऐसी हैं कि जिससे उसके पूर्वजन्म में परमानन्द रहने में कोई सन्देह नहीं रह जाता।

इस घटना को पढ़ने के बाद मैंने लड़के के पिता को बदायूं पत्र लिखा और प्रार्थना की कि लड़के से पूछ कर मुझे बताइए कि पूर्वजन्म में मृत्यु और अब जन्म लेने के बीच का समय वह कहां रहा।'

इसके उत्तर में प्रमोद के पिता श्री बांकेलाल ने अपने २५ एप्रिल १९४९ के पत्र में बिसौली से लिखा—"बीच के समय के विषय में वह केवल यही बतलाता है कि आग लगी, मैं बचने के लिये भागा और एक दम बंद अंधेरी कोठरी में बंद कर दिया गया। तदनन्तर छोटा हो गया।"

इस पर मैंने पूछा कि परमानन्द के मृत शरीर को उसकी मृत्यु के कितनी देर बाद जलाया गया था? इस उत्तर में उन्होंने लिखा कि "बतलाया जाता है कि दाह-संस्कार कई घण्टों बाद हुआ था? इससे पता लगता है कि उसे डराने वाली अग्नि कोई दूसरी ही थी।"

### (ज) पंजाब के एक जाट परिवार की विचित्र घटना—

एक और विचित्र घटना सन् १९६३ में पंजाब के गांव में हुई। एक जाट ने पहली पत्नी के देहान्त पर एक

नवयुवती से विवाह कर लिया। यह दूसरी स्त्री उस की पहली पत्नी के लड़के को नहीं चाहती थी। लड़का गांव की पाठशाला में पढ़ता था। उस की सौतेली माँ उस से बहुत दुर्व्यवहार करती थी। पति उस के वश में था। उस ने पति को बाध्य किया कि वह लड़के को मरवा डाले। पति ने अपने मुज़ारे एक भंगी को कुछ लालच दे कर लड़के की हत्या के लिए तैयार कर लिया।

लड़का स्कूल में पढ़ रहा था। पिता ने भंगी से कहा उसे वहां से छुट्टी दिला कर अमुक स्थान पर जंगल में ले जाओ और वहां निर्जन में उसकी हत्या कर देना।

भंगी पाठशाला में जाकर अध्यापक से बोला कि इस लड़के को इसका पिता बुलाता है। इसे छुट्टी दे दीजिए।"

अध्यापक ने जब लड़के से जाने के लिए कहा तो लड़का गिड़गिड़ा कर बोला " गुरु जी, मुझे इसके साथ न भेजिए। मेरा बाप मुझे पीटना चाहता है। आप मेरी रक्षा कीजिए।"

अध्यापक बोला—"नहीं, तुम्हारा पिता तुम्हें नहीं मारेगा। डरो मत, बिना शंका के अपने मुज़ारे के साथ जाओ।"

लड़का न चाहते हुए भी डरता-डरता भंगी के साथ चल पड़ा। भंगी उसे एक निर्जन स्थान पर ले गया और एक पेड़ के साथ बांध कर कुल्हाड़े से उसका वध करने लगा। ज्यों ही उस ने कुल्हाड़ा उठाया, एक काले नाग ने निकल कर भंगी को डस लिया और वह वहीं मर गया।

लड़के का बाप उधर प्रतीक्षा में बैठा था कि कब भंगी आ कर लड़के के वध का समाचार सुनाता है। जब वह देर तक भी न आया, तब जाट आप उठ कर उसे देखने उस

स्थान पर पहुँचा। वहां भंगी को मरा पड़ा देख उसे आश्चर्य हुआ। अब वह आप उसी कुल्हाड़े से पुत्र पर प्रहार करने को तैयार हुआ। उसने कुल्हाड़े को हाथ में लिया ही था कि उसी सांप ने क़हीं से अचानक निकल कर उस जाट पिताको भी डस लिया। सांप के काटते ही वह भी मर कर गिर पड़ा।

इधर जब लड़का बहुत देर तक वापस पाठशाला में नहीं पहुँचा तो अध्यापक को चिन्ता हुई। वह डरा कि बालक को गुम कर देने के आरोप में कहीं मैं न पक़ड़ा जाऊं। वह पाठशाला के कुछ छात्रों को साथ ले उस लड़के को ढूंढने निकला। ढूंढते-ढूंढते जब वे उसी स्थान पर पहुँचे तो उन्होंने क्या देखा कि लड़का पेड़ से बंधा हुआ है और दो शव पास पड़े हैं। अध्यापक और छात्रों को देख सांप तुरन्त वहां से भाग कर अदृश्य हो गया। तब वे लड़के को बन्धन-मुक्त करके अपने साथ घर ले आए। यह घटना पंजाब के कई पत्रों में प्रक़ाशित हुई थी। इसमें आश्चर्य की बात यह है कि विषधर ने पेड़ में जकड़े हुए निरपराध बालक को तो कुछ नहीं कहा। पर हत्या करने पर उतारू दो व्यक्तियों को डस कर समाप्त कर दिया।

### (भ) बरेली के मुस्लिम परिवार में पुनर्जन्म की घटना—

नवाबगंज, बरेली के एक मुस्लिम अध्यापक श्री हरमतुल्ला अन्सारी के पाँच वर्षीय पुत्र करीमउल्ला ने अपने पूर्वजन्म की अनेक़ घटनाएं बता कर जहां सैंकड़ों व्यक्तियों को आश्चर्य में डाल दिया है, वहां दूसरी ओर बड़े-बड़े मौलवियों के समक्ष एक विकट समस्या खड़ी कर दी है। पाँचवर्षीय बच्चे ने जब नवाबगंज के एक पुराने जमींदार की पुत्र-वधू का

हाथ पकड़ कर कहा कि यह मेरी बीवी है तो सब आश्चर्य में पड़ गये।

घटना का विवरण इस प्रकार है कि लड़के के पिता जनाब इकरामअली के यहां बच्चों को पढ़ाते थे। एक दिन जब मास्टर साहब ईद पर वहां गये तो लड़का हाथ छुड़ा कर एकदम शीघ्रता से मकान के भीतर चला गया। बताया गया है कि अन्दर चारपाई पर श्री इकरामअली की विधवा पुत्र-वधू बैठी पान लगा रही थी। लड़के ने उसे देखते ही कहा—"फातिमा, एक पान हम भी खाएंगे।" अपरिचित लड़के के मुख से अपना नाम सुनकर पुत्र-वधू को चक्कर आ गया। दो क्षण के पश्चात् उन्होंने आंखें खोल कर देखा तो लड़का तीन दरवाजों को पार कर एक कमरे का द्वार खोलने का प्रयत्न कर रहा था। यह कमरा पुत्र-वधू का था। फातिमा बेगम ने लड़के को गोद में लेना चाहा। किन्तु लड़के ने कहा—"तुम मेरी बीवी हो फ़ातिमा ! मैं अपनी कुर्सी पर बैठूंगा।"

ज्ञात हुआ फ़ातिमा बेगम के पति मुहम्मद फारुक की मृत्यु आज से ठीक पांच वर्ष पूर्व हुई थी। बच्चे की बात सुनते ही फ़ातिमा बेगम मूर्च्छित हो कर गिर पड़ी। वैसे ही घर के अन्य लोग, बाहर से मास्टर साहब और जनाब इकरामअली को ले आए। दोनों ने देखा कि लड़का फ़ातिमा के क़मरे के नीचे लगी हुई चिटकनी हटाकर अन्दर वाली कुर्सी पर बैठा हुआ है। थोड़ी देर बाद होश में आने पर फ़ातिमा बेगम ने घबराते हुए सारी बातें जनाब इकरामअली को सुनाईं। पहले तो उन्होंने इस बात को हँसी में उड़ाते हुए मन का वहम बताया। किन्तु जब लड़के ने उनसे कहा कि—"अब्बा मियां को सलाम। आप मुझे नहीं पहचानते ? मैं फारुक हूँ।" तो इकरामअली भी

चक्कर खाकर गिर पड़े। लड़के ने घर वालों को बताया कि मेरा बैंक में तीन हजार रु. जमा है। उसने यह भी बताया कि मैंने अपने बड़े भाई उमरआदिल के पास पांच सहस्र रुपया पाकिस्तान भेजा है। स्मरण रहे कि उमरआदिल आजकल लाहौर में हैं और जूतों की तिजारत करते हैं। मृतक मुहम्मद फारुक का इरादा पाकिस्तान जाकर तिजारत करने का था। जनाब इकरामअली ने कहा कि—"पुनर्जन्म का मैं विश्वास नहीं करता, किन्तु मेरी आंखों के सामने जो प्रत्यक्ष प्रमाण है उन्हें मैं झुठलाना नहीं चाहता।"

आपने बताया कि उक्त लड़के ने मेरी पुत्र-वधू फातिमा को वे सब बातें बताई हैं जो मेरे मरहूम पुत्र मुहम्मद फारुक के अलावा किसी को भी मालूम नहीं थीं। लड़के ने यह भी बताया कि उसके ससुर के यहां एक बन्दूक थी जिसे किसी ने चुरा लिया था।

## (ज) छः वर्ष का लड़का कई भाषाएं बोलता है—

बम्बई मई ५, सन् १९४० उत्तर कनारा जिला में कारवार के एक गांव से एक लड़के का आश्चर्यजनक समाचार मिला है। लड़के की अवस्था मुश्किल से छः वर्ष की है। वह शेक्सपियर के सभी नाटकों में से कविताएं कण्ठस्थ सुनाता है। ५५ ईसापूर्व से महायुद्ध के अन्त तक इतिहास की प्रायः सभी महत्त्वपूर्ण घटनाओं के वर्ष झटपट बता देता है और अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति पर राजनीति के प्राध्यापक के समान विचार प्रकट करता है।

लड़के का नाम वेङ्कप्पा बुरुड है। वह बहुत सी भाषाओं में बातें करता है। जैसे कि फ्रैन्च, हिन्दी, मराठी, तुलू और

उस की अपनी मातृभाषा कोङ्कणी। जिन लोगों ने उसे देखा है वे कहते हैं कि वह विलक्षण बुद्धि का स्वामी है। बुड्ड स्वयं अपनी विस्मय-जनक शक्तियों के प्रति बिल्कुल उदासीन है। वह उपेक्षाभाव से कह उठता है कि मैंने बहुत दिनों से एम० ए० की परीक्षा पास कर रखी है, अब मैं कोई अच्छा-सा काम पाने का यत्न करना चाहता हूँ। एक नरदेहविज्ञानी ने लड़के से बातचीत करने के उपरान्त कहा है कि लड़का अपने पूर्वजन्म में अवश्य एक बहुत बड़ा विद्वान् रहा होगा। उसने जो ज्ञान प्राप्त किया था उसका बहुत कुछ अभी उसे स्मरण है। —यूनाइटेड प्रेस

ऐसी घटनाओं को झूठी या कपोलकल्पित कह कर इनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती।

## (ख) दो विचित्र प्रसंग—

### (१) मृत्यु से पहले अपना अगला जन्म बताना—

यहां तक तो हुई अपने पूर्वजन्म की बातें बताने वालों की बात। अब इस से भी बढ़ कर एक और आश्चर्यजनक घटना सुनिए।

होशियारपुर ज़िले के अन्तर्गत जैजों नामक एक ग्राम है। वहां बाबूराम कुम्हार की चन्द्रानन नाम की कन्या का ५ आषाढ़ संवत् १९८७ को देहान्त हो गया। बाबूराम की पत्नी का देहान्त पहले ही हो चुका था। उसे और कोई सन्तान न थी। चन्द्रानन को मरणासन्न अवस्था में देख पिता दुःख से फूट-फूट कर रोने लगा। इस पर लड़की ने पिता से कहा—"पिता जी, आप रोइए नहीं। मैं पुरानी बस्ती के निकट नन्दन नामक

गांव में केसरी चमारी के जहां जन्म लूंगी। आपको इच्छा हो, तो वहां आ कर मुझे मिल लेना।"

इसके बाद लड़की की मृत्यु हो गई।

जैजों से नन्दन कोई पन्द्रह कोस है। वह लड़की और न ही उसका पिता कभी नन्दन आए थे। मेरे गांव पुरानी बसी की एक स्त्री, शिवदेवी, बाबू राम की नातेदार थी। कुछ मास उपरान्त वह समवेदना प्रकट करने जैजों गई। तब बाबूराम ने उससे एकान्त में पूछा कि तुम्हारे गांव के निकट नन्दन गांव है। क्या वहां केसरी नाम की कोई चमारी है?

शिवदेवी को भी केसरी का कुछ पता नहीं था। पुरानी बसी वापिस लौटने पर उसने मुझ से बात की। मुझे इस पुनर्जन्म के विषय में बड़ी दिलचस्पी थी। मैंने खोज की तो पता लगा कि रत्नसिंह चमार की नवविवाहिता स्त्री का नाम केसरी है। पूछ-ताछ करने पर यह भी पता लगा कि वह गर्भवती भी है। तब इस विषय पर मैंने एक छोटा सा लेख इलाहाबाद की प्रसिद्ध पत्रिका, "सरस्वती", में छपाया। उसमें मैंने कहा कि पिछले जन्म की बात बताने वाले तो कई बालक मिले हैं, परन्तु इस प्रकार अगला जन्म बताने वाला कोई बालक आज तक देखने में नहीं आया। इस विषय में रुचि रखने वाले जिज्ञासुओं के लिए यह प्रसंग बड़े महत्त्व का है।

मेरा यह नोट छप जाने के कुछ मास बाद उपरान्त १ मार्गशीर्ष संवत् १९८८ विक्रमी को केसरी के यहां एक लड़की ने जन्म लिया। उसका नाम स्वर्णकौर रक्खा गया।

उसके जन्म का समाचार पा कर, सुना है, बाबूराम ने उस के लिए कपड़े भेजे थे। स्वर्णकौर अब विवाहिता युवती है। परन्तु उसने अपने पूर्वजन्म की कोई बात नहीं बताई।

इसी प्रकार रणवीरसिंह नामक एक व्यक्ति ने अपने मरण से पहले कहा था—"मैं अगला घर देख आया हूँ। आज मरने के लिए बहुत अच्छा दिन है। मैं वसन्त पंचमी नहीं देखूंगा। मैं लालची हो रहा हूँ। इसलिए मेरी मृत्यु निकट है।"

## (२) मृत देह में प्रवेश करने वाली आत्मा—

मरने के बाद आत्मा के मातृ-गर्भ द्वारा पुनर्जन्म लेने की घटनाओं के समाचार तो बहुत सुने और देखे जाते हैं, परन्तु एक शरीर छोड़ने के उपरान्त दूसरे मृत शरीर में प्रवेश करके जी उठने की घटना क्वचित् ही सुनने या देखने में आती है। ऐसी ही एक घटना की रिपोर्ट दो पत्रों से आगे उद्धृत की जाती है :—

नवभारत टाइम्ज़ अपने ६ मार्च सन् १९६० के अंक में लिखता है :—निज संवाददाता द्वारा—मेरठ। ग्राम रसूलपुर, ज़िला मुज़फ़्फ़रनगर में कुछ दिन पूर्व एक तीनवर्षीय बालक के शरीर में दूसरे मृत व्यक्ति की आत्मा ने प्रवेश किया। तदनन्तर उसने अपने पूर्वजन्म का वृत्तान्त बताया। उसे सुनकर जनता चकित हो गई।

घटना इस प्रकार बताई जाती है कि रसूलपुर के गिरधरसिंह जाट का तीनवर्षीय पुत्र जसवीर, चेचक के प्रकोप से साँझ के छः बजे मर गया। दूसरे दिन प्रातः चार बजे, जब घर वाले उसे उठाने गये तो बच्चे के शरीर में कंपन-सा

हुआ। उसने बोलना आरम्भ कर दिया। वह बोला कि मैं तो यहां से सोलह मील दूर ग्राम बहेड़ी के शंकर त्यागी का लड़का हूँ। वह अभी कुछ देर पहले रथ से गिर कर मरा है।

घर वाले अचम्भे में पड़ गये। उन्होंने बहेड़ी गांव में आदमी भेज कर लड़के की बताई बातों का पता चलाया। बातें सही निकलीं। शंकर त्यागी और उसके घर वाले अब गांव रसूलपुर आए तो बच्चे ने तत्काल सब को राम-राम की और नाम भी उनके बताए। जब उसे गांव बहेड़ी ले जाया गया तो वह अपने घर में स्वयं घुस गया।

अब उस लड़के ने अपने घर का खाना खाना बंद कर दिया है। वह कहता है मैं तो त्यागी ब्राह्मण हूँ, जाट का खाना नहीं खाऊंगा। यह बच्चा अब ग्राम बहेड़ी अपने पहले पिता के यहां चला जाता है।

इसी लड़के का वृतान्त "वीर अर्जुन" में इस प्रकार छपा :—

"आगरा : ३ जून १९५८—सेठ सोहनलाल मेमोरियल संस्थान, गंगानगर, राजस्थान, के निर्देशक श्री एन० एच० बैनर्जी ने स्वयं छानबीन करने के पश्चात् मृत शरीर में दूसरी आत्मा के प्रवेश की घटना का ब्योरा पत्रकारों को दिया है।

उनके अनुसार लगभग चार वर्ष पूर्व मुज़फ़्फ़र नगर ज़िला के एक गांव में एक तीनवर्षीय बालक जसवीर की मृत्यु हो गई, किन्तु कुछ घंटों बाद वह पुनः जीवित हो उठा। इस बीच में उसमें विचित्र परिवर्तन हो गया। वह स्वयं को ब्राह्मण बतलाने लगा। उसने कहा कि वह रसूलपुर से २२ मील दूर स्थित बहेड़ी नामक गांव के शंकरलाल त्यागी का लड़का

है। उसने घर का खाना-पीना बंद कर दिया और डेढ़ वर्ष तक एक ब्राह्मणी उसका भोजन बनाती रही।

कई मास बाद बहेड़ी गांव के रविदत्त नामक शिक्षक रसूलपुर आए, तो लड़के ने उन्हें पहचान लिया और उनसे घर तथा गांव की बातें करने लगा। इस पर उसे बहेड़ी गांव ले जाया गया। वहां उसने सब लोगों को पहचान लिया।

श्री बैनर्जी ने सौ व्यक्तियों के साथ जाकर छानबीन की तो पता चला कि उपर्युक्त शंकरलाल त्यागी का पच्चीस-वर्षीय विवाहित पुत्र भी चार वर्ष पूर्व ठीक उसी समय मरा था जब जसवीर की मृत्यु हुई। यह बालक अभी तक अपने वर्तमान माता-पिता से तालमेल नहीं बैठा सका।"

जसवीर का यह समाचार पढ़ मैंने उसके पिता को पत्र लिखा कि आप मुझे लड़के से पूछकर बताइए कि मरने के बाद उसकी आत्मा रसूलपुर कैसे पहुँची—उड़कर, पैदल चल कर या किसी चीज़ पर सवार होकर? दूसरी बात यह भी पूछिए कि वह चेचक से गले-सड़े इस मृत शरीर में क्यों प्रविष्ट हुआ? क्या उसे इससे अच्छा और दूसरा शरीर रास्ते में मिला ही नहीं? परन्तु मेरे पत्र का कोई उत्तर नहीं मिला।

## ४. कुछ एक आश्चर्यजनक विदेशी घटनाएं

संयुक्त राज्य अमेरिका के वर्जीनिया विश्वविद्यालय की मनोविज्ञानशाला के प्राध्यापक श्री स्टीवेन्सन M. D. पूर्वजन्म की शोध कर रहे हैं। जहां भी उन्हें पता लगता है कि कोई पूर्वजन्म की बातें बताने वाला बच्चा है, वे उसे मिलने के लिए वहाँ पहुँच जाते हैं। इसी उद्देश्य से वे पांच-छः बार भारत आ चुके हैं। वे लंका, ब्राज़ील, अलास्का, लैबेनौन और स्विटज़रलैण्ड आदि कई देशों में घूमे हैं। कुछ वर्ष हुए मैंने पत्रों में एक जन्मस्मर लड़की का वृत्तान्त छपाया था। होशियारपुर नगर से कोई तीन मील की दूरी पर नारा नामक गांव है। वहां रामचन्द (उपनाम काला) नामक एक बालक था। वह कुर्ते को आग लग जाने से जलकर मर गया था। वहां से मर कर वह १५-१६ मील दूर टोडरपुर नामक गांव में श्री चमनलाल रत्तू के घर एक लड़की के रूप में उत्पन्न हुआ। इस लड़की का नाम यशोदा है। जब वह कोई चार वर्ष की थी तब वह अपने पिता को लेकर टोडरपुर से नारा आई थी। इसके पेट पर जलने के चिन्ह थे। मेरे इस लेख को पढ़कर श्री स्टीवेन्सन सन् १९७१ में मुझे मिलने मेरे गांव पुरानी बसी आए थे। तब वह नारा जाकर रामचन्द के माता-पिता से भी मिले थे। (विस्तृत विवरण के लिये देखिये परिशिष्ट भाग कहानी संख्या (१)।)

श्री स्टीवेन्सन ने पुनर्जन्म की शोध पर एक पुस्तक लिखी है। इसमें आपने संसार के विभिन्न देशों में होने वाले

बीस दृष्टांतों का सविस्तर वर्णन किया है। अपनी यह कोई दो सेर भारी पुस्तक उन्होंने अमेरिका लौट कर समुद्र के रास्ते मुझे भेजी थी। यह मुझे १९७२ में कोई चार मास में पहुँची थी। उसी पुस्तक में से कुछ घटनाएँ मैं आगे दे रहा हूँ—

पहली घटना श्रीलंका की है। वहां Kotte (कौटे) नामक गांव में रणजीत मक़लन्द नामक एक लड़का है। वह अपने पूर्व-जन्म में इंगलैण्ड में अंग्रेज था। वहां से मर कर वह लंका में श्री मैकालमैदेज साम डी सिल्वा नामक सज्जन के घर पुत्र के रूप में जन्मा। उसका स्वभाव, रंग-रूप, रहन-सहन और खान-पान का ढंग अंग्रेजों का सा है। अंग्रेजी भी बहुत अच्छी बोलता है। चावल उसे नहीं भाते। जी मितलाने पर वह अंग्रेजों की तरह ही मुंह में अंगुली डालकर गला साफ़ करता है। स्कूल में पढ़ ही रहा था कि automobile कारखाने में काम करने लग गया। वह कहता है कि मैं बौद्ध नहीं हूँ, मैं ईसाई हूँ। मेरे माता-पिता इंगलैण्ड में हैं। अंग्रेजों की ओर उसका बढ़ता हुआ अनुराग देख उसके पिता ने उसे इंगलैण्ड भेज दिया। वहां वह अंग्रेज़ों में ऐसे घुल-मिल गया जैसे वहां का ही पुराना निवासी हो। वह वहां automobile फ़ैक्टरी में काम करने लग गया। रणजीत के पिता को अंग्रेज़ों में कोई रुचि नहीं, वरन् वे चाहते हैं कि उनका पुत्र अंग्रेजों से प्रेम न करे क्योंकि वे विदेशी और विधर्मी हैं और उसका प्रेम अपने परिवार में ही हो।

दूसरी घटना ब्राजील की है। वहां लौरेन्ज़ नामक परिवार में इमीलिया नामक एक लड़की थी। वह कहती थी कि मैं लड़की बनकर रहना नहीं चाहती। मैं मर कर फिर इसी घर में लड़के के रूप में जन्म लूंगी। उसके माता-पिता ने

उसका विवाह कर देने का यत्न किया। परन्तु वह सदा इन्कार करती रही। आत्महत्या करने के लिए उस लड़की ने संखिया खा लिया। परन्तु पता लग जाने पर उसे बचा लिया गया। इसके बाद उसने साइनाइड खा लिया और तुरन्त ही उसका देहान्त हो गया। उसकी मां कहती थी कि मेरे तो पहले ही बारह बच्चे हो चुके हैं, मेरे अब और बच्चा नहीं हो सकता। परन्तु वह फिर गर्भवती हो गई और उसे पुत्र उत्पन्न हुआ। उसका नाम उन्होंने पौलो (Paulo) रखा। लड़के का स्वभाव, खान-पान की रीति और चलना-फिरना सब स्त्रियों का सा है। वह कपड़े भी स्त्रियों जैसे ही पहनता है। वह कहता है कि मैं पहले इमीलिया था। उसने कई ऐसे लोगों को पहचान लिया जिन्हें उसने नहीं देखा था। वह अपने पूर्वजन्म की कई बातें बताता है। परन्तु ज्यों-ज्यों वह बड़ा होता जा रहा है, पिछले जन्म की बातें भूल रहा है।

तीसरी घटना अलास्का की है। अलास्का के पुराने लोग हिन्दुओं की भांति ही पुनर्जन्म को मानते थे। परन्तु कोई साठ-सत्तर वर्ष से वहां ईसाई धर्म के प्रचार से वे इसे भूलते जा रहे हैं। वहां एक व्यक्ति नाव में बैठकर ऊदबिलाव पकड़ कर उनकी खाल बेचा करता था। समुद्र की खाड़ी पर उसका हुक्का-तम्बाकू वगैरा पीने का एक छोटा-सा कमरा भी था। अलास्का के किंलिगत लोग भिन्न-भिन्न दलों में बंटे हुए हैं। वे आपस में बुरी तरह लड़ते-भिड़ते रहते हैं। वह भी एक बार एक दल में दूसरे दल के साथ लड़ने के लिए गया। वहां उसके पेट में छुरा घोंपकर उसकी हत्या कर दी गई। फिर वह अपने ही घर में अपने ही पोते के रूप में पैदा हो गया। परन्तु किसी को पता नहीं था। उसके पेट पर छुरे के घाव

का चिह्न था। एक दिन उसकी मां उसे लेकर उसी खाड़ी पर गई जहां उसके दादा का हुक्का-तम्बाकू पीने का कमरा था। तीन चार वर्ष के बच्चे ने उसे देखते ही झट से कह दिया कि यह तो मेरा कमरा है। उसकी मां सुनकर हैरान रह गई। फिर उस लड़के ने अपने पिछले जन्म की जब और बातें बताईं तो उन्हें निश्चय हो गया कि उस बच्चे के दादा ने ही उसके रूप में जन्म लिया है।

चौथी घटना भी अलास्का की ही है। वहां विक्टर विनसैंट नामक व्यक्ति रहता था। वह एक दिन अपनी मौसी की लड़की के घर गया और कहने लगा कि मैं मरकर तुम्हारे यहां जन्म लूंगा। यह देखो मेरी पीठ पर और नाक पर मस्से और तिल के निशान हैं। उस शरीर पर भी ये चिह्न होंगे। इसके एक साल बाद वह मर गया और सचमुच एक वर्ष बाद ही उसका जन्म अपनी मौसी की लड़की के पेट से पुत्ररूप में हुआ जिसका नाम कौरलिस चौटकिन जूनियर रखा गया। उस लड़के के शरीर पर भी वैसे ही मस्से और तिल के निशान थे। जब वह तीन-चार वर्ष का हुआ तो उसने अपने पिछले जन्म के संबंधियों, बहनों और अपनी पत्नी को पहचान लिया और उनका नाम लेकर पुकारने लगा, यद्यपि उसके वर्तमान माता-पिता नें उसे इनका कोई ज्ञान नहीं कराया था और वे रहते भी वहां से दूर एक अन्य गांव में थे।

पांचवीं घटना अरब देश के अन्तर्गत लैबेनौन प्रदेश की है। वहां एक व्यक्ति मरकर कोई बीस मील की दूरी पर दूसरे गांव में पैदा हुआ। वहां उसका नाम इमाद रखा गया जब वह कोई चार वर्ष का हुआ तो वह अपने पिता को तंग

करने लगा कि मुझे मेरे पूर्वजन्म के गांव में ले चलिए। वहां मैं एक ट्रक के नीचे कुचला जाकर मर गया था। पता पूछने पर जब उसने गांव का नाम बताया तो उसके पिता उसे वहाँ लेकर गए। वहां उसने अपनी पत्नी और कई पुराने संबंधियों को पहचान लिया, बल्कि उनका नाम लेकर पुकारा। वहां के लोगों ने उसके पिता को बताया कि जिस तरह यह कहता है, ठीक उसी तरह एक व्यक्ति यहां ट्रक तले आकर मर गया था। लैबेनीन के लोग मुसलमान हैं और वे पुनर्जन्म को नहीं मानते। परन्तु इस सच्चाई को सबको मानना पड़ा।

श्री स्टीवेन्सन ने ये ऊपर की घटनाएँ यों ही सुन-सुनाकर नहीं लिख दीं, इनकी उन्होंने पूरी-पूरी खोज और छान-बीन की है और सत्यप्रमाणित होने पर ही इनको लिखा है।

देखा गया है कि अपने पूर्वजन्म की बातें वही बच्चे बताते हैं जिनकी मृत्यु किसी दुर्घटना से हुई होती है या मृत्यु के समय जिनके मन में कोई प्रबल वासना अपूर्ण रह गई होती है। हाल ही में टर्की देश के एक मुस्लिम घराने में जन्म लेने वाले एक ऐसे ही बालक का हाल अनेक समाचार-पत्रों में प्रकाशित हुआ है। बम्बई के "नवनीत" समाचार-पत्र के एप्रिल १९६४ के अंक से लेकर वही आगे उद्‌धृत किया जाता है :—

## वह इस्माईल है या आबिद—

इस्तम्बूल (तुर्की) की आत्मविद्या तथा वैज्ञानिक अनुसंधान-परिषद् के अध्यक्ष ने इस घटना की स्वयं जांच करके कहा है कि स्पष्ट ही यह आत्मा के देहान्तरण का मामला है, एक शरीर में दो आत्माओं की उपस्थिति का नहीं। हम इस

मामले की रिपोर्ट अध्यात्मविद्यावेत्ताओं की अन्तर्राष्ट्रीय परिषद् को देंगे।

इस घटना का नायक है चार वर्ष का लड़का, इस्माईल अर्तलिकलिक। तुर्की मनोवैज्ञानिकों का मत है कि छः वर्ष पूर्व दक्षिण-पूर्वी तुर्की के अदना नामक स्थान में मारे गये एक व्यक्ति की आत्मा इस लड़के में बसती है। पिछले कई मास से मनोवैज्ञानिक और अध्यात्मविद्यावेता बड़ी तत्परता से इसकी जांच कर रहे हैं।

जिस व्यक्ति की हत्या की गई थी, उसका नाम था आबिद सुजुलयुस। वह अपने पीछे तीन बच्चे छोड़ गया था—गुलशरां, जैकी और हिकमत। चार वर्ष का इस्माईल कभी-कभी अपने इन बच्चों को देखने के लिए अधीर हो उठता है और ज़ोर-ज़ोर से नाम ले कर उन्हें पुकारने लगता है। बहुधा वह सोते-सोते उठ बैठता है और चिल्लाने लगता है—"गुलशराँ, मेरी बेटी, तुम कहां हो?"

इस्माईल के पिता महमूद अर्तलिकलिक ने एक दिन एक विचित्र दृश्य देखा। उनके घर के आगे से कोई फेरीवाला आईसक्रीम बेचता हुआ चला जा रहा था। नन्हे इस्माईल ने उसे आवाज़ देकर कहा—"महमूद, यह क्या कर रहे हो? तुम तो पहले साग-सब्ज़ी बेचा करते थे न!"

इस्माईल की आवाज़ और उसके ये शब्द सुनकर फेरीवाला दंग रह गया। उसका नाम सचमुच वही था। वह बच्चे से पूछने लगा—"तुम्हें कैसे मालूम कि मैं पहले साग-सब्ज़ी बेचा करता था?"

इस्माईल ने उत्तर दिया—"भई, मैं आबिद हूँ। मुझे भूल गये क्या ? तुम सब्ज़ियां मुझ से ही खरीदा करते थे।"

फेरीवाले के काटो तो बदन में खून नहीं। किसी तरह अपने को संभाल कर उसने कहा—"जहां तक मुझे याद है, आबिद की हत्या को हुए तो छः वर्ष होने को आए हैं।"

जब इस्माईल के पिता ने अपने लड़के के बारे में सारी बातें उसे बताईं, तब कहीं जाकर महमूद के होशहवास दुरुस्त हुए। अब वह प्रतिदिन इस्माईल को आईसक्रीम मुफ़्त खिला जाता है।

आबिद सुजुलयूस अदना नगर में रहता था। एक दिन उसकी पत्नी और दो बच्चों सहित उसकी हत्या कर दी गई थी। एक दिन इस्माईल ने कहा—"मेरे तीन बच्चे, गुलशरां, जैकी और हिकमत अभी तक जीवित हैं और मेरे घर में रहते हैं। मेरी पहली पत्नी हातिस, अब उनकी देख-भाल करती है।"

एक दिन एक पत्र-प्रतिनिधि इस्माईल को अदना नगर ले गया। आबिद के घर पहुँचते ही इस्माईल उत्तेजित हो गया और चिल्लाने लगा। गुलशरां ने द्वार पर उसका स्वागत किया। इस्माईल ने उसे देखते ही बड़ी स्वाभाविकता से कहा—"मेरी बेटी गुलशरां !"

फिर खाना बनाती हुई एक वृद्धा को देख वह दौड़ा-दौड़ा उसके पास गया और उसके गालों को चूम कर पत्रकार से बोला—"यह है मेरी पहली पत्नी हातिस।" जब पत्रकार ने पूछा कि तुम ने हातिस को तलाक देकर अपनी दूसरी पत्नी शाहिरा से निकाह क्यों किया ? तो इस्माईल ने बिना हिचक के उत्तर दिया—"शाहिरा अधिक सुन्दर थी और इस

हातिस के बच्चा न होता था।" आबिद के घर में इस्माईल इस प्रकार घूम रहा था कि मानो वह उसका अपना ही घर हो। उसे पता था कि कौन वस्तु कहां रक्खी है। वह पत्र-प्रतिनिधि को अस्तबल में ले गया। वहां जाते ही उसके चेहरे पर से मुस्कान गायब हो गई। उसने बताया कि किस प्रकार ३१ जनवरी १९५६ को इस अस्तबल में उसकी हत्या की गई थी। अब वह कथा सुनिए :—

"हमारा परिवार बड़ा सुखी था। हम सबकी सहायता करने को तैयार रहते थे। एक दिन दो भाई—रमजान और मुस्तफ़ा—मेरे पास बिलाल नाम के मनुष्य को लेकर आए और काम देने की मांग करने लगे। उन्होंने बताया कि वे केमिस्क गज़्क नामक नगर से आ रहे हैं। मैं साग-सब्ज़ियां उगाने का काम किया करता था। इसलिए मैंने उन्हें काम पर रख लिया। ३१ जनवरी के प्रातःकाल रमज़ान ने मुझे अस्तबल में आने को कहा। उसने बताया कि मेरा घोड़ा कुछ लंगड़ा रहा है। मैं अस्तबल में जा झुक कर घोड़े के पांव को देखने लगा। मेरे सिर पर प्रबल प्रहार हुआ और मैं नीचे गिर पड़ा। इसके बाद रमजान ने किसी लोहे की वस्तु से मुझ पर प्रहार किया।"

जैसे-जैसे इस्माईल इस हत्या का वर्णन शब्दों और के संकेतों द्वारा करता जाता था, उसके माथे पर पसीना बढ़ता जाता था। उसे घटना को याद करने में कठिनाई का अनुभव हो रहा था। बाद में वह अपने परिवार को आबिद की कब्र के पास ले जाकर बोला—"मुझे जहां दफ़नाया गया था।"

इस्माईल ने आबिद की हत्या का जैसा वर्णन किया था, वह उस रिपोर्ट से हूबहू मिलता था जो पुलिस ने मामले की जांच के बाद तैयार की थी। पुलिस की रिपोर्ट के अनुसार रमजान और मुस्तफ़ा नाम के दो भाइयों ने बिलाल नाम के व्यक्ति की सहायता से आबिद, उसकी पत्नी और दो बच्चों, जिली (आयु ६ वर्ष) और इस्मत (आयु ४ वर्ष) की हत्या कुल्हाड़ी से की थी। उनका भागने का प्रयत्न व्यर्थ गया था। वे पकड़ लिए गये और न्यायालय ने उन्हें प्राणदण्ड दिया। फाँसी के पहले ही मुस्तफ़ा जेल में मर गया, पर शेष दोनों अपराधियों को फांसी पर लटका दिया गया। इन हत्याओं से अदना में बहुत तूफ़ान मचा था।

जब इस्माईल को इस नाम से पुकारा जाता है तो वह कहा करता है—"मेरा नाम तो आबिद है।" वह एक परचूनिए की नौ सन्तानों में से एक है।

इस्माईल जब अठारह मास का था तभी से बोलने लगा था। पर आबिद की आत्मा के रूप में व्यवहार करना उसने ढाई वर्ष की आयु से आरम्भ किया। चाचा ने लड़के की विचित्र चेष्टाएं देख कर पहले तो उसे डांटा और फिर पिटाई की। उसका विचार था कि या तो लड़का मक्कारी कर रहा है या सचमुच उसके भीतर किसी की आत्मा समाई हुई है।

बालक इस्माईल ने चाचा के क्रूर व्यवहार को शान्ति से झेला और फिर चिल्ला कर कहा—कुछ दिन पहले तक तो तुम मेरे उद्यान में काम किया करते थे और मेरे साथ राकी (तुरकी की एक तेज शराब) पीते थे। अब तुम ऐसे कृतघ्न हो गये।"

चाचा हक्का-बक्का रह गया। सचमुच उसने आबिद की वाटिका में कई वर्ष तक काम किया था और आबिद के साथ बैठ कर बहुधा राक्षी पी थी।

जब इस्माईल को पड़ोस के बच्चे खेलने के लिए बुलाते हैं तो वह उत्तर देता है—"बच्चों के साथ खेलने के मेरे दिन गये। जाओ! भागो यहां से।"

---

## ५. पूर्वजन्म की स्मृति न रहने के कारण

अब प्रश्न होता है कि यदि पूर्वजन्म है, तो उस की स्मृति सब को क्यों नहीं रहती ?

इस का कारण यह है कि स्मृति मन और मस्तिष्क में रहती है और ये दोनों चीज़ें भौतिक शरीर के साथ ही नष्ट हो जाती हैं। आत्मा पर तो उस जन्म में किए हुए अच्छे-बुरे कर्मों का संस्कार मात्र ही रहता है। यह एक प्रकार से अच्छा ही है। जैसे नन्हें बच्चे के नेत्रों के कोमल ज्ञानतन्तु सूर्य के प्रचण्ड प्रकाश को सहन नहीं कर सकते और उस से उसे हानि होने की आशंका रहती है, उसी प्रकार शिशु के कोमल स्मृति-तन्तुओं पर पूर्वजन्मों की स्मृति का भार सहसा आ पड़ने में उसे हानि होनें का भारी भय है। इस स्मृति से आत्मा को लाभ कुछ नहीं। जो लाभ हो सकता है वह उस पर पड़े संस्कारों के रूप में हो ही जाता है।

जो जातिस्मर बालक पिछले जन्म की बातें बताते हैं, उनकी आत्मा पर विशेषतः मरते समय, किसी दुर्घटना से बड़ा गहरा संस्कार बैठ जाता है और अनुकूल परिस्थिति में उस गहरे संस्कार के कारण पूर्वजन्म की स्मृति ताज़ा हो उठती है। चाँदनी रात में आप अपनी छाया-मूर्ति देखने के उपरान्त यदि आप आकाश की ओर आंखें उठाएं

तो वहां भी आप को वही छाया-मूर्ति देख पड़ती है। साफ़ चमकते हुए तेज छुरे पर यदि आप रूई का छोटा सा फाहा रख कर उसे फूंक से हटाएं तो छुरे पर उसका संस्कार या निशान आपको देख पड़ेगा, यद्यपि वह फाहा वहां नहीं है। इसी प्रकार किसी के द्वारा निर्दयतापूर्वक वध किए जाने, पानी में डूबने या आग में जलने या अत्यन्त दुःख से मृत्यु होने से आत्मा पर गहरा संस्कार पड़ जाता है और ऐसे संस्कार वाली आत्मा अगले जन्म में पिछले जन्म की बातें बताने लगती है।*

---

ये मृताः सहसा मर्त्या जायन्ते सहसा पुनः।
तेषां पौराणिको भावः कंचित् कालं हि तिष्ठति ॥
तस्माज्जातिस्मरा लोके जायन्ते बोधसंयुताः।
तेषां विवर्धतां संज्ञा स्वप्नवत् सा प्रणश्यति ॥

—महा० भा० अनुशासन पर्व २२७, ३२-३३

जो मनुष्य अकस्मात् (झटपट) मर जाते हैं और फिर शीघ्र ही पुनः पैदा हो जाते हैं, उनका पूर्वजन्म का भाव (संस्कार) कुछ समय तक बना रहता है।

इसलिए संसार में अपने पूर्वजन्म को स्मरण करने वाले ज्ञानसम्पन्न ही पैदा होते हैं। जैसे स्वप्न का बोध कुछ काल के पश्चात् नष्ट हो जाता है, इसी प्रकार आयु के बढ़ने पर उनका (पूर्वजन्म का) ज्ञान नष्ट हो जाता है।

## ६. मरणोपरान्त आत्माओं का मिलाप

जीवात्मा क्या है और इसका अन्त क्या है, इस विषय में मानव बहुत पुराने समय से सोचता आया है। फिर भी अभी तक कोई सर्वसम्मत मत निश्चित नहीं हो सका। इन दोनों के बारे में धर्म और विज्ञान का भी मतभेद रहा है। इस विषय में धार्मिक मान्यता का आधार अन्ध-विश्वास रहा है और विज्ञान का किसी बात को देखे बिना विश्वास न करना। जो भी हो, मृत्यु से सब कोई डरता है। किसी उर्दू कवि का कहना है—

डरती है रूह मेरी और दिल भी कांपता है।
मरने का नाम मत लो, मरना बुरी बला है॥

परन्तु कई ऐसे लोग भी हैं जिनके लिए मृत्यु एक वरदान है, एक आनन्द है। वे अपने प्रत्येक दुःख की दवा मौत को ही समझते हैं। स्कॉटलैण्ड का एक कवि कहता है—

"हे मृत्यु, आ! तू दीन-दुःखियों का मन से प्यारा मित्र है।"

इसी प्रकार कबीरदास कहते हैं :—

जिस मरने से जग डरे मेरे मन आनन्द।
मरने से ही पाइए पूर्ण परमानन्द॥

दार्शनिक बेकन कहता है—"मैंने मृत्यु के सम्बन्ध में कई बार विचार किया है और सदा इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि मानव के लिए यह सबसे कम विपत्ति है।"

अमेरिका का प्रसिद्ध यहूदी विद्वान् सोलोमन कहता है—"सब सत्यानुरागी यह स्वीकार करते हैं कि इस जीवन के उपरान्त एक और जीवन भी है। शरीर का मिट्टी में मिल कर मिट्टी हो जाना एक अखण्डनीय तथ्य है। पदार्थ-विज्ञान की यह प्रतिज्ञा यदि सत्य है कि मानव-देह मरने के बाद नष्ट नहीं होती तो इस से कैसे इन्कार किया जा सकता है कि आत्मा का नाश नहीं हो पाता है। आत्मा अनादि काल से अनश्वर है और परलोक को न मानना अज्ञान है।

विख्यात दार्शनिक नशाद स्टंग का कथन है— "मैं व्यक्तिगत रूप से आत्मा की अमरता में इस लिए विश्वास रखता हूँ कि इस दृष्टिकोण को मान लेने से एक बड़ी सीमा तक बुराइयाँ रुक जाती हैं। आत्मा की अमरता एक ऐसा सिद्धान्त है जो मनुष्य को पाप से रोके रखता है और पुण्य-कर्म की प्रेरणा देता है।"

आत्मा क्या वस्तु है? लैटिन, ग्रीक और संस्कृत में आत्मा से अभिप्राय श्वास या प्राण से है। इसलिए मृत्यु को अन्तिम श्वास भी कहा जाता है। सर ऑलिवर लॉज आत्मा के सम्बन्ध में विचार करते हुए लिखते हैं—"मनुष्य की आत्मा उसके मरने के बाद नष्ट नहीं हो जाती है, अपितु एक नये जीवन की नई व्यवस्था में प्रवेश करके अपनी दौड़-धूप निरन्तर जारी रखती है। हमें इस बात का

पूर्ण विश्वास होना चाहिए कि हमारे प्यारे हम से पृथक् होकर हमें भूल नहीं जाते, वरन् हम से जुदा होने के बाद भी हमारा ध्यान उन्हें बराबर बना रहता है। वह पदार्थ जिसे हम आत्मा कहते हैं, वह चाहे तो हम से आकर मिल भी सकती है, दृष्टिगोचर भी हो सकती है। इस प्रकार का मिलाप या दर्शन केवल प्रेम की युक्ति है। जितना प्रेम, जितना लगाव दोनों को आपस में होगा उतनी ही अनुभूति भी अधिक होगी। आत्मा की यही वह अनुभूति है जो इसे कभी इस संसार की ओर, जिसे वह छोड़ चुकी है, वापस ले आती है।"

महाकवि इकबाल कहते हैं :—

तू इसे पैमानए इमरोजो फ़र्दा से न माप।
जावदाँ, पैहम दवाँ, हरदम रवाँ है जिन्दगी॥

अर्थात् इसे आज के दिन और आने वाले दिन के पैमाने से न माप। यह जीवन नित्य है, निरन्तर दौड़ रहा है और सब क्षण चल रहा है।

रोमन दार्शनिक सिसरो कहता है :—

"आत्मा की अमरता एक ऐसा कठिन सिद्धान्त है जिसे हम विभिन्न प्रकार की निरर्थक आपत्तियों से झुठला नहीं सकते।"

विक्टर ह्यूगो आत्मा के संबंध में लिखता है :—

"कब्र का अन्धकार और निर्जनता का विचार मुझे परेशान नहीं करता। इस का कारण यह है कि मेरे शरीर

को एक न एक दिन संकुचित और अंधकार-पूर्ण कारागार में तो अवश्य जाना है, परन्तु मेरी आत्मा इस में बंधी नहीं रह सकती।"

मृत्यु की उपमा प्रायः निद्रा से दी जाती है। मृत्यु को अनन्त निद्रा भी कहा जाता है। जैसे निद्रा में मनुष्य स्वप्न देखता है, वैसे ही कुछ लोगों की धारणा है कि मृत्यु के उपरान्त भी आत्मा शरीर से पृथक् हो कर नये नये दृश्य देखती है। यह तो एक तथ्य ही है कि हमारे कुछ स्वप्न आश्चर्यजनक रूप से सत्य निकलते हैं।

मृत्यु पूर्ण विनाश का नाम नहीं। यह केवल एक अवस्था से दूसरी अवस्था में परिवर्तित हो जाने का ही नाम है।

विक्टर ह्यूगो के वक्तव्य का समर्थन करने वाली कुछ घटनाएं सुनिए।

लार्ड ब्राहम कभी यूरोप के साहित्यिक क्षेत्र में एक प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। उन्होंने अपने मरने से कुछ समय पूर्व अपने जीवन की घटनाएं प्रकाशित की थीं। वे लिखते हैं :—

"मैं दिसम्बर १७९९ में देशाटन के लिए स्वीडन गया हुआ था। ऋतु बहुत शीतल थी। मैं ने स्नान के लिए पानी गरम किया। जब मैं स्नानागार में गया तो वहीं मेरे साथ एक विचित्र घटना घटी। मैं उसका वर्णन कुछ विस्तार के साथ करता हूँ।

जिन दिनों मैं शिक्षा ग्रहण कर रहा था एक गुरु-बंधु से अच्छी घनिष्ठता थी। उन दिनों मृतात्माओं के संबंध

में कई समाचार-पत्रों में बहुत मनोरञ्जक लेख प्रकाशित हुआ करते थे। हम दोनों भी ये लेख बड़े चाव से पढ़ा करते थे और उन पर वाद-विवाद भी किया करते थे। अब इसे परिहास कहिए या मनोरञ्जन, एक दिन बातों-बातों में हम दोनों ने प्रतिज्ञा की कि हम दोनों में से जो पहले मरे वह दूसरे से अवश्य मिले, जिससे हम स्वयं भी आत्मा की अमरता का अनुमोदन कर सकें।

मूर्खता या उत्सुकता की यह अवस्था थी कि हम दोनों ने सुई से उँगलियों में से रक्त निकाला और उस रक्त से उस प्रतिज्ञा-पत्र पर हस्ताक्षर कर दिए। कुछ दिन बाद मेरा मित्र नौकरी के संबंध में भारत चला गया और होते होते पत्र-व्यवहार भी बंद हो गया।

अब सुनिए मूल कहानी :—

उस दिन मैं स्नानागार में गरम पानी के टब में बैठा स्नान कर रहा था। अचानक मेरी दृष्टि उस कुर्सी पर पड़ी जिस पर मैंने अपने कपड़े रक्खे थे। अपने जिस मित्र से मैं ने वह प्रतिज्ञा की थी वही उस कुर्सी पर बैठा था। वह मुस्करा-मुस्करा कर मेरी ओर देख रहा था। इसके उपरान्त क्या हुआ और मैं टब से कैसे निकला, इस बारे में मैं कुछ कह नहीं सकता। मैंने स्नानागार के फर्श पर अपने को पड़ा पाया। कुरसी खाली थी। यह घटना १९ दिसम्बर सन् १७९९ को मेरे साथ घटी थी। मैं जब स्वीडन से वापिस एडन्बरा आया तो मुझे अपने मित्र के देहान्त की सूचना मिली। मेरे मित्र का देहान्त १९ दिसंबर सन् १७९९ को हुआ था।

अब एक और घटना सुनिए :—

मोसियो वेटकस ड. ग्रेज यूरोप के विद्वानों में अध्यात्मवाद के संबंध में एक प्रामाणिक विभूति माने जाते थे। वे एक घटना का वर्णन यों करते हैं :—

मेरी चाची की मृत्यु ८२ वर्ष की आयु में हुई थी। अपनी एक सहेली पर उनका बहुत प्रेम था। इन दोनों वृद्धा देवियों ने एक दिन यह प्रतिज्ञा की कि हम दोनों में से जो पहले मरे वह दूसरी से अवश्य मिले। कुछ काल उपरान्त मेरी चाची की सहेली संसार से चल बसी। चाची जी को सहेली से जुदा होने का बहुत धक्का लगा। सहेली की मृत्यु के उपरान्त उनका स्वास्थ्य भी खराब रहने लगा। एक दिन सायंकाल वे अपने पलंग पर लेटी हुई थीं। अचानक उनकी दृष्टि आराम कुर्सी पर पड़ी। उस कुर्सी पर उनकी सहेली बैठी थी। परन्तु आज दिवंगत के सिर पर टोपी थी। मेरी चाची ने वह पहले कभी नहीं देखी थी। कुछ काल उपरान्त स्वर्गीय सहेली की बेटी चाची जी का सुख-समाचार लेने आई। चाची ने उस घटना की चर्चा उस स्त्री से की। टोपी के बारे में दिवंगत की बेटी ने कहा कि उसकी माँ को जो कफ़न पहनाया गया था उसमें पुराने ढंग का एक कनटोप भी था। यह कनटोप स्वर्गीया सदा सोते समय पहना करती थी। यह घटना १३ मार्च सन् १८९९ की है।"

इन दोनों घटनाओं से आत्मा की अमरता को समझने में सहायता मिलती है। इन दोनों को बतलाने वाले सज्जन कोई ऐरे गैरे व्यक्ति नहीं; वे अच्छे प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं।

ऐसी ही एक और घटना सुनिए :—

देश के विभाजन के पूर्व मैं लाहौर के 'कृष्ण नगर' नामक उपनगर में रहा करता था। सन् १९४४ या ४५ की बात है। वहां एक अच्छा धन-संपत्तिशाली व्यक्ति था। उसके कोई सन्तान न थी। बहुत प्रयत्न और प्रतीक्षा के उपरान्त उसके एक पुत्र हुआ। स्वभावतः इस इकलौते पुत्र पर माता-पिता को अगाध प्रेम था। जब बालक कोई सात-आठ वर्ष का हुआ तो एक दिन वह अपने दूसरे मित्र बालकों के साथ पतंग उड़ाने रावी तट पर गया। सांझ का समय था। शेष बालक तो घर लौट आए, परन्तु उस बालक को उस का चचा रावी के किनारे, बहाने से एक निर्जन स्थान में ले गया। वहां जाकर उसने उस भतीजे का गला घोंट कर उसे मार डाला और उसका शव बालू में दबा दिया।

जब रात को बालक घर न लौटा तो माता-पिता को बड़ी चिन्ता हुई। माँ तो दुःख से बेहाल हो गई। सब जगह तलाश की, परन्तु कहीं पता न चला। तलाश करने में वह दुष्ट चचा सबसे आगे था।

बहुत ढूंढने पर भी जब बालक न मिला तो पुलिस में सूचना दी गई।

माँ बिचारी सदा रोती-धोती रहती। एक दिन रोते-रोते उसे नींद आ गई। स्वप्न में उसके पुत्र ने आकर कहा 'माँ, मुझे चचा ने गला घोंट कर मार डाला है। मेरा मृत शरीर अमुक स्थान पर रावी के किनारे दबा पड़ा है। मैं ने खाकी निक्कर पहन रक्खी है।"

माँ ने यह बात पिता से कही। पिता को अपने भाई के संबंध में ऐसा दुष्ट कर्म करने की कल्पना भी नहीं होती थी। उसने अपनी पत्नी से कहा कि तुझे यों ही भ्रम हो रहा है, मेरा भाई ऐसा नहीं हो सकता। परन्तु माँ का कलेजा था। वह न मानी। इस पर पुलिस को साथ लेकर पिता रावी के किनारे निर्दिष्ट स्थान पर पहुँचा। वहां उन्हें पहले पतंग और डोर मिली और फिर बालू खोदने पर लड़के का शव खाकी निक्कर पहने मिला। चचा पहले तो माना नहीं, परन्तु बाद को पुलिस का डंडा चढ़ने पर उसने अपना अपराध स्वीकार कर लिया।

दार्शनिक मोसियो योजीनो ने अपनी विश्व-विख्यात पुस्तक, ले फिनोमिने द हेन्तीज, में एक बड़ी मनोरञ्जक घटना का वर्णन किया है। इस घटना का अनुमोदन प्रो० जेम्ज़ हाईस्लोप ने बड़ी शोध के पश्चात् किया है। इस शोध में पाँच और विशेषज्ञ प्राध्यापक भी उनके सहायक थे। उनमें से एच० ए० कनामेन ने इस घटना के संबंध में लिखा है :—

"मेरे पिता जेकब कनामेन और मेरे चचा डब्ल्यू० कनामेन और इन दोनों का एक मित्र एडमन्स चिकित्सा-शास्त्र की शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। तीनों में गाढ़ी ठनती थी। एक दिन इन तीनों ने आपस में यह प्रतिज्ञा की कि इन तीनों में से अध्ययनकाल में यदि किसी की मृत्यु हो जाय तो दूसरों को अधिकार होगा कि वे मृतक की हड्डियों का ढाँचा अध्ययन के लिए अपने अधिकार में रक्खें। परन्तु किसी दूसरे को न सौंपें और यदि इस विषय का पालन न हो सके तो ढाँचा दफ़न कर दिया जाय।

कुछ ही दिन उपरान्त एडमन्स की मृत्यु हो गई। मेरे चचा डब्ल्यू० कनामेन ने एडमन्स के शरीर की अस्थियों को रासायनिक रीति से सुरक्षित करके अपने पास रख लिया। जब तक डब्ल्यू० कनामेन जीता रहा, एडमन्स की अस्थियां उसके अधिकार में रहीं। चचा के उपरान्त मेरे पिता जेकब कनामेन ने वे अपने पास रख लीं। मेरे पिता के मरने के उपरान्त ये हड्डियां डाक्टर लारन्स को मिलीं। जब डाक्टर लारेन्स का देहान्त हो गया तो एडमन्स के शव की अस्थियां डा० जेकसन के मित्र की संरक्षता में आईं। उस मित्र के बाद वे मेरे भाई रॉबर्ट को मिलीं। जब तक हड्डियां एडमन्स की मित्र-मण्डली के क्षेत्र से बाहर नहीं गईं तब तक कोई अनोखी बात किसी के पर्यवेक्षण में नहीं आई। परन्तु यदि ये किसी को उधार दी जातीं या कहीं असावधानता से रख दी जातीं तो बहुत परेशानी का कारण बन जातीं।

सन् १८४९ में मेरे पिता जेकब कनामेन को अकस्मात् केलीफोर्निया जाना पड़ा। जाने से पहले उन्होंने एडमन्स की हड्डियां घर के तहखाने में रख दीं। उसी रात तलघर की सीढ़ी से किसी के ज़ोर ज़ोर से पांवों को रख कर चढ़ने और उतरने के शब्द आने लगे। इस निरन्तर खट-खट से से घर वालों को भारी परेशानी होने लगी। अन्त में मेरी माँ ने मेरे चचा को बुलवा कर कहा कि वह हड्डियों का सन्दूक तलघर से उठवा कर अपने यहां ले जाय। चचा एडमन्स की अस्थि-मंजूषा घर ले आए और उसे अपने पुस्तकालय में रखवा दिया। तब कहीं एडमन्स की आत्मा को चैन आया।

मेरे पिता का देहावसान सन् १८७४ में हुआ। उनके मरने के उपरान्त एडमन्स की हड्डियां भाई रॉबर्ट के अधिकार में आईं। परन्तु रॉबर्ट ने कुछ दिन वह सन्दूक अपने पड़ोसी के यहाँ रखवा दिया। उन्हीं दिनों रॉबर्ट के पड़ोसी के मकान की मरम्मत हो रही थी। इस पर एडमन्स की आत्मा इतनी क्रुद्ध हुई और ऐसी ऐसी चेष्टाएं करने लगी कि राजों और मजदूरों ने भयभीत होकर काम करना बन्द कर दिया। अन्ततः रॉबर्ट हड्डियों का सन्दूक अपने पास उठवा लाया। तब कहीं एडमन्स की आत्मा शान्त हुई।

प्रो० जेम्ज़ हाई स्लोप ने ऐडमन्स की हड्डियों के संबंध में और भी कई लोगों के पर्यवेक्षण लिखे हैं। इन सब वर्णनों से यह मानना ही पड़ता है कि एडमन्स ने जीवन में अपने मित्रों से जो प्रतिज्ञा की थी उसे वह मरने के उपरान्त पूरी करता रहा। क्रोध की दशा में एडमन्स की हड्डियां इतने विकट रूप से चेष्टा करती थीं कि सुनने वाले भयभीत हो जाते थे।

## सहेली को वचन दिया

इस घटना का उल्लेख समाचार-पत्रों में भी बार-बार होता रहा था। कई बार आत्माएं दूसरों के माध्यम से भी अपने आने की सूचना दे दिया करती हैं। ब्रस्सेस के रेवरेण्ड आर्थर मलजो फर्बरी सन् १८८६ की एक घटना का वर्णन इस प्रकार करते हैं :—

मेरी पत्नी ने जीवन में अपनी एक सहेली को यह वचन दिया था कि दोनों में से जब कोई मर जाय तो वह मरने के

उपरान्त अवश्य मिले। इस प्रकार के वचन देने का कारण यही जान पड़ता है कि लोगों में मृत्यु के उपरान्त भी आत्मा के जीते रहने के विषय में बहुत चर्चा रहा करती थी और आपस में खूब गरमागरम वाद-विवाद हुआ करते थे। महा-विद्यालयों के विद्यार्थी केवल दिल्लगी के लिए इन सभाओं में सम्मिलित होते थे और कभी दिल्लगी-दिल्लगी में ही इस प्रकार की प्रतिज्ञाएं कर लेते थे।

अस्तु, मेरी पत्नी शिक्षा-प्राप्ति के उपरान्त अपनी सहेली से अलग हो गई। एक दीर्घकाल तक उन को एक दूसरे का पता नहीं रहा। एक दिन संयोगवश उसे अपनी एक सहपाठिनी लड़की से अपनी सहेली की मृत्यु का पता लगा। उस दिन मेरी पत्नी ने मुझ से अपनी सहेली की मृत्यु की और उन दोनों में जो प्रतिज्ञा हुई थी, उस की चर्चा की।

अब एक दिन की घटना सुनिए—रात का समय था। हम दोनों पति-पत्नी अपने-अपने पलंगों पर सो रहे थे। अचानक मेरी आंख खुल गई और मुझे कमरे में हल्का-सा प्रकाश दिखाई पड़ा। मैं जल्दी से उठ कर बैठ गया। मेरी पत्नी के पलंग पर एक स्त्री बैठी थी। वह कौन थी, कैसे आई, इस बारे में मुझे कुछ विदित न था। हां उस की आकृति मेरी स्मृति में रह गई थी। मैं आश्चर्य और कुछ भय से इस स्त्री की ओर देख रहा था। मेरे देखते ही देखते वह पलंग से उठी और वहीं कहीं अन्तर्धान हो गई। जब मेरी पत्नी जागी तो मैंने रात की घटना उसे कह सुनाई। तब उसने उस की आकृति सुन कर कहा कि वह उस की वही सहेली थी जिस ने उसे मरणोपरान्त मिलने का वचन दिया था।

## प्रियजनों की आत्माएँ

इस प्रकार की सैंकड़ों घटनाएँ देखने और सुनने में आती हैं। इन के संबंध में विभिन्न लोगों के विभिन्न अभिमत हैं। सर ऑलिवर लॉज अध्यात्म विषय के बहुत बड़े ज्ञाता माने जाते हैं। उनका कथन भी मनन करने योग्य है। वे कहते हैं :—

"जिस प्रकार हम अपने से बिछुड़े प्रियजन से मिलने के लिए लालायित रहते हैं, उसी प्रकार इस बात से भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि इन प्रियजनों की आत्माएं भी हम से मिलने के प्रयत्न में लगी रहती हैं। पहले इस प्रयत्न की उपमा उस विकट पथरीले मार्ग से दी जा सकती है जो एक दुर्गम पर्वत को काट कर बनाया गया है। दोनों के मिलने के लिए मार्ग तो तैयार है परन्तु उसमें से होकर निकलने के लिए अभी इतनी बाधाएं हैं जिन को मार्ग से हटाने की कोई विधि अभी तक मस्तिष्क में नहीं आई। किन्तु आशा है कभी वह समय भी आ जायेगा जब यह मार्ग साफ़ हो जायगा और आत्मा के जीवन के संबंध में हमारी बहुत सी समस्याओं का समाधान हो जायगा।"

किसी विद्वान् का कथन है कि अनेक बार हम किसी सत्य को भी स्वीकार कर लेने के लिए आसानी से तैयार नहीं होते।

प्रेम एक ऐसा जादू है जो जीवन और मृत्यु के बाद भी अपने प्रभाव से खाली नहीं रहता। यही वह वस्तु है जो आत्माओं को हमारी ओर खींचती है। हम अपने विचार केवल शब्दों द्वारा ही प्रकट नहीं करते। विचार का

संबंध मनुष्य के मस्तिष्क से होता है। यदि पूर्ण लीनता हो तो हम उसी विचारशक्ति से दूसरों को भी प्रभावित कर सकते हैं।

## मृत पति के हिसाब का ब्योरा

आत्माओं के संबंध में जो विभिन्न प्रकार की बातें हम देखते सुनते हैं उन्हें न एकदम स्वीकार कर लेना ठीक है और न उन्हें मानने से एकदम इंकार कर देना ही। इन घटनाओं को गलत कह देना बड़ी जिम्मेदारी का काम है। सेण्ट अगस्टायन का कथन है कि तथ्यों को देखते हुए भी उन्हें स्वीकार न करना केवल मूर्खता और हठधर्मी ही नहीं, पाप भी है। एक घटना और सुनिए :—

"मैडम डी० माइगोलन के पति हॉलेण्ड सरकार की ओर से स्वीडन में राजदूत थे। उन को मरे कई दिन हो चुके थे। सन् १७६१ ई० में वह लिखती है :—"मेरे पति के देहान्त के कुछ काल उपरान्त एक प्रसिद्ध महाजन (बैंकर) एक दिन मेरे पास आया। उस महाजन का मेरे पति के साथ लेन-देन था। उसने मुझ से पच्चीस सहस्र डच पौण्ड की मांग की। मुझे यह अच्छी तरह मालूम था कि मेरे पति ने मरने के पहले यह ऋण चुका दिया था; परन्तु मेरे पास इस का कोई प्रमाण नहीं था। मैंने घर में सब कहीं इस ऋण के चुका देने की रसीद तलाश की। परन्तु वह कहीं न मिली। इस घटना के सात आठ दिन बाद मेरे पति स्वप्न में मुझे मिले और उन्होंने कहा कि महाजन से जो रसीद ली थी वह एक मीनाकारी की डिबिया में रक्खी है। मैंने जब वह डिबिया देखी तो रसीद उस में विद्यमान थी। उसी दिन महाजन

मिलने आया। उस ने बतलाया कि गत रात्रि उसने मृतक को स्वप्न में देखा है। उसने मुझ से कहा था कि मैं अपनी पत्नी से मिल चुका हूँ और मैंने उसे सब कुछ बता दिया है। इस पर मैंने रसीद महाजन को दिखा दी और वह सन्तुष्ट हो कर चला गया।"

इंग्लैंड की प्रसिद्ध पत्रिका "रीव्यू ऑफ़ रीव्यूज़" के के संपादक विलियम स्टेड आध्यात्मिकता के बड़े प्रेमी थे। उन्होंने "लाईफ़ आफ़टर डेथ" (मरणोपरान्त जीवन) नाम की एक प्रसिद्ध पुस्तक भी लिखी थी। उन्होंने अपनी पत्रिका के जुलाई सन् १८९९ के अंक में निम्नलिखित मनोरञ्जक घटना प्रकाशित की थी :—

"अलजेरिया के आर्क बिशप ने मुझ से अपनी आंखों देखी घटना यों कही थी :—

एक दिन मैं अपने कमरे में बैठा समाचार-पत्र पढ़ रहा था। अचानक मुझे पीठ की ओर द्वार खुलने का शब्द सुन पड़ा। मैंने जो पलट कर देखा तो मुझे दीवार पर एक मनुष्य की छाया देख पड़ी। यह परछाईं मेरे एक मित्र की थी। मेरे मित्र ने अपना जीवन गिरजा की सेवा के लिए अर्पित कर रक्खा था। उसे मरे भी बहुत समय बीत चुका था। मैं इस छाया की ओर बड़े विस्मय से देख रहा था। अचानक शब्द सुनाई पड़े —

"मेरी सहायता कीजिए। मैं बड़ी विपद् में हूँ। मेरे ज़िम्मे कुछ ऋण है। मैं तुम्हें अपनी मित्रता का स्मरण दिलाता हूँ। यह ऋण अपने पास से चुका दो ताकि मुझे शान्ति और सन्तोष प्राप्त हो।"

मेरे दिवंगत मित्र ने ऋण की राशि, ऋणदाता का नाम और पता भी बता दिया। यह रात्रि का समय था। अगले दिन मैं ऋणदाता से मिला। मैंने उससे पूछा कि अमुक मनुष्य से उसे कितने रुपये लेने थे? उसने भी वही राशि बताई जो मेरे स्वर्गीय मित्र ने बताई थी। मैंने ऋण चुका दिया।

ऐसी ही अनेक घटनाएं भारत में भी सुनने में आती हैं। परन्तु हम लोग उन पर यथेष्ट ध्यान नहीं देते। पुनर्जन्म का सिद्धान्त तो कदाचित् सर्वप्रथम भारत की ही शोध है।

---

## ७. उपसंहार

जन्मान्तर का विषय सारे अध्यात्मवाद का एक प्रकार से मूलाधार है। इसको स्वीकार किए बिना अध्यात्मवाद खड़ा नहीं रह सकता। परन्तु खेद है कि इसका वैज्ञानिक रीति से जैसा अनुसन्धान होना चाहिए वैसा नहीं हो सका। मेरे स्वर्गीय मित्र महात्मा सत्यानन्द स्टेक्स एक अमेरिकन सज्जन थे। उन्हें अध्यात्मवाद में गहरी रुचि थी। मैंने एक समय उन से कहा था कि भारत के हिन्दू तो इस विषय में निश्चेष्ट हैं। यदि किसी प्रकार हम अमेरिकनों को इस विषय की महत्ता समझा सकें और वे इसमें दिलचस्पी लेनें लगें तो आशा है वे इसके अनुसन्धान के लिए यत्न करें और धन लगाएं। अमेरिका के विचारशील और धन-कुबेर लोगों को इस विषय में प्रवृत करने की हम दोनों योजना बना ही रहे थे कि महात्मा सत्यानन्द जी 'वायना' में अपनी इहलीला समाप्त कर गये। यूरोप को भोगभूमि और भारत को ज्ञानभूमि कहकर अपनी आध्यात्मिकता की डींग मारने वाले कोटि-कोटि हिन्दुओं में क्या कोई ऐसा धन-कुबेर न निकलेगा जो इस परमपुनीत विषय के अनुसन्धान के लिए अपना धन लगाकर संसार का उपकार करे ?

आर्य-समाज के पूज्य प्रवर्तक महर्षि दयानन्द का यह सिद्धान्त मुझे अच्छा सन्तोषजनक लगता है कि ब्रह्म, जीव और

प्रकृति तीनों अनादि और अनन्त हैं। जीव कर्म करने में स्वतंत्र है, परन्तु कर्म का फल भोगने में स्वतंत्र नहीं। ईश्वर न्यायकारी और सर्वशक्तिमान् है। वह जीव को उसके अच्छे-बुरे कर्मों का फल देता है। अनुनय-विनय, चापलूसी और किसी प्रकार की घूंस ईश्वर को देने से जीव अपने दुष्कर्मों का दण्ड भोगने से बच नहीं सकता। जिस कर्म का फल जीव एक जन्म में नहीं पा सकता, उसका फल वह दूसरे जन्म में पाता है। विधाता का यह अटल विधान है। इसलिए पापकर्मों से बचकर पुण्यकर्म करना ही मनुष्य के लिए सुखी रहने का सच्चा मार्ग है।

---

# ८. परिशिष्ट

## पुनर्जन्म की कुछ और घटनाएं

### (१) एक आश्चर्यमयी बालिका—

ईसाइयत और इस्लाम जैसे कुछ मत पुनर्जन्म को नहीं मानते। वे कहते हैं कि मनुष्य की आत्मा कयामत के दिन तक क़ब्र में पड़ी रहती है। ईसाइयों और मुसलमानों में भी मोटरकार के आविष्कारक श्री फ़ोर्ड और मौलाना रूमी जैसे विचारकों की कमी नहीं, जो आत्मा की अमरता और पूर्वजन्म में विश्वास रखते थे। मैं गत चालीस वर्षों से पूर्वजन्म के सिद्धान्त की शोध कर रहा हूँ। पूर्वजन्म की बातें बताने वाले बहुत से बालकों का मैंने अध्ययन किया है। खोज करने पर उनकी बताई बहुत सी बातें सत्य निकली हैं। इससे आत्मा की अमरता पर मेरा विश्वास दृढ़ होता जा रहा है। ऐसी ही एक घटना हाल ही में मुझे मिली है।

लाहौर से आकर मैं आजकल पुरानी बसी नामक एक छोटे से गाँव में रहता हूँ। यह गाँव होशियारपुर नगर से अढ़ाई मील ऊना जाने वाली सड़क पर स्थित है। पुरानी बसी से कोई डेढ़ मील परे नारा नाम का एक छोटा-सा पहाड़ी गाँव है। इसमें अधिकतर हरिजन बसते हैं। गत १३ जुलाई १९७० को जालन्धर से नारा में एक सज्जन अपनी चार वर्षीय कन्या लेकर आये। आने का कारण पूछने पर उन्होंने बताया

कि "मेरी यह लड़की बहुत दिन से कह रही थी, 'मुझे अपने घर जाना है।' पहले तो इसकी बात हमारी समझ में नहीं आती थी। अब जब यह कुछ बड़ी हुई और हम इसकी बात समझने लगे तो हमने पूछा, 'तेरा घर तो यही है, तू कहां जाना चाहती है ?' इस पर यह बोली कि मेरा घर नारा में है। इसलिये हम इधर आए हैं।"

हम ने नारा गांव का नाम नहीं सुना था। हमने पूछा कि नारा कहां है? तो उस लड़की ने बताया कि होशियारपुर से सीधी सड़क ऊना को जाती है। उस सड़क पर ईंटों का भट्टा है। उस भट्टे से पुरानी बसी को रास्ता मुड़ता है। पुरानी बसी के आगे नारा है।

## बातें ठीक निकलीं—

हम उसे लेकर जब भट्टे पर पहुँचे तो उसने झट कहा, आगे न जाकर बाएँ हाथ को मुड़िए। तो आगे दो रास्ते थे। वहां लड़की ने झट बता दिया कि नारा को जाने वाला रास्ता यह है। हम उस रास्ते से चलकर जब गांव के निकट पहुँचे तो गरमी के कारण एक वृक्ष के नीचे विश्राम करने बैठने लगे। इस पर लड़की ने कहा, 'यहां गंदगी में क्यों बैठते हो ? तनिक आगे चलो। मेरे गांव के निकट बड़ का एक पेड़ है, उसके नीचे विश्राम करो।'

जब हम बड़ के नीचे पहुँचे तो कुछ दूरी पर एक स्त्री खाट पर लेटी दीख पड़ी। उसे देख कर लड़की झट बोली—"वह देखो वह मां 'अक्की' बैठी है।" लड़की दौड़कर मां से लिपट गई। इतने में किशनचन्द तालिब नाम का एक युवक वहां आया। लड़की झट बोल उठी, 'यह मेरा भाई किशन है।' तालिब और गांव के दूसरे लोगों ने बताया कि लड़की जो

कुछ कह रही है, बिल्कुल ठीक है। आज से कोई २८ वर्ष पहले तालिब का ८-१० वर्षीय भाई रामचन्द कपड़ों में आग लगने से जलकर मर गया था। लड़की ने भी अपना पहला नाम यही बताया था।

तालिब और उसका पिता लड़की को अपने घर चलने को कहने लगे। जब लड़की घर जाने लगी तो उसे जानबूझ कर वे अपने घर न ले जाकर किसी दूसरे के घर ले जाने लगे। वह झट बोल उठी—"यह मेरा घर नहीं, मेरा घर तो वह है, उस ओर।" उसने अपने पिता मंगतराम और ताऊ लक्खूराम को भी पहचान लिया और बोली कि 'आपने ही मेरा जलता कुर्ता फाड़कर मुझे आग की लपटों में से निकाला था।' तालिब ने भी बताया कि मेरा भाई जल कर मरा था और लड़की के पेट पर अब भी जलने का दाग है।

लड़की के भाइयों ने कहा कि 'अब तुम यहां ही रहो। हम चार भाई हैं, पांचवीं तुम हो जाओगी। हम तुम्हें अपनी सम्पत्ति का भाग दे देंगे और तुम्हारा विवाह भी कर देंगे।' इस पर वह बोली, 'नहीं मैं तुम्हारे पास नहीं रहूँगी। वर्तमान पिता के पास जब मेरा विवाह होगा, तो इनका गांव टोडरपुर छोड़ने के बाद मैं फिर लड़का बन जाऊँगी।'

नारा से जालन्धर लौटते हुए जब लड़की भट्टे पर पहुँची तो भट्टे के मुंशी श्री जगदीश मित्र होशियारपुर में उसे अपने मकान पर ले गये। वे असली रहने वाले सांधरा नामक एक दूसरे गांव के हैं। होशियारपुर उनके मकान पर पहुँच कर लड़की ने कहा—'आपके गांव के मकान में साँप रहता है और रक्त के छींटे पड़े हैं।' मुंशी जी ने कहा 'लड़की का कहना

बिल्कुल ठीक है। चार-पांच दिन हुए उस मकान में एक साँप निकला था। 'आश्चर्य की बात है कि गांव में गए बिना ही लड़की को गाँव में साँप का कैसे पता चल गया?

लड़की ने यह भी बताया कि 'नारा में मरने के बाद मैं ढाडा ठुम्राणा गाँव में एक जाट के घर में लड़का बन कर उत्पन्न हुई थी। वहाँ मैं आठवीं कक्षा में पढ़ता था तो कुएं में छलांग मार कर मर गया।'

## दुर्घटनाएं और पूर्वजन्म की स्मृति—

लड़की की बातों से मेरी एक बात की पुष्टि होती है। मैंने देखा है कि पूर्वजन्म की बातें बताने वाले बच्चे प्रायः वही होते हैं जिनकी मृत्यु किसी दुर्घटना से हुई होती है। मैंने लड़की के वर्तमान पिता का नाम और पता मालूम कर लिया है। उनका नाम श्री चमनलाल रत्तू, आर. एम. एस. अपोज़िट रेलवे स्टेशन, जालन्धर है। क्या मैं आशा करूँ कि अध्यात्मवाद में रुचि रखने वाले सज्जन और विश्वविद्यालयों में मनोविज्ञान (पैरासाइकॉलोजी) के प्राध्यापक इस विषय की शोध करने का कष्ट करेंगे?

## (२) पुनर्जन्म का प्रत्यक्ष चमत्कार—

श्री बाबू शिवसहाय जी माथुर कायस्थ के पुत्र श्री बाबू रंगबहादुर जी की पत्नी श्रीमती रामप्यारीदेवी जी (मकान नं० ५६५ चीराखाना देहली) के तीन कन्याएं और एक पुत्र है। पुत्र से बड़ी और दो से छोटी तीसरी कन्या शान्तिदेवी ने, जब से वह बोलने लगी है तब ही से, थोड़ा-थोड़ा अव्यक्त सा अपना



शान्ति देवी

पूर्वजन्म का हाल बताना आरम्भ कर रखा था, किन्तु माता-पिता और विशेष करके उसके चाचा श्री बा० ईश्वरदयाल जी उसे "तू क्या अण्ड-बण्ड बकती रहती है?" आदि कह कर धमका दिया करते थे। किन्तु फिर भी इस कन्या की स्मरण-शक्ति दिनोंदिन बढ़ती ही गई और श्रावण १९९२ वि० में श्री मदनगोपाल के छत्ते में एक कथा में यह गई और वहां पर कथा बाँचने वाले पं० जी को देखकर सहसा यह कहने लगी कि—

"ये पं० जी तो हमारे यहां भी आया-जाया करते थे और मैं इन्हें सीधा (आटा, दाल आदि खाद्य पदार्थ) दिया करती थी; ये मथुरा के रहने वाले हैं।"

इस पर उन पं० जी से जब पूछा गया तो उन्होंने कन्या के कहने की पुष्टि की। कन्या ने अपने पूर्वपति के घर का सारा हाल बताया है। उसके बताये हुए पते पर ही यहां से पत्र डाला गया था और उसे पाकर उसके पूर्वपति देहली आये तथा सब बातों को जांच करके कन्या की बताई हुई बातों को सर्वथा सत्य बताया है। उसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

कन्या के पिता के रिश्तेदार श्री प्रो० किशनचन्द जी ने इस हाल को सुनकर कन्या से कई प्रश्न किये थे और उस के बताये पते पर ही उन्हों ने मथुरा में पत्र भी डाला था।

शान्तिदेवी पूर्वजन्म में मथुरा निवासी श्री पं० चतुर्भुज जी की पुत्री थी जो मथुरा के श्री पं० केदारनाथ जी चौबे को ब्याही गई थी। इसके दो कन्याएँ और एक पुत्र था। अन्तिम पुत्र की उत्पत्ति के समय यह रोगग्रस्त हो गई और पुत्रोत्पत्ति के १० दिन बाद कार्तिक कृ० २ सम्वत् १९८१ वि० को यह

मृत्यु को प्राप्त हो गई। मृत्यु समय के रोग, आभूषण और उस समय में की हुई पति द्वारा विशेष सेवा का भी हाल कहती है और वह सब ठीक-ठीक मिल गया है।

चौबों की गली में मकान और द्वारकाधीश के मन्दिर के सामने अपने पति की कपड़े की दुकान, वन्दर, कछुए, मन्दिर की ऊंचाई और चमेली (कमेली), चम्पा तथा फूल (फूलवती) उसकी सहेलियों के नाम भी ठीक-ठीक मिल गये हैं।

मैंने भी इस कन्या को गोद में ले कर कई प्रश्न किये, जिनको आज २०-११-३५ के प्रातः लगभग ९ बजे उसके पूर्व-पति श्री पं० केदारनाथ चौबे से (जो आज उसी समय मथुरा से फिर दुबारा आये हैं) पूछ कर सत्य पाया। आज उन्होंने अपने उसी पुत्र के चित्र को भी दिया है जिसे शान्ति ने बड़े ही प्यार से लेकर हृदय से लगा लिया।

गत १३ नवम्बर को पं० केदारनाथ जी मथुरा से देहली आये। साथ में उनका भाई भी था और वह पुत्र भी संग ही था।

भीड़ बहुत थी, किन्तु भीड़ में भी शान्ति ने अपने पति और देवर दोनों को देखकर तत्क्षण पहचान लिया और देवर का नाम तो प्रकट, किन्तु पति का नाम लज्जा से न लेकर चुपके से कान में—"केदारनाथ" कह दिया।

पुत्र को देखकर तो उसके साथ लिपट गई और बहुत देर तक फूट-फूट कर रोने लगी। इस रोने के दृश्य को देख कर उपस्थित जनता एवं माता-पिता आदि की भी आंखें डबडबा आई थीं। इसके बाद घर में से खिलौने लाकर अपने पुत्र को देकर बड़ी प्रसन्न हुई। चौबेजी ने उससे

एकान्त में कुछ निजी प्रश्न भी किये हैं जिनको वे सर्वथा स्वीकार करते हैं। चौबेजी १५ नवम्बर को मथुरा चले गये और आज प्रातः फिर आए हैं। १६ नवम्बर को चौबे जी की बहिन भी मेरठ से आई थी, और वह कई प्रश्नों का उत्तर पाकर कह गई कि 'जो कुछ भी यह कहती है सब ठीक है।' जो जेवर वह पहिने हुए थी और जेवरों को जिस पोले से संदूक में रखती थी, सब ठीक-ठीक बतलाया है। आज २० नवम्बर को मैंने उससे पूछा—

प्रश्न—तुम्हारे पति के कितने भाई थे ?

उत्तर—२ या ३ थे।

प्रश्न—क्या तुम्हारे घर में कोई बुड्ढा भी था ?

उत्तर—हाँ था।

प्रश्न—वह कौन था ?

उत्तर—मेरा ससुर था।

प्रश्न—तुम्हारे घर में रोटी कौन बनाता था ?

उत्तर—मैं बनाती थी।

प्रश्न—क्या कोई नौकर था ?

उत्तर—हाँ था, और वह दुकान पर भोजन ले जाया करता था।

प्रश्न—रुपये कितने और कहां रक्खे हैं ?

उत्तर—यह नहीं बताती।

प्रश्न—रुपये थोड़े हैं, या बहुत ?

उत्तर—बहुत से हैं।

प्रश्न—क्या हाँडी में रक्खे हैं ?

उत्तर—हां, पर नहीं बताऊंगी।

कई प्रश्नों के उत्तर में कहती है कि 'यह मैं मथुरा चल कर बताऊंगी।' धन भी यहां रखा है उसे भी वह मथुरा जाकर ही बताना चाहती है। इस कन्या के दर्शनों के लिए देहली नगर उसके घर पर १३ नवम्बर से उमड़ पड़ा है। हजारों नर-नारियों का सूर्योदय से लेकर रात्रि के १०-११ बजे तक जमघटा लगा रहता है। और मथुरा तो उसके दर्शनों के लिए तड़प ही रही है। मथुरा के पं० केदारनाथ जी के घर पर भी प्रजा का ठठ लगा हुआ है। आज चौबे केदारनाथ जी इसीलिए देहली आये हैं कि इसे एक बार मथुरा ले जाया जावे। उन्हें उस धन की भी आशा बेचैन किए हुए होगी ही।

जब इस कन्या से प्रश्न किए जाते हैं तब यह बहुत ही गम्भीर भाव से कुछ सोच कर उत्तर देती है। अपने पूर्व-पति और पुत्र के साथ अत्यन्त स्नेह करती है। उनकी पृथक्ता से बड़ी दुःखी होती है और रोती है। चौबे जी का भी उससे स्नेह है।

ईसाई और मुसलमान भाइयों को भी इस प्रत्यक्ष प्रमाण के आगे, पुनर्जन्म के दार्शनिक-वैज्ञानिक अकाट्य विषय के आगे अब अपने सब संशय जलाकर, काटकर सदा के लिए नत-मस्तक हो जाना चाहिए। जो भाई इस विषय में कोई भी जाँच करना चाहें, वे किसी मान्य प्रतिष्ठित सज्जन की अध्यक्षता में मथुरा में—

(१) श्री पं० बाबूराम केदारनाथ जी चौबे असकुण्डा बाजार, मथुरा के पते पर तथा देहली में—

(२) श्री बाबू रंगबहादुर ईश्वरदयाल जी माथुर

मकान नं० ५६२ चीराखाना, देहली के पते पर भली भांति पत्र-व्यवहार कर सकते हैं।

केदारनाथ जी चौबे के पिता का नाम श्री पं० महादेव जी चौबे है।

कन्या के कहने के अनुसार ही चौबे केदारनाथ जी के बायें कान के नीचे एक बड़ा सा मस्सा भी है, जिसे मैंने ठीक देखा है।

केदारनाथ जी का जन्म श्रावण शु० ६ सं० १९५२ में हुआ था। श्री केदारनाथ जी के कथनानुसार उनकी इसी पूर्वपत्नी का नाम लुगदीदेवी था।

यह देवी कार्तिक कृ० २, सं० १९८१ वि० में मरने के बाद कहीं अन्यत्र जन्म भी ले चुकी है किन्तु कहती है कि "मैं धुएं के रास्ते से जाकर एक अंधेरे से कमरे में बन्द कर दी गई थी। उसके बाद क्या हुआ, सो मुझे कुछ याद नहीं है।"

कन्या का वर्त्तमान जन्म मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी शनिवार तदनुसार ११ दिसम्बर सन् १९२३ को दोपहर के १ बजकर ४० मिनट पर देहली में हुआ था।

(आर्यमित्र' २८ नवम्बर, १९३५, श्री पं० सुरेन्द्र शर्मा गौर, काव्य-वेदतीर्थ द्वारा)

## (३) मुसलमान कसाई का पुनर्जन्म—

सम्भल (मुरादाबाद) से ४ मील की दूरी पर मौजा नयावली में किशन वल्द हीरा, कौम तगा के यहां एक लड़का, जिसकी उम्र इस वक्त करीब ६ वर्ष की बतलाई जाती है, अपने पुनर्जन्म की सही बात बतलाता है और कहता है कि मैं पिछले जन्म का सम्भल का रहने वाला मुसलमान कसाई हूँ।

६ वर्ष का समय हुआ, सम्भल मोहल्ला नाला का एक कसाई चुन्ना सम्भल से कंघियां खरीद कर बाहर गावों में जा कर बेचा करता था और दिन भर घूम-फिर कर रात को मौजा नयावली में तेजा शेख के यहां ठहरा करता था। एक दिन तेजा शेख ने मसूर की दाल में अंडे पकाये और चुन्ना कसाई को भी खाना खिलाया। इत्तिफाक से उसी रात चुन्ना बीमार होकर मर गया। कहा जाता है कि उन्हीं दिनों में किशन तगे के लड़का पैदा हुआ जो अपने को पिछले जन्म का चुन्ना कसाई बतलाता है और अपने तमाम रिश्तेदारों के और मकान के पते सही बतलाता है। अभी तक यह सम्भल नहीं लाया गया है। लोग उसको सम्भल लाकर उसके मकान और रिश्तेदारों से मिलाने का इरादा कर रहे हैं। अब तक जो कुछ बातें इस लड़के ने बतलाई हैं, वे ठीक कही जाती हैं।

('विजय' ९ मई, १९३८)

## (४) तीन वर्ष के बच्चे को पूर्वजन्म का स्मरण—

फतेहगढ़, ९ मई (१९५७) : कमालगंज थाने के कथ गांव का एक तीन साल का बच्चा आज कल हजारों लोगों के आकर्षण का केन्द्र बन रहा है।

बच्चा बतलाता है कि वह पूर्वजीवन में जहानगंज के राजपूत परिवार में रक्षपालसिंह के नाम से जाना जाता था। यह गांव बच्चे के मौजूदा गांव से कुछ मील की दूरी पर है।

बच्चा बताता है कि जब वह पूर्वजन्म में रक्षपालसिंह था तो आज से ४ साल पहले दो लाठियों से उसकी हत्या कर उसकी लाश गायब कर दी गयी थी।

बच्चा हत्याकारियों के नाम भी बताता है।

रक्षपालसिंह के नातेदार जब इस बच्चे से मिले तो बच्चे ने उनसे घरेलू मामलों के बारे में कुछ प्रश्न किये।

बच्चे ने शिकायत की कि अब उसे दूध और मक्खन नहीं मिलता है, जो पूर्वजन्म में मिला करता था। बच्चे का पिता एक गरीब काछी है। रक्षपालसिंह के नातेदारों ने काछी पिता को मासिक भत्ता देना शुरू कर दिया है ताकि बच्चा मनमाना खा-पी सके। ('स्वतन्त्र भारत' १०.५.१९५७)

## (५) मनुष्य या बन्दर—

लन्दन २५ नवम्बर (१९५२)। यहां पर ४२ वर्षीय एक युवक ने डाक्टरों को बताया कि वह रात में बन्दर के समान आचरण करने लगता है।

वह दिन में सामान्य रूप से व्यवहार करता है, किंतु रात को २ बजे के बाद से एक अदम्य और दुर्निवार आकांक्षा उसे जंगल की ओर जाने के लिए अभिभूत कर लेती है। इसके बाद वह सहसा ही अपने बिस्तरे से बन्दर की तरह दोनों हाथों और दोनों पैरों से उछल कर नीचे आ जाता है उसी तरह गुर्राता है आक्रमण करने की मूड (मनोदशा) में रहता है तथा बन्दर की तरह फुर्ती से पेड़ पर चढ़ जाता है। डा० इस मनुष्य की बीमारी का विश्लेषण कर रहे हैं तथा इस व्यक्ति के नाम को अप्रकट ही रख रहे हैं। यह व्यक्ति कुछ वर्ष पूर्व ही भारत से इंगलैंड लौटा है।

एक मनोवैज्ञानिक डा० ने उसकी स्थिति को ठीक बताया, किन्तु जब उसे हिप्नोटिज़्म के द्वारा सम्मोहित कर सुला दिया गया, तब वह बन्दरों और वनमानुषों की

बातें करने लगा। वह अपने बिस्तरे से उठ गया। बन्दर की तरह उसने अपनी पीठ खुजलाई और बाग की ओर दौड़ गया।

डाक्टरों के कथनानुसार यह व्यक्ति उषःकाल तक बन्दर की तरह रहता है उसके बाद जागने पर पुनः मनुष्य की भांति कार्य करता है।

('समता' १३ दिसम्बर, १९५२)

## (६) पुनर्जन्म का एक और उदाहरण—

फ़रीदपुर बंगाल का समाचार है कि वहां के एक होटल के मालिक का ७ साल का लड़का है, जिसका बयान है कि वह पिछले जन्म में एक मुसलमान ज़मींदार था, उसका नाम शेख नूरुद्दीन था जिसे मरे हुए १७ वर्ष बीत चुके हैं। लड़के के बयान पर शेख नूरुद्दीन की अतुल सम्पत्ति का, जो उसने जमीन में गाड़ रक्खी थी, पता लग गया है। इस बयान पर हिन्दू-मुस्लिम झगड़े का बड़ा भय पैदा हो गया है और अधिकारी सतर्क हो गए हैं। हिन्दुओं का दावा है कि लड़का कोई बड़ा सन्त महात्मा है और मुसलमानों का बयान है कि वह उनका बड़ा लीडर है। लड़के ने जिसका नाम 'सुन्दर' है शेख नूरुद्दीन के जीवन की विशेष-विशेष घटनाएं ब्यौरेवार बतलाईं और कहा कि नूरुद्दीन का देहान्त मलेरिया से हुआ था। इन बातों को सुनने के बाद लड़के के माता-पिता उसे उस गांव में ले गए, जहां शेख रहता था। लड़का वहां आज तक कभी नहीं गया था। वहां पहुँचते ही उसने शेख के खान्दान के तमाम लोगों और बहुत से गांववालों को पहचान लिया और उनके नाम लेकर उनसे बातचीत भी की। (आर्य-संसार)

(७) पूर्वजन्म की बातें बताने वाला बालक प्रकाशचन्द्र—

मथुरा। १७ जुलाई के हिन्दुस्तान में पहले जन्म की बातें बताने वाले एक बालक का खबर छपी है। उसका विस्तृत विवरण इस प्रकार है :—

यहां से २५ मील दूर कोसी कस्बे के जनरल मर्चेंट श्री भोलानाथ जैन के १० वर्षीय पुत्र निर्मल जैन का १०-११ वर्ष पूर्व चेचक की बीमारी में देहान्त हो गया था। उसने बाद में छाता के श्री ब्रजलाल वार्ष्णेय के घर जन्म लिया। उसे जब तब अपने पहले जन्म की बातें याद आने लगीं। वह कोसी जाना चाहता था। पर उसके नए पिता उसे जाने नहीं देते थे। अन्त में वे उसे एक बार कोसी ले गए। वहां उसने अपने पूर्वजन्म के घर, पड़ोसी और अपने पूर्वजन्म के पिता श्री भोलानाथ जैन की दुकान को भी पहचाना। उस समय श्री भोलानाथ जैन सपरिवार बाहर गए हुए थे। लौटने पर कोसी कलां वालों ने उन्हें इसकी जानकारी दी। श्री भोलानाथ जैन ३० जून को अपनी बड़ी लड़की तारादेवी के साथ छाता गए। लड़के ने उन्हें तुरन्त पहचान लिया और वह फूट-फूट कर रोने लगा, श्री जैन तथा उनकी पुत्री भी। इस कारुणिक दृश्य को छाता के हजारों व्यक्तियों ने देखा। अनन्तर श्री जैन ने श्री वार्ष्णेय से विनय की कि वे बच्चे को उनके साथ कोसी जाने दें, परन्तु वे राजी नहीं हुए। पर बच्चे के बार-बार आग्रह करने पर वे १८ जुलाई को प्रकाशचन्द्र वार्ष्णेय को लेकर कोसी पहुँचे। वहां लगभग १० हजार की भीड़ ने बच्चे को देखा तथा उसकी बातें सुनीं।

श्री भोलानाथ जैन ने श्री ब्रजलाल वार्ष्णेय से कहा है कि वे बच्चे को पढ़ावें और पढ़ाई का खर्च श्री जैन वहन

करेंगे। पर श्री वार्ष्णेय अपनी गिरी अवस्था के बावजूद सहायता के लिये लालायित नहीं है।

सबसे बड़ी आश्चर्य की बात यह है कि बालक प्रकाशचन्द्र की तथा उसके पूर्वजन्म की बड़ी बहन की शकलें बिल्कुल मिलती हैं।

('हिन्दुस्तान', २१ जुलाई १९६१)

## (८) युवती द्वारा पूर्वजन्म की घटनाओं का विवरण—

आगरा (डाक से)। आगरा की तहसील एत्मादपुर से एक युवती द्वारा पूर्वजन्म की सम्पूर्ण घटनाओं का सजीव सच्चा वर्णन किया जाने का दिलचस्प समाचार प्राप्त हुआ है। समाचार में बताया गया है कि एत्मादपुर तहसील के एक गांव 'थलू की गढ़ी' के ब्राह्मण-परिवार में उत्पन्न एक लड़की का विवाह इसी तहसील के एक अन्य गांव उजरई में पंडित चेतराम के पुत्र श्री हीरालाल के साथ कर दिया गया था। यह लड़की सन् १९४२ ई० में अपने दोवर्षीय पुत्र को छोड़कर रुग्णावस्था में मर गई। इस लड़की ने मृत्यु के ही दिन और उसी समय एत्मादपुर के एक गड़रिया परिवार में जन्म ले लिया। बड़ी होने पर उसका विवाह गत वर्ष फिरोजाबाद में कर दिया गया।

इस वर्ष इस लड़की के एक परिवारीय भाई का विवाह थलूगढ़ी के एक गडरिया परिवार की लड़की के साथ हुआ। जब इस लड़की की नई भाभी ने घर आकर उसके पैर छूने चाहे, तो लड़की को अचानक अपने पूर्वजन्म का स्मरण हो आया। उसने अपने पैरों को अलग करते हुए भाभी से कहा कि 'मैं भी थलूगढ़ी की रहने वाली पंडितों की लड़की

हूँ। इसलिए तू तो मेरी बहन लगती है।' लड़की की इस प्रकार की बातें सुनकर परिवार वाले चकित रह गए और विभिन्न प्रकार की चर्चाएं करने लगे। इसी बीच नई वधू का भाई बहिन को लेने आया। उसे भी लड़की ने तुरन्त पहचान लिया और अपनी पुरानी मां तथा घरवालों के विषय में बहुत सी सत्य बातें बताईं। लड़की ने वधू की विदाई के समय अपने पूर्वजन्म के मां-बाप के यहां जाने का आग्रह किया। परन्तु समझा-बुझा कर उसे रोक लिया गया। गत ५ मार्च को उसकी पुरानी मां और बड़ा भाई चुपचाप लड़की से मिलने आए। वे बहुत से अनजान आदमियों और औरतों के साथ लड़की के घर पहुँचे। लड़की ने उन्हें भी तुरन्त पहचान लिया और नाम तक बता दिए। लड़की ने अपनी मां और भाई को बहुत सी घरेलू गुप्त बातें बताईं, जो किसी को ज्ञात नहीं थीं। उसने अपने पूर्वपति से उत्पन्न पुत्र, पूर्वपति तथा उनके परिवार के विषय में भी बहुत सी सच्ची बातें बताई हैं। पूर्ण विश्वास हो जाने पर लड़की की पूर्वजन्म की मां और भाई लड़की को अपने घर ले गए हैं।

पुनर्जन्म के हिन्दु-विश्वास को पुष्ट करने वाली इस ताजी घटना की आगरा ज़िले व नगर में अत्यधिक चर्चा है।

## (६) दूसरी शान्तिदेवी, पुनर्जन्म की अद्भुत कहानी—

दिल्ली की ९ वर्ष की बालिका शान्तिदेवी की पुनर्जन्म की घटना को प्रकाश में आये अभी बहुत दिन नहीं हुए। हाल ही में फ़तेहगड़ की एक अहीर लड़की के पुनर्जन्म की बातें भी इसी तरह प्रकाश में आई हैं। सङ्गतरोड, फतेहगढ़ के श्री उमेशचन्द्र माथुर ने 'लीडर' में लिखा है—

यह लड़की चार वर्ष से भी कम उम्र की है। उसका नाम भगवती है। जब उसके वर्तमान पिता ने उसे इस नाम से पुकारा, तब उसने इस नाम से पुकारे जाने से इनकार कर दिया। उसने अपने पिता से कहा कि मेरा नाम शान्तिदेवी है और भोलापुर में मेरा ब्याह हुआ था। वहां मैंने अपनी मृत्यु के समय अपनें दो लड़के और एक लड़की छोड़ी है। यह गांव फ़तेहपुर के पास ही है।

लड़की उपर्युक्त गांव ले जायी गयी, जहां उसने अपना पुराना मकान पहचान लिया और बड़े हर्ष के साथ वह उसमें घुस गई। उसने अपनी पहली लड़की गंगादेवी को बुलाया। गङ्गादेवी आजकल फतेहगढ़ गर्ल्ज स्कूल में अध्यापिका है। रामकृष्ण (उम्र ३३ वर्ष) और पत्तूलाल नाम के दो व्यक्ति बुलाये गये। यह देखकर लोगों को बड़ा ताज्जुब हुआ कि उस लड़की ने दोनों ही को पहचान लिया और कहा कि ये मेरे लड़के हैं। उसकी बातों की परीक्षा के लिए और भी कितनें ही प्रश्न किये गये। उन सब प्रश्नों का उसने सन्तोष-जनक उत्तर दिया। उसनें अपने रिश्तेदारों के भी नाम बताये और पड़ोसियों के मकान भी ठीक-ठीक बता दिये।

लड़की अपने वर्तमान माता-पिता के साथ रहने से इन्कार करती है। कभी-कभी उसे अपने पूर्वजन्म की बड़ी याद आ जाती है और एक अहीर (नीची जाति) के साथ रहनें में बड़ा दुःख प्रकट करती है। वह अक्सर अपने लड़कों और लड़की को देखने के लिए इतनी अधीर हो जाती है कि ठीक रास्ते से भोलापुर की ओर दौड़ने लगती है।

४ वर्ष ६ महीने पहले एक माता के रूप में ६० वर्ष की उम्र में जैसे उसका देहान्त हुआ और अब से ३

वर्ष ८ महीने पहले वह अहीर के घर पैदा हुई, इसी बीच में वह १० महीने कहां रही ?, यह एक प्रश्न है जो बड़े से बड़े आदमियों को चक्कर में डाल देता है ।

(विश्वमित्र (साप्ताहिक) ३१.३.१९.३६)

## (१०) इटावा का रईस काछी के घर जन्मा—

भारत की राजधानी देहली की बालिका शान्तिदेवी के पुनर्जन्म की कथाएं पत्रों में प्रकाशित होने से हिन्दुओं के पुनर्जन्म-सिद्धान्त की तरफ जनता का ध्यान आकृष्ट हो गया है। ऐसी ही एक और सत्यकथा मैं पाठकों की भेंट करता हूँ। जिला इटावा में ताखे-वाले रईस चौधरी बदनसिंह प्रसिद्ध व्यक्ति थे। यह कथा उनके ही पुनर्जन्म की है।

भरथना टाउन स्कूल का विद्यार्थी प्रेमशंकर माहातुआ ग्राम का रहने वाला है। उसने अपने निकटवर्ती ग्राम नरनीनंगलाःबेनी का पुनर्जन्म का किस्सा अपने सहपाठियों को सुनाया। कुछ तो सुनकर विस्मित हुए और कुछ उस कथा को एक कपोल-कल्पना समझ कर रह गये। जिन विद्यार्थियों को विस्मय हुआ वे इस की सत्यता जानने के लिए उस ग्राम तक पहुँचने को छटपटाने लगे। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये मेरे भाई चन्द्रशेखर दुबे ने मुझे उस ग्राम तक चलने को कटिबद्ध किया। बड़े दिन की छुट्टियों में हम उक्त ग्राम में पहुँचे। वहां जाकर एक ५, ६ वर्ष का बच्चा देखा जिसके एक हाथ में रोटी का टुकड़ा है और दो कमीजें आधी मैली-कुचैली पहने है। जब ग्रामीण भाइयों को इस बात का ज्ञान हुआ कि हम लोग ब्राह्मण हैं तो झट से एक चारपाई ले आये और सबने मिलकर पालागन (प्रणाम) किया।

बच्चा छोटा था और हम लोगों को उसने कभी देखा नहीं था। इस कारण वह कुछ सहम गया। हम चारपाई पर बैठे थे और बच्चा पास में खड़ा था। चारों ओर ग्रामीण भाई-कुटुम्बी आ गये और हमने उससे निम्न प्रश्नोत्तर किये :—

प्रश्न—तुम्हारी मौत कैसे हुई ?

उत्तर—दोपहर को हम इटावा वाली हवेली में मर गये थे और दो बार हमने अपने दद्दा चौ० बदनसिंह जी ताखेवालों के जन्म लिया।

प्रश्न—तुम्हारी शादी कहां हुई थी ?

उत्तर—मेरी शादी करहल (ज़िला मैनपुरी) में और मेरे बदन दद्दा की शादी चौविया में हुई थी।

प्रश्न—दहेज में क्या-क्या मिला था ?

उत्तर—मेरे दद्दा की शादी में एक हथनी और मेरी शादी में एक घोड़ी मिली थी।

प्रश्न—तुम्हारी घोड़ी का रंग कैसा था ?

उत्तर—सब्जा।

प्रश्न क्या तुम चौधरानी जी को देखना चाहते हो ?

उत्तर—हां।

प्रश्न—१०, २० औरतों में पहचान लोगे ?

उत्तर—मैं १०० औरतों में पहचान सकता हूँ।

प्रश्न—तुम्हारे पुराने घर का क्या पता निशान है ?

उत्तर—हमारा घर पक्का लाल ईंटों का है। गंगा जी की ओर दरवाजा है। घर के सामने जामुन तथा कैथा का पेड़ है और हवेली के पीछे लाला का मकान है।

प्रश्न—तुम्हारी जमींदारी जब मोल ली गई थी तब कर्ज कहां से आया था ?

उत्तर—कुड़रिया से।

प्रश्न—किसके यहां से ?

उत्तर—महिन्दरसिंह के यहां से।

इस प्रकार कई प्रकार के प्रश्नोत्तर हुए। उनमें से कई के उत्तर दिये और कई प्रश्नों को सुनकर भाग जाता था। तब उसके ही ग्राम के लोग उसे "लड़ुआ" "लड़ुआ" "लल्ला" "लल्ला" कहकर पकड़ लेते थे। मैं भी जब जान लेता था कि यह भागने वाला है तो मैं एक पैसा हाथ पर रख देता था। प्रश्नोत्तर के उपरान्त इसकी दादी ने कथा यूं आरम्भ की :—

"बेटा, हम तो काछी हैं। हमारे घर ऐसा खाने-पीने को कहां है जो इस जमींदार के लड़के की खातिर हो। जब बेटा, बहू (लड़के की मां) मारती है तो यह रूठ कर यह कह कर चल देता है कि 'हम अपने घर ताखा जाते हैं, हम तुम्हारे घर नहीं रहेंगे।' यह किसी की जूठी चीज़ नहीं खाता-पीता है।"

प्रश्न—दादी, अब तुमने इसका नाम क्या रक्खा है ?

उत्तर—बेटा, अब इसका नाम मातादीन है और सब लोग इसको मनोला-मनोला कहते हैं।

प्रश्न—क्या चौ० बदनसिंह जी को इस बात का पता चल गया है ?

उत्तर—हां बेटा, अभी जो इटावे में नुमायश हुई थी उस पर चौ० बदनसिंह ने मनोला और उसके बाप भूरे

को बुलाया। वहां जाकर चौ० साहब ने उससे कई तरह के प्रश्न किये, जिनका उत्तर इस ५-६ वर्ष के बालक नें यथाशक्ति दिया। चौ० साहब खूब रोये। फिर परीक्षा-हेतु स्वर्गीय बदनसिंह जी के एक मित्र को बुलाया जो कि इनके साथ कभी पढ़ चुका था। उसको देखकर मातादीन ने उस मित्र को पहचान लिया। फिर चौ० साहब ने इसके खाने हेतु बाजार से पूड़ी और मिठाई मंगवाई, जिस पर बच्चे नें पूड़ी छुई तक नहीं और मिठाई थोड़ी-सी खा ली। फिर चौ० साहब उसे मोटर में बैठा कर स्टेशन पर गये और घर तक का रेलभाड़ा दिया।

दूसरे एक दिन चौ० बदनसिंह के एक चचेरे भाई चौ० विजयसिंह जी स्वयं इसी काछी के घर अपने ८-९ मित्रों समेत पहुँचे थे। उस समय इस छोटे से बच्चे ने उन ८-९ मित्रों के साथ केवल अपने भाई चौ० बदनसिंह जी के पैर छू लिये और दोनों खूब गले मिलकर रोये। चलते समय भूरे काछी को चौ० साहब एक कम्बल और एक रूई की डबल ब्रेस्ट प्रदान करके अपने घर चले गये।

('अर्जुन' ९ जनवरी, १९३६, ले०—विष्णु, अन्नपूर्णाकुटी, भरथना)

## (११) देहरादून में संस्कारी आत्मा—

हमें २१ ता० की शाम को खबर मिली कि सेठ रामकिशोर के यहां एक पौने तीन साल की कन्या पूर्वजन्म की बातें बताती है। हम अगले ही दिन प्रातःकाल उनके घर पहुँचे और सेठ तथा सेठानी जी से तरह-तरह की पूछताछ की, और कन्या की गतिविधि को भी लगभग आध घण्टे तक ध्यानपूर्वक देखा। उससे हम जिस परिणाम पर पहुँचे, उसे पाठकों की जानकारी के लिए यहां उल्लिखित किया

जाता है। कहानी सचमुच बड़ी मनोरञ्जक तो है ही, परन्तु साथ ही पूर्वजन्म तथा पुनर्जन्म के सिद्धान्त को भी विशद रूप से परिपुष्ट करने वाली है।

इस कन्या का जन्म सन् १९४९ की अनन्तचौदस को हुआ। अर्थात्, अब इसकी उम्र लगभग २ वर्ष १० मास की है। इसकी माता 'महिला-आश्रम' की एक देवी शान्ता है, जोकि पहले कन्या-गुरुकुल में भी अध्यापिका रह चुकी है। गत नवम्बर-दिसम्बर की बात है कि कन्या ने माता से कोई चीज़ मांगी। माता ने उत्तर दिया, बेटी! यह चीज़ मेरे पास नहीं। कन्या ने तुरन्त कहा, मेरी कोठी में है। यह पूर्वजन्म की बातों की शुरुआत थी। माता हँस दी और कोई विशेष ध्यान नहीं दिया।

अब लीची के दिनों में जब माता ने इसे लीची लाकर दीं, तो बोली—'ये लीची खराब हैं। मेरी कोठी की लीची बहुत अच्छी हैं, और बहुत सारी हैं। वहां लीची तो बहुत हैं पर आम थोड़े हैं।' इस पर माता की समझ में नहीं आया, यह क्या कह रही है, कौन सी इसकी कोठी है? और हँसी में ही बात टाल दी।

सेठानी सत्यवती जी महिला-आश्रम की प्रबन्धकारिणी सभा की प्रधाना हैं। एक दिन वे आश्रम पहुँचीं, तो लड़की ने कहा 'यह मेरी मां है।' सेठानी ने कोई ध्यान नहीं दिया। आश्रमवासियों ने चर्चा की कि कहीं मेधा ने ही तो जन्म नहीं लिया।

मेधा सेठानी की बड़ी लड़की थी। धार्मिक वृत्ति की थी। सामाजिक सेवा-कार्यों में विशेष लगन थी और महादेवी

कन्या पाठशाला में अध्यापिका थी। वह अत्यन्त रुग्ण हो गयी। रोग असाध्य-सा बन गया। चोले को छोड़ने की इच्छा जाग उठी। आत्मिक शान्ति के लिए विशेष यज्ञ कराया। पूर्णाहुति अपने सामने कराई। प्रभु से प्रार्थना कराई गई और तीसरे या चौथे दिन वह काल-कवलित नश्वर देह को त्याग कर स्वर्ग सिधार गई। वह दिन ३१ मार्च सन् १९४५ का था।

कहानी मेधा की छोटी वहिन तक पहुँची, जो कि संप्रति कई बच्चों की माता है। उसने ऐसे संस्कारी आत्मा को लाकर घर दिखाने की इच्छा प्रकट की और महिला-आश्रम पहुँची। वहां पहुँचने पर नन्ही कन्या ने कहा, 'यह मेरी बहिन है।'

मेधा की बहिन उसे मोटर में बैठा कर घर ला रही थी कि मार्ग में सेठ रामकिशोर जी मिल गए। कन्या ने कहा 'ये मेरे पिता हैं।'

घर पहुँची तो मेधा वाले कमरे में जाकर कहा 'यह मेरा कमरा है', और इसी प्रकार कई दूसरी चीज़ों के बारे में भी कहा 'ये मेरी हैं।' नाम पूछने पर कहा 'मैं मन्नू हूँ।' मन्नू मेधा का प्यार का नाम माता-पिता आदि ने रख छोड़ा था, और अन्त समय तक इसी नाम से उसे पुकारा जाता रहा था।

आंखों और मुखाकृति को देखने से ऐसी भान पड़ती है जैसे कि कोई समझदार सयानी हो। उसने हमारे सामने ठीक ढंग से पद्मासन लगाया और देर तक लगाए रखा। आंखें मूंद कर ध्यान-मग्न हुई, गुनगुनाते हुए

मंत्रपाठ किया और अन्त में सही तौर पर हाथ जोड़, शीश झुका परमात्मा को नमस्कार किया। फिर कुछ उच्च स्वर से 'वाक्-वाक्', 'हिरण्यगर्भः', 'य आत्मदा बलदा' आदि कुछ मंत्र बोले। कहीं-कहीं स्खलन ज़रूर था, परन्तु फिर भी मन्त्रपाठ सयानों जैसा और शुद्ध था। फिर उसने 'झण्डा ऊँचा रहे हमारा' यह भी बोला। ये सब कर्म मेधा किया करती थी।

घर में विद्यमान उन पुराने चित्रों को भी पहिचाना और बताया कौन किसका है, जोकि मेधा के समय में थे।

जब उससे पूछा तू कहां गयी थी? तो उत्तर दिया 'भगवान् के पास।' क्यों गई थी? पूछने पर हाथ लगा कर कहा, 'यहां से यहां तक (यानी गले से लेकर छाती तक) दर्द बहुत रहती थी।' वस्तुतः, मेधा इसी बीमारी से मरी थी।

कन्या की गति-विधि पर विशेष गौर करने की ज़रूरत है। यह घटना कोई आश्चर्य नहीं, आश्चर्य केवल इतना है कि संयोगवश हम ऐसी घटनाओं को बहुत कम देख पाते हैं। वैसे ऐसी घटनाएं ऋषि-मुनियों के सत्य-सिद्धान्त पर ही आश्रित हैं। जैसा-जैसा आत्मा उच्च होता है, वैसा-वैसा वह देह त्यागने के पश्चात् चिरकाल तक महदाकाश में स्वन्त्रतापूर्वक विचरता है, परमात्मा में रमण करता है, और फिर, स्वतंत्रता की अवधि समाप्त हो जाने पर मातृगर्भ में बंध जाता है। सो, मेधा की आत्मा यदि ३१ मार्च सन् ४५ से लेकर जनवरी ४९ तक स्वच्छन्द विहार करती रही, तो कोई आश्चर्य की बात नहीं।

—चन्द्रमणि

(दून समाचार, २६ जुलाई १९५२)

## (१२) पुरानी बातें बतलाने वाला बच्चा—

कांगड़ा, १८ अगस्त १९६१। यहां से एक मील दूर पुराना कांगड़ा में एक ऐसे बच्चे ने जन्म लिया है जो कि अपने पूर्वजन्म की बातें बतलाता है। वह अपना पूर्वजन्म का नाम रत्नलाल भोजकी बतलाता है, तथा अपना घर, नौकर का नाम, पुत्र, पत्नी, माता, सब को पहचानता है। स्मरण रहे कि जब रत्नलाल जी की मृत्यु हुई थी, उसी दिन उस बच्चे ने जन्म लिया था। इस समय बच्चे की आयु ४ वर्ष है। सैंकड़ों लोग उस बच्चे को देखने के लिये पुराना कांगड़ा जाते हैं। ('वीर प्रताप' १९ अगस्त, १९६१)

## (१३) पूर्वजन्म का हाल बताने वाली कन्या—

अलीगढ़, १३ अगस्त १९६१। वेशपुर जौफरी निवासी ठा० राजवीरसिंह की १२ वर्षीय कन्या ने अपने पूर्वजन्म का इतिहास बता कर जनता को आश्चर्य में डाल दिया है।

कन्या अपने पूर्व-जन्म का नाम दुलाई तथा जाति वैश्य बताती है। वह एरवाटी नामक ग्राम में रहती थी। साथ ही उसके दो पुत्र क्रमशः पन्ना, विन्नासी एवं दो पुत्रियां अंगूरी व बालकिशनी थीं। उसकी पुत्रवधुओं के नाम चन्द्रवती व चन्द्रकला थे। वह उनके पास जाने का आग्रह कर रही है।

कन्या के पूर्व-पति भी उसकी मृत्यु के समय जीवित थे। संभवतः, वे अब भी हों। ग्राम के कुछ लोग उसके पूर्व-जन्म के घर का पता लगाने गये हुए हैं।

('वीर प्रताप' १९ अगस्त, १९६१)

## (१४) रेलगाड़ी में एक लड़की से पूर्वजन्म के मामा की भेंट—

**लड़का बहिन की मौत सुनकर रो पड़ा**

कपूरथला की सावित्री नामक एक लड़की नौशेरा से अटक नदी पर अमावास्या का स्नान करने के लिये अपने पति के साथ जा रही थी कि रेलगाड़ी में एक लड़का उसके पास आकर बैठ गया और उसका नाम लेकर पूछा—'तू कपूरथला जा रही है ?' लड़की यह सुनकर हैरान रह गई। लड़का कहने लगा कि 'मैं तुम्हारा मामा हूँ, मेरा नाम मिलखराज था।' लड़की कहने लगी, 'आज से ११ वर्ष पहले उसका देहान्त हो चुका है।' इस पर लड़का कहने लगा कि 'मैं सरगोधा में पैदा हुआ हूँ; इस समय मेरा नाम रामस्वरूप है।' अपनी बड़ी बहिन की मृत्यु का सम्वाद सुन कर वह लड़का जार-जार रोने लगा।

('जागृति' फर्वरी, १९३६)

## (१५) एक पंचवर्षीय विचित्र बालक—

**लड़का संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी और गणित में निपुण है और चित्र भी बना लेता है।**

नई दिल्ली, १४ नवम्बर सन् १९५१। अलीगढ़ के एक पांच-वर्षीय अनुपम प्रतिभावान् लड़के नरेशकुमार ने आज राष्ट्रपति-भवन में राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद से भेंट की। यह पांच वर्ष का लड़का संस्कृत, हिन्दी और अंग्रेजी की पुस्तकें और समाचार-पत्र बहुत अच्छी तरह पढ़ सकता है। ज्योमेटरी और अलजबरा के प्रश्न बड़ी आसानी से निकाल लेता है। इस बालक के कमाल देखकर राष्ट्रपति और दूसरे विद्वान्

चकित रह गये। इतना ही नहीं, यह लड़का पशु-पक्षियों के अतीव सुन्दर चित्र भी बना लेता है। उत्तर प्रदेश के शिक्षा-निर्देशक ने सुझाव दिया है कि इस लड़के को इलाहाबाद के मनोविज्ञान-विभाग के कार्यालय में भेजा जाय और वहां इस के गुणों की भली-भांति जाँच की जाय। उत्तर प्रदेश सरकार ने लड़के के पिता को विश्वास दिलाया है कि इस लड़के की सारी शिक्षा का व्यय राज्य वहन करेगा। यह लड़का अभी तक किसी स्कूल में भरती नहीं हुआ। यह लड़का प्रधानमंत्री और उत्तर प्रदेश के राज्यपाल से मिल चुका है। ("प्रताप" (उर्दू) १६ नवम्बर १९५१)

## (१६) पूर्वजन्म का चित्र देख कर सब घटनाएं स्मरण हो आई—

एक अंग्रेज स्त्री लण्डन के एक प्रसिद्ध समाचार-पत्र में अपना वृत्तान्त इस प्रकार लिखती है :—

मैं ग्यारहवर्षीय लड़की थी। मैं क्रिस्मस बिताने के लिए अपने भाई के साथ एमोथ में अपने नातेदारी के यहाँ गई। हमारी गाड़ी एक स्थान पर कुछ रुकी और यह देखकर मेरे आश्चर्य की कोई सीमा न रही कि उस स्थान से और विशेषतः, उस के सामने के पहाड़ी मैदान से मैं भली भांति परिचित हूँ। मैंने अपने भाई से कहा कि जब 'मैं बहुत छोटी आयु की थी तो यहां से निकट ही अपने घर में रहा करती थी। मुझे अच्छी तरह याद है कि इस मैदान में दो वयस्क व्यक्तियों के साथ इस पहाड़ी पथ से नीचे की ओर भाग रही थी। वे दोनों मेरे हाथ पकड़े हुए थे। इतने में हम तीनों गिर पड़े और मेरी टाँग में भारी चोट आई।'

मैं इतना ही कह पाई थी कि मेरी माता, जो यात्रा में मेरे साथ थीं, मुझे कोसने लगीं कि 'क्यों सफेद झूठ बोल रही हो?' मैं यह भी बता देना चाहती हूँ कि इस के पहले मैं उस क्षेत्र में कभी नहीं गई थी। निश्चय ही इस जन्म में मैं वहाँ कभी नहीं रही। परन्तु मुझे इस बात पर आग्रह था कि मैं वहां अवश्य रही हूँ यद्यपि इस जन्म में नहीं। और मैंने कहा कि "जब मैं पहाड़ी पर से नीचे को ओर दौड़ी थी तो उस समय मैंने सफ़ेद फ़्राक पहन रखा था। उस पर छोटे-छोटे सफ़ेद हरे पत्ते काढ़े हुए थे। वह फ़्राक मेरे टखनों तक पहुँचता था। और जो लोग मेरे हाथ थामे चल रहे थे नीले और सफ़ेद रंग के फ़्राक पहनें हुए थे। उस समय मेरा नाम मार्गरेट था।'

मेरा इतना कह देना मेरी माता के लिए पर्याप्त था। मुझे झट चेतावनी दी गई कि गन्तव्य स्थान पर पहुँचने तक मुंह बंद रक्खो! तत्पश्चात् मुझे भली-भाँति विदित हो गया कि मैं इस पहाड़ी से कदापि दौड़ नहीं सकती। परन्तु यह स्मृति अब तक मेरे मस्तिष्क में ऐसी स्पष्ट है जैसे बचपन की कोई सच्ची स्मृति हो। इसका परिणाम सत्तर वर्ष बाद प्रकट हुआ।

मैं अपने वर्तमान जन्म में अपने स्वामी के साथ मोटर में जा रही थी। एक स्थान पर पहुँच कर हम नें मोटर का टायर बदला और एक मकान में चले गये। वहां एक युवती हमारे लिए चाय लाई। जिस समय हम चाय की प्रतीक्षा कर रहे थे, तो मुझे दर्पण पर एक चित्र दीख पड़ा। मुझे यह देख कर भारी आश्चर्य हुआ कि वह मेरा ही चित्र था और उस समय जबकि मैं पांच वर्ष की बच्ची थी और पहाड़ी

पर से भाग रही थी। मुखाकृति साफ़ और गम्भीर थी! मैंने सफ़ेद कपड़े पहन रक्खे थे। उस पर हरे रंग की गुलकारी की हुई थी। मैंने सहसा कहा—"हाँ यह तो मैं ही हूँ।" वह युवती और मेरा स्वामी दोनों हँस पड़े। वह स्त्री बोली, "यह बच्चा तो आज से बरसों पहले का मर चुका है, और मेरा अनुमान है कि जब तुम छोटी आयु की होगी तो तुम्हारी आकृति इस के सदृश होगी।" मेरे स्वामी भी उस से सहमत हो गये। चित्र में मेरी रुचि देख उस स्त्री ने अपनी माता को बुलाया ताकि वह मुझे इस बच्चे के बारे में कहानी सुनाए और उसकी माँ ने यों कहना आरंभ किया—

"उस का नाम मार्गरेट था। वह एक किसान की इकलौती बेटी थी। मेरी माता उस किसान के डेयरी फ़ार्म में नौकर थी। जब मार्गरेट की अवस्था पांच वर्ष की थी तो एक दिन ऐसा संयोग हुआ कि मार्गरेट, मेरी माता और डेयरी फार्म की एक और नौकरानी के साथ पहाड़ी पर से नीचे की ओर दौड़ रही है। मेरी माता की साथी स्त्री का पांव खरगोश के बिल में जा पड़ा। क्योंकि इस स्त्री ने और मेरी माता ने मार्गरेट के दोनों हाथ थाम रक्खे थे इस लिए तीनों धरती पर गिर पड़ीं। परन्तु दुर्भाग्य से मार्गरेट दोनों के नीचे आ गई और दुर्घटना से उसकी टाँग बुरी तरह टूट गई।" वह बला की लड़की थी। मरने से पहले उस ने कहा, 'मैं कदापि न मरूँगी।' और इसके साथ ही उसकी आत्मा पांच-भौतिक शरीर को छोड़ गई। मैं नहीं जानती कि यह डेयरी फ़ार्म कहां अवस्थित है।

—("प्रकाश" लाहौर, ९ मार्गशीर्ष संवत् १९९२)

(१७) लखनऊ, २२ जनवरी ११३५। लखनऊ विश्व-विद्यालय के एक प्राध्यापक की चार वर्ष की पुत्री अपने पूर्व-जन्म की बातें बताती है। उसकी स्मृति मनोविज्ञानियों के लिए विस्मय का कारण बनी हुई है। प्राध्यापक का नाम है पण्डित गिरीशचन्द्र अवस्थी। वे हिन्दी पढ़ाते हैं। वे लड़की को मुन्नी बोलते हैं। यद्यपि वह चार वर्ष की है, परन्तु अतीव गम्भीर दिखाई देती है। खाना पकाने के काम में बहुत निपुण है। एक दिन वह अपनी मां के साथ रसोई में बैठी खाना बना रही थी कि अचानक बोल उठी—"हमारे यहां यह चीज़ और तरह पकाई जाती थी।" यह सुन उसकी मां चकित रह गई। वह पूछने लगी—"हमारे यहाँ से तुम्हारा क्या तात्पर्य है?" लड़की ने कहा कि "बनारस में हमारा मकान था। वह दोतल्ला और बड़ा सुखदायक था।"

मां ने पहले तो उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया, परन्तु कुछ दिन बीत जाने पर मुन्नी ने गम्भीरता से कहा—

"मैं अपने बेटे बलार को देखना चाहती हूँ। वह इस समय बनारस में है।" इसके पहले कि उस का पिता या माता उस से कोई प्रश्न करें, वह बोली—"पूर्वजन्म में मेरे पाँच बच्चे थे तीन लड़के और दो लड़कियाँ। एक का नाम मोतीलाल, दूसरे का नाम ज्योतिलाल, और तीसरे का नाम बलार था। लड़कियों का नाम लीलावती और विद्यावती था। जब मेरी मृत्यु हुई तो बलार छोटा सा बच्चा था। यद्यपि इस समय मैं अपने वर्तमान जीवन पर सन्तुष्ट हूँ परन्तु कभी-कभी मेरे मन में प्रबल इच्छा होती है कि मैं बनारस जाऊँ और बलार को गोद में ले लूं।"

लड़की की बातों की पुष्टि उन मन्दिरों और लड़की के पहले घर के ब्योरे से होती है जो यह लड़की, यद्यपि वह कभी बनारस नहीं गई, बताती है। इसके पिता को अब पूरा विश्वास हो गया है कि लड़की सच कहती है। गोण्डा का एक तअल्लकादार इस यत्न में है कि बनारस में लड़की के पहले नातेदारों की तलाश करे और उस के कथन की सत्यता की परीक्षा करे।

(१८) शाहजहांपुर, १७ मई १९५७। मुहल्ला अजीज़ गंज के एक व्यक्ति रामचरण कोरी का लड़का पराग अपने पूर्वजन्म की बातें बता कर लोगों को आश्चर्य में डाल रहा है। पराग का कहना है कि वह पूर्वजन्म में गंगाराम चक्की वाला था और नगर का एक प्रतिष्ठित व्यक्ति था। वह कोतवाली के पीछे रहा करता था। नन्हे पराग को जब कोतवाली के निकट ले जाया गया तो वह झट श्री गंगाराम के मकान में प्रविष्ट हो गया। उस ने घर के संबंध में बहुत-सी गुप्त बातें बताईं। उसने अपने पूर्वजन्म की बहुत-सी बातें बता कर लोगों को चकित कर दिया। ऐसी ही एक घटना 'बड़ा गांव' नामक स्थान में हुई है। वहां के एक कायस्थ घराने की सातवर्षीय लड़की अपना पूर्वजन्म का घर तहसील पोटियाँ में बताती है। वह कहती है कि वह वहाँ के माधोराम वैश्य की पत्नी थी जो सात वर्ष पहले अपने घर-वालों के साथ तीर्थ-यात्रा करने गई थी और रास्ते में एक दुर्घटना से उसकी मृत्यु हो गई थी। (उर्दू 'प्रताप')

(१९) कनौज के पण्डित महेश्वरप्रसाद भट्टाचार्य को पूर्वजन्म की घटनाएँ इकट्ठा करने का बड़ा व्यसन है। पूर्व-

जन्म के संबंध में अब तक जितनी घटनाएँ समाचार-पत्रों में प्रकाशित हुई हैं प्रायः उन सबका संग्रह उन के पास है। इस के अतिरिक्त उनके पास पूर्वजन्म के ऐसे उदाहरण वर्तमान हैं जो समाचार-पत्रों में प्रकाशित ही नहीं हुए। अभी हाल में फतेहगढ़ के बाबू उमेशचन्द्र माथुर ने भगवती देवी के पिछले जन्म के बारे में एक लेख १३ मार्च के "लीडर" में छपवाया है। उसकी जांच श्री भट्टाचार्य ने स्वयं की थी। उसके संबंध में भट्टाचार्य जी ने जो वृत्तांत हमें लिख भेजा है वही आगे दिया जाता है। वे लिखते हैं :—

"मैं किसी काम के सिलसिले में फतेहगढ़ गया था। स्वर्गीय पण्डित शिवप्रसाद वकील के मकान पर कुछ मित्र पूर्वजन्म के संबंध में बातचीत करने लगे। उसी समय एक व्यक्ति ने आ कर कहा कि समरथी अहीर की लड़की इसी प्रकार की कुछ बातें बताती है। समरथी अहीर पड़ोस में ही रहता था। मैंने उसे बुलाया। उसने आ कर कहा कि मेरी लड़की तो बहुधा इस प्रकार बकवाद किया करती है और भोलेपुर की ओर भागा करती है। भोलेपुर और फतेहगढ़ में डेढ़ मील का अन्तर है। वहीं फतेहगढ़ का रेलवे स्टेशन है।

मैंने अहीर से कहा कि अपनी लड़की को मेरे पास ले आओ; वह बकती नहीं है; वह जो कुछ कहती है वह ठीक है। मैं भोलेपुर जा कर उसकी वास्तविकता मालूम करूँगा। यह बात सुन उसकी मां घबरा गई और बोली कि 'मैं अपनी लड़की को भोलेपुर नहीं भेजूंगी। मेरी लड़की मुझ से छीन ली जाएगी।' मां को बहुत समझाने-बुझाने पर वह लड़की मेरे पास लाई गई। परन्तु लड़की मुझे देख कर बहुत सहम गई। वह कुछ डरी हुई प्रतीत होती थी। मैंने उससे दो चार प्रश्न

किए। परन्तु उसने एक का भी उत्तर न दिया। वह चुपचाप खड़ी रही। तब मैंने उसके पिता के द्वारा प्रश्न करने शुरू किए। इस पर लड़की ने बताया :—

'मैं भोलेपुर में रहती थी। मेरे दो लड़के और एक लड़की है। मेरा एक लड़का कन्नौज में रहता है। मेरे मकान के बाहर सीमेण्ट का चबूतरा है। मेरे मकान में हीरा-रूपा गड़ा है। मैं मिश्रायण हूँ। मेरा दूसरा मकान सड़क के पास है। मेरे यहां आलू का रोजगार होता है।'

लड़की का पिता कहने लगा कि यह लड़कों और लड़की के नाम बतलाती थी; मुझे याद नहीं रहे। जब उसकी मां से पूछा गया तो उसने जान-बूझ कर नहीं बतलाए क्योंकि वह नहीं चाहती थी कि उस की खोज हो। लड़की का पिता समरथों समझदार मनुष्य था। मैंने उसे लड़की को भोलेपुर ले जाने के लिए तैयार कर लिया। मैं भोलेपुर लड़की के साथ पहुँच कर वहां के कुछ अध्यापकों से मिला। मैंने उनसे सहायता माँगी। मैंने उनसे कहा कि ऐसा मकान तलाश कीजिए जिस में सीमेण्ट का चबूतरा हो और उस में मिश्र जाति के ब्राह्मण रहते हों। दो-तीन घण्टे के परिश्रम से एक मकान का पता मिला। उसमें सीमेण्ट का चबूतरा है और उसमें मिश्र रहता है। उसके यहां आलू का व्यापार भी है। (भोलेपुर में आलू का व्यापार घर-घर होता है।) हम लोग लड़की को लेकर उस मकान पर पहुँचे। लड़की को सीमेण्ट के चबूतरे पर बैठा दिया। घर की स्त्रियों ने उससे प्रश्न पूछने आरम्भ कर दिये। परन्तु भगवती देवी कुछ भी उत्तर नहीं देती थी। इतने में श्रीमती गङ्गादेवी, जो कि अध्यापिका है और

भगवती देवी के कथनानुसार उसके पिछले जन्म की पुत्री है, मेरे पास आई। मेरे लिखे हुए नोटों को देख वह आश्चर्यान्वित होकर कहने लगी कि इस में रत्ती भर भी सन्देह नहीं रह जाता कि यह भगवती देवी मेरी मां है। कारण यह कि आप जो कुछ नोट करके लाए हैं, वह सब सत्य प्रमाणित होता है। मेरी मां को ये सब मिश्रायण कहते थे। इसके उपरान्त गंगा देवी ने अपनी छोटी सी माँ को गोद में उठा लिया और वह उस से पूछने लगी। इस पर उसने उत्तर दिया कि मैं सब वृत्तान्त इस लिए नहीं बतलाती हूँ कि मेरी मां मुझे मारेगी। "तुम तो अब अपने घर आ गई हो; तुम मां के पास जाकर क्या करोगी? तुम यहीं हमारे पास रहना।" यह सुन भगवती देवी हँसी और निडर हो सब हाल बताने लगी। उसने गंगा देवी का नाम बतलाया और लड़कों के नाम बताए।

यह समाचार गाँव में फैलते ही ५०० के लगभग स्त्री-पुरुष वहां एकत्र हो गये। बड़ी गड़-बड़ मची, मैंने लोगों को चुप कराया।

फतेहगढ़ रेलवे स्टेशन के डाकघर में पण्डित रामकृष्ण क्लर्क हैं। उनको बतलाया गया। उनके आने पर लड़की ने उन्हें झट पहचान लिया। वह उनकी गोद में चली गई। मैंने पण्डित रामकृष्ण जी से पूछा कि भगवती बतलाती है कि 'मैंने एक कोने में रुपया गाड़ा था।' उन्होंने उत्तर में कहा कि "मैंने रुपया खोद लिया है; वह बर्तन मौजूद है जिस में रुपया गाड़ा गया था।"

इस पर मैंने उन्हें सलाह दी कि बहुत से दूसरे बर्तनों के बीच उस बर्तन को रख दीजिए और भगवती से पूछिए

कि कौन से बर्तन में उसने रुपया गाड़ा था। बहुत से लोगों की उपस्थिति में लड़की ने बर्तन पहचान लिया। इसी प्रकार उसने जो कपड़े रक्खे थे बहुत से दूसरे कपड़ों के साथ, वे उसके सामने लाये गये। उसने उस ढेर में से अपने कपड़े निकाल लिए।

पण्डित रामकृष्ण ने मुझे बतलाया कि जिस समय मेरी माता की मृत्यु हुई थी उस समय मैं कन्नौज डाक-घर में था। तार मिलने पर जब मैं अपने मकान पर पहुँचा, तब मेरी माँ मर चुकी थी। इसलिए भगवती देवी बताती है कि मेरा एक पुत्र कन्नौज में है।

दूसरे मकान की बात जो भगवती देवी कहती थी वह भी ठीक थी। वह मकान पण्डित रामकृष्ण ने बेच डाला है। भगवती देवी की आयु इस समय तीन वर्ष सात मास है। पण्डित रामकृष्ण की माता की मृत्यु ६० वर्ष की आयु में हुई थी। इस बात को ४ वर्ष और छः मास का समय होता है। इस प्रकार ठीक दस मास का अन्तर पड़ता है, जो भगवती देवी ने गर्भ में बिताया है। भगवती देवी का दूसरा लड़का कानपुर रेलवे में नौकर है। वह उस समय उपस्थित नहीं था। उसका नाम भी भगवती देवी ने पुत्तूलाल बताया था। मेरे सामने एक पड़ोसी ने भगवती देवी से पूछा कि 'मेरा मकान कहां है?' उसने झट बता दिया। इसी प्रकार जब एक स्त्री ने प्रश्न किया, तब भगवती ने कहा कि 'तुम मेरी चाची हो।' और सच ही वह उसकी चची थी। (दैनिक "हिन्दू" लाहौर), ८ जून, १९४६)

(२०) मुक्तसर १३ फरवरी १९३७। रियासत नाभा के गांव चन्द्रभान से सूचना मिली है कि वहाँ एक सुनार का तीन-

वर्षीय बच्चा अपने पिछले जन्म का हाल किसी हिचकिचाहट के बिना ठीक-ठीक बताता है। लोग सहस्रों की संख्या में उसे देखने जाते और उससे कई प्रश्न पूछते हैं। पहले तो बच्चा पूछने वाले को गाली देता है फिर उसके प्रश्नों का सही उत्तर देता है। लड़का कहता है कि "पूर्वजन्म में मैं 'सदलेवाला' गाँव के एक महाजन का इकलौता बेटा था। मेरी दो पत्नियां थी। बड़ी पत्नी के साथ मेरा बहुधा झगड़ा रहता था। उसने एक दिन मुझे कुएँ में गिरा दिया जबकि मैं पानी निकाल रहा था। मैं डूब कर मर गया।"

लोगों ने सदलेवाला में जाकर उस महाजन के बारे में पूछताछ की। इस बच्चे की छोटी पत्नी अभी जीवित है। वह सारा हाल सुन कर छाती पीटने और विलाप करने लगी। महाजन ने स्वयं जाकर बच्चे को देखा। बच्चे ने अपने पहले पिता को पहचान लिया और उछल कर उसकी गोद में जा बैठा। (आनन्द)

(२१) धुरी, २१ मार्च सन् १९६३—यहाँ से चार मील दूर अकबड़ी गाँव के एक कृषक श्री करनैलसिंह पुत्र श्री गज्जन सिंह कैथल वाले का चारवर्षीय लड़का बड़ी विचित्र बातें कर रहा हैं। वह अपने पिछले जन्म की सभी बातें सुनाता है। उनको सुन कर घर वाले तो एक ओर, निकटस्थ गाँवों के लोग भी चकित हो रहे हैं। लड़का अपनी वर्तमान मां से कह रहा है कि "तू मेरी मां नहीं, तू मेरी मां नहीं; मेरी मां तो बहुत सुन्दर है। यह मेरा घर नहीं। मेरा घर तो बहुत अच्छा और सुन्दर है। हमारे तो मोटर और ट्रक चलते हैं। जैसा यह घर है ऐसा तो हमारे नौकरों का घर है। जैसा यह मकान है ऐसी तो हमारी टट्टियाँ हैं। मेरे

दो लड़के हैं। मेरी घर वाली का रंग काला है। मेरा बाप यह नहीं है—मेरा बाप यह नहीं है।"

इसके अतिरिक्त यह लड़का इस बात पर आग्रह कर रहा है कि "मैं और मेरा पिता दोनों मोटर साईकिल पर किसी गाँव को जा रहे थे। रास्ते में नहर के पुल पर दुर्घटना हो गई। उस में वहीं मेरी मृत्यु हो गई। मृत्यु के उपरान्त मैंने तुम्हारे घर में जन्म लिया है। मेरे माता-पिता अब भी भवानीगढ़ में वर्तमान हैं।"

लड़के की बातों की छानबीन करने के लिए लड़के के दादा श्री गज्जन सिंह ने भवानीगढ़ में जाकर नातेदारों से पता लगाया, तो लड़के की सभी बातें बिलकुल सच्ची निकलीं। पता लगा कि आज से चार वर्ष पहले भवानीगढ़ में दुर्घटना हुई उसमें एक नवयुवक लड़का उसी स्थान पर मर गया था। उसकी पत्नी और बच्चे जीवित हैं। उसके दूसरे घर वाले भी वर्तमान हैं। जब उसके दादा ने उसके पहले माता-पिता से भेंट की तो उन्होंने बताया कि हमारा नवयुवक लड़का मोटर साईकिल की दुर्घटना में मर गया था। उसकी पत्नी का रंग काला है और दो बच्चे भी मौजूद हैं। इस प्रदेश में इस लड़के की खूब चर्चा है और लोग उसे देखने जा रहे हैं।

[नोट :—मैंने भी लड़के के वर्तमान दादा को पत्र लिख कर पूछा तो उन्होंने अपने गुरुमुखी में लिखे पत्र में लड़के के संबंध में उपरिलिखित बातों को सत्य बताया था।

(लेखक) ]

(२२) बटाला, ३ फरवरी १९३९। बटाला के एक सम्पन्न खत्री घराने की आठवर्षीय कन्या अपने पूर्वजन्म के हाल बताकर घर वालों को चकित-स्तम्भित कर रही है। लड़की की आयु इस समय आठ वर्ष की है। उसके पिता का कथन है कि वह एक वर्ष से ऐसी बातें कर रही थी, परन्तु किसी ने इस ओर ध्यान नहीं दिया।

यह लड़की आजकल मिशन स्कूल की पहली कक्षा में पढ़ती है। एक दिन उसकी मां ने उसे पीटा। इस पर वह रुष्ट हो गई और कहने लगी—मेरे पैसे गहने दे दो, मैं तुम्हारे घर में नहीं रहूँगी। मेरी मां मुझे नहीं मारा करती थी। हमारे मकान का भवन बड़ा भव्य है। उसका रसोई-घर आप के रसोई-घर की तरह छोटा-सा नहीं है। वह बहुत बड़ा है। मेरी मां मुझे पिग्नियाँ (लड्डू) बना कर खिलाया करती थी।"

इस घटना के उपरान्त लड़की के माता-पिता का आश्चर्य बढ़ता गया, क्योंकि उसने समय समय पर ऐसी बातें करनी आरम्भ कर दीं। उन्होंने लड़की से कई और बातें मालूम कीं। (पत्र-प्रतिनिधि ने स्वयं भी लड़की से भेंट की और सब हाल पूछा)। वह बतलाती है कि उसके पिता का नाम लाला रामलाल है। उसकी माता का नाम चानन देवी है। उसका अपना नाम प्रकाशो था। रावलपिण्डी में इस के माता-पिता के उद्यान हैं। फलों की बड़ी भारी दूकानें हैं। उसने यह भी कहा कि वह उसे अपने बागों में से लाकर फल खिलाएगी। वह आप रावलपिण्डी के एक गर्ल स्कूल की दूसरी कक्षा में पढ़ा करती थी। लड़की यह नहीं बता

सकी कि वह आर्य-पाठशाला थी या कोई दूसरी हिन्दू-संस्था, परन्तु वह कहती है कि उसकी अध्यापिकाएँ बटाला के मिशन स्कूल की अध्यापिकाओं से भिन्न थीं। और वह अपनी पुस्तकें घर में एक अलमारी में रक्खा करती थी। उस के चार पाँच भाई और उतनी ही बहनें थी! बड़ा भाई शिमला में रहता है और विवाहित है। उसकी (रावलपिण्डी वाली) मां ने उसके लिए तीन सिलमा-सितारे वाले बहुमूल्य सूट सिलाकर रक्खे हुए बताती है। रावलपिण्डी में उनके घर में बिजली लगी हुई है। कभी-कभी वह अपने भाइयों के नाम भी बतलाती है।

उसके माता-पिता ने पहले परवाह नहीं की थी। लड़की के पिता का विचार उसे रावलपिण्डी ले जाने का है। कारण यह कि लड़की कहती है कि यदि उसे वहां ले जाया जाये तो वह स्वयमेव अपने घर चली जायगी और कि उसे अपने घर के रास्ते ज्ञात हैं। पत्र-प्रतिनिधि से उसने कहा कि वह रावलपिण्डी जाकर अपने माता-पिता को पहचान लेगी।

('आर्य गज़ट' लाहौर १० फर्बरी १९३५)

(२३) बड़ौदा, पहली अक्तूबर १९३७। बड़ौदा राज्य के ज़िला मस्तान के गांव पट्टन से सूचना प्राप्त हुई है कि वहां एक छः वर्षीय बालक सेवन्ती लाल जैन ने अपने पिछले जन्म की बातें बता कर अपनी माता को आश्चर्य-चकित कर दिया है। लड़के का कहना है कि उसका पिछला जन्म पूना में हुआ था और उसके माता-पिता पट्टन के रहने वाले थे। वहां उनके बहुत से सगे-संबंधी थे। उसका नाम केवलचन्द्र था और पूना में उसकी दूकान थी। पट्टन में

उसका कई व्यापारियों से लेन-देन था। उसके छः लड़के थे। उनमें से एक का नाम रामलाल था।

कहते हैं, इन सब बातों का पता लगाया गया। जब वह और उसकी मां पट्टन गये तो उसने एक मकान की ओर संकेत करके कहा कि 'यह मेरे चचा का मकान था।' उसके नातेदारों और उन व्यापारियों से जिन के साथ उसका कारोबार था घटनाओं की पुष्टि की गई। कहा जाता है कि लड़का अपने धर्म से पूरी तरह परिचित है। वह जैनियों के सभी धार्मिक संस्कारों को जानता है। लड़के ने घोषणा कर दी है कि जब वह युवा हो जाएगा तो संसार का त्याग कर देगा। ('प्रकाश' लाहौर, १० अक्टूबर, १९३७)

(२४) बालोन (उत्तर प्रदेश से तीन मील की दूरी पर फ़ारैस्ट चौकी) में सूरतसिंह फ़ारैस्ट-गार्ड की लड़की विद्यावती अपने पूर्वजन्म की बातें बताती है। इस समय लड़की की आयु ९ वर्ष है। लड़की के कथनानुसार वह पूर्वजन्म में ब्राह्मणी थी उसका नाम शारदा था। वह संस्कृत में पर्याप्त निपुणता रखती थी। चम्बल नदी के तट पर पठारिया नामक गाँव में रहती थी। साठ वर्ष की आयु में उसकी मृत्यु हुई। क्योंकि उसने अपना काम पूरा नहीं किया था, इसलिए अब वह अपने वर्तमान माता-पिता के घर में जो खत्री हैं, उत्पन्न हुई है। उसका कहना है कि वह बारह वर्ष की आयु में मर जायगी। लड़की प्रायः एकान्त पसंद करती है। सब समय भगवान् के नाम का जाप करती है। वह बहुधा चुप रहती है। उसके माता-पिता ने उसके कथन की जांच की, तो उसे बिलकुल ठीक पाया। असंख्य लोग उसे देखने आते हैं। ('प्रेमप्रचारक' ? अप्रैल, १९३७)

(२५) लण्डन के समाचार-पत्र, 'सण्डे एक्सप्रेस', में लेडी कर्टस सेण्ट ग्लोसस्टर हेलन पोर्टमैन ने अपनी इटली-यात्रा का विस्मयजनक वृत्तान्त प्रकाशित किया है। यह महिला पहले कभी इटली नहीं गई थी, फिर भी सब स्थानों को भली भाँति पहचानती थी। इटली के रहने वाले, जिन्होंने इसे इसके पूर्वजन्म में देखा था, इसे पहचानते थे। लेडी कर्टस अपना हाल यों वर्णन करती है :—

एक समय जबकि मैं युवती थी, मुझे पहले-पहल इटली में यात्रा करने का संयोग हुआ। जब ट्रेन ने प्रस्थान किया तो मैंने अशान्ति और विवशता का अनुभव किया। मैंने अधिकांश समय गाड़ी में से बाहर की ओर झांकने या भीतर प्रवेश करने के रास्ते में बिताया। मेरी इस चेष्टा से मेरे प्रियजन अप्रसन्न थे। एकाएक मैं निचली होकर खिड़की के पास एक स्टूल पर गई। मैंने अनुभव किया कि मैं यह सब कुछ जानती हूँ कि हम कहां जा रहे हैं और क्या देखेंगे।

गाड़ी हलकी चाल से जा रही थी। मुझे अनुभव होने लगा कि आगे चलकर दाईं ओर पहाड़ी पर एक गिरजाघर मिलेगा। वह अकेला देख पड़ता है। और सारी दृश्यावली में उसकी निराली शान है। इसके निकट कोई ग्राम नहीं। जब हम आगे बढ़े तो बिलकुल यही दृश्य आँखों के सामने था। फिर मैंने अनुभव किया कि बाईं ओर एक नदी होगी। ऊँचे और घने वृक्ष होंगे और एक पहाड़ी पर रूपहले पत्तों वाले पेड़ों के झुण्ड होंगे। यह अनुभव होते ही मुझे आश्चर्य हुआ कि पेड़ों के पत्ते रूपहली रंगत के क्यों होंगे?

मेरा पेड़ों का ज्ञान बहुत सीमित था। मैंने जैतून के पेड़ों के झुंड अपने जीवन में पहले कभी नहीं देखे थे। जब ये पेड़ हमारे सम्मुख आए तो मुझे किसी दूसरे व्यक्ति ने ही बताया कि ये जैतून के वृक्ष हैं।

मुझे उस समय ऐसा प्रतीत हुआ कि जिस भूभाग में हम उस समय यात्रा कर रहे हैं उसे मैंने पहले देखा हुआ है, यद्यपि जहाँ तक मेरा ज्ञान मेरा पथदर्शन करता था मुझे भली भांति स्मरण था कि मैं अपने जीवन में पहले यहां कभी नहीं आई। इसके उपरान्त मेरे हृदय में ऐसा अनुभव फिर कभी नहीं हुआ।

इस यात्रा के उपरान्त जब हम अपने फ्रांसीसी मित्रों के साथ पैरिस की सैर कर रहे थे तो एक मकान पर द्वार खुलने की प्रतीक्षा में कुछ देर ठहरना पड़ा। वहाँ एक व्यक्ति ने अतीव प्रसन्नता और हर्ष के साथ हमारा स्वागत किया। एक ने मेरे निकट आकर इटालियन भाषा में वार्तालाप आरम्भ कर दिया। मैंने फ्रांसीसी भाषा में उत्तर दिया "खेद है, मैं यह नहीं जानती।"

इस पर वह टूटी-फूटी फ्रेंच में बोला—"तुम तो इटली की रहने वाली हो। क्या मैं गलत कह रहा हूँ? तुम्हारा इटालियन होना निश्चित है। मैं निश्चय-पूर्वक कह सकता हूँ कि तुम इटालियन हो। मैं स्वयं भी वहीं का रहने वाला हूँ।"

उस समय मुझे अपनी इटली-यात्रा और वहां कई स्थानों का समय से पहले ज्ञान हो जाने का विचार आया।

क्या मैं एक किसान स्त्री के रूप में पहाड़ी पर अवस्थित उस छोटे गिरजे को कभी जाया करती थी ? या कदाचित् मूर्तिपूजा की अवस्था में सर्व और जैतून के पेड़ों में फिरा करती थी ? मैं बड़े आश्चर्य में हूँ।

("प्रकाश ७ जुलाई १९३५)

(२६) गाँव अरहरा, डाकघर वीरगदाकरावली ज़िला आगरा में एक मनुष्य अकबर जाट मर गया। उसकी आयु साठ वर्ष थी। उसको मरे आठ वर्ष हो गये। उसने गांव सनहरा डाकघर फतेहपुर सीकरी ज़िला आगरा में कल्लू नाम के एक मुसलमान फ़कीर के यहां जन्म लिया। उसकी आयु सात वर्ष की है। वह अपने पिछले जन्म की बातें बतलाता है। मैंने उसे अपने गाँव जालौन में, जो वहाँ से एक मील की दूरी पर है, बुलाकर पूछा। उसने जो कुछ बतलाया, ठीक बतलाया—(१) झोंपड़ी को आग लगने से मरा, (२) बेटों के नाम अंगद, कन्हैया, भिम्बर और लड़की का नाम गोविन्दी बतलाया, (३) चालीस रुपये झोंपड़ी के पास, डेढ़ घड़े में, अढ़ाई झोंपड़ी के मध्य में बतलाए। वे लड़कों ने निकाल लिये। अपने जीवन की घटनाएं—एक बैल का नेज़े से मारा जाना, चार हल की करसानी करना, सब बातें २८ जनवरी १९३२ को बुलाकर पूछी गईं।

(तोताराम बोहरा, गांव जाजों, डाकघर फतेहपुर सीकरी जिला आगरा। 'सरस्वती' प्रयाग, अप्रैल, १९३२)।

### (२७) तीनवर्षीय बच्ची ने २५ वर्ष पूर्व का हाल बताया—

खंडलीमंडी १४ अक्तूबर ६२—भरतपुर जिले के कस्बा भुसावर में एक तीनवर्षीय बच्ची ने अपने पूर्वजन्म का हाल

बताकर परिवार वालों तथा नगरवासियों को आश्चर्य में डाल दिया है। बच्ची ने बताया कि २५ वर्ष पूर्व मैं इसी कस्बे में एक कुएं में गिर जाने के कारण मर गई थी।

लड़की ने अपने पूर्वजन्म की बात उस समय बताई, जब उसके पिता एक दिन उसके साथ एक कुएँ पर नहाने पहुँचे। लड़की ने कुआं देख कर उस पर नहाने से मना कर दिया। पिता ने कारण पूछा तो वह सहमी सी बोली कि इसी कुएं में २५ वर्ष पूर्व वह गिर कर मरी थी। 'नहीं अब मैं इस पर कभी नहीं चढ़ूँगी।' यह सुन पिता अवाक् रह गया। ज्ञात करने पर बच्ची ने पूर्वजन्म में अपने परिवार तथा घर आदि के बारे में बताया जो भुसावर कस्बे में ही था।

लड़की का पिता फ़ौरन बच्ची के साथ उसके पूर्व-जन्म का मकान जांचने के लिए चल दिया। वहां पहुंच कर उसने फ़ौरन ही जाकर वह मकान बता दिया जो कि उसके पहले जन्म का था। बच्ची ने अपने उस बचपन के पिता को, जो आजकल वृद्ध हैं पहचान लिया और पहचानते ही दादा कह सम्बोधित किया। उसने घर का पूर्वजन्म-काल का कुछ हाल भी बताया जैसे कि 'मेरे कपड़ों का बक्स यहाँ रखा रहता था यहां अमुक चीज़ रखी रहती थी।' लड़की ने अपने बड़े भाई की पत्नी को भी पहचाना और उसे भाभी कह कर सम्बोधित किया। अपने छोटे दो भाइयों की पत्नियों को वह नहीं पहचान सकी, क्योंकि उनकी शादी तब तक नहीं हुई थी।

पूर्वपरिवार वालों ने बताया कि २५ वर्ष पूर्व हमारी १४ वर्षीय एक बच्ची उसी कुएं में गिरकर मर गई थी।

अब यह जानकर कि यह बच्ची वही लड़की है, पूर्वपरिवार वाले भी उससे बड़ा प्यार करने लगे हैं।

लड़की से जब दर्शनार्थी यह पूछते हैं कि इस बीच २२ वर्ष तक तुम कहां रहीं, तो वह कुछ उत्तर नहीं दे पाती। केवल पूर्वपरिवार-सम्बन्धी प्रश्नों का ही उत्तर देती है।

('वीर प्रताप' १५. १०. ६२)

## (२८) मथुरा के भूतपूर्व पालिका-अध्यक्ष का दिल्ली में पुनर्जन्म—

मथुरा १६ दिसम्बर—मथुरा नगरपालिका के भूतपूर्व प्रधान श्री शक्तिपाल शर्मा ने अपने भाई के द्वारा हत्या किये जाने के बाद दिल्ली के एक गुप्ता परिवार में जन्म लिया है। कहा जाता है कि इसने अपने माता-पिता को बताया कि उसकी उसके भाई ने गोली मारकर हत्या कर दी थी। पहले तो इसके माता-पिता ने कहा कि वह इस घटना को भूल जाये, परन्तु बाद में वह मथुरा में आकर 'सुखसंचारक कम्पनी मथुरा' के कर्मचारियों से मिला जिन्होंने इसे बताया कि कुछ समय हुआ पण्डित शक्तिपाल की उनके छोटे भाई ने गोली मारकर हत्या कर दी थी और इस अपराध में उसे आजीवन कारावास का दण्ड हो चुका है। इसके बाद श्रीमती शक्तिपाल शर्मा अपनी ननद के साथ दिल्ली गईं और उनके पहुँचते ही उक्त लड़के ने इन्हें पहचान लिया। अब यह लड़का अपने पुराने परिवार के सदस्यों और अपने पूर्वजन्म के मित्रों से बातचीत करने के लिए मथुरा आया हुआ है। लड़के की आयु इस समय कोई नौ वर्ष है।

('वीर प्रताप' १७ दिसंबर १९६४)

## (२६) ३ जन्मों का हाल जानने वाली लड़की—

**५ वर्ष की आयु में अंग्रेजी, हिन्दी व संस्कृत बोलती है।**

हरदोई, १९ सितम्बर—कशियारपुर ग्राम-निवासी श्री सूरजबख्शसिंह की साढ़े पाँच वर्ष की लड़की अंग्रेजी, हिन्दी और संस्कृत बोलती है। उसने जनता को रामायण, गीता के कई श्लोक और पंक्तियां सुनाईं तथा कीर्तन कराया।

उक्त लड़की ने एक भेंट में हमारे सम्वाददाता को बताया कि "मेरा प्रथम जन्म मथुरा में, दूसरा काशी में, तीसरा अयोध्या में और चौथा हरदोई में हुआ।" तीनों पूर्व-जन्मों में वह ब्राह्मण-परिवार में पैदा हुई और यह चौथा जन्म ठाकुर-परिवार में हुआ।

लड़की के पिता ने सम्वाददाता को बताया कि लड़की का नाम पक्षीदेवी रखा गया है, क्योंकि जब यह लड़की पैदा हुई तो बहुत दुबली-पतली थी। उन्होंने बताया कि लड़की सातवें मास में पैदा हो गई थी। हर प्रश्न का उत्तर कविता में ही देती है। बताया कि चार वर्ष की आयु में लड़की अंग्रेज़ी में गुनगुनाने लगी थी।

सम्वाददाता ने लड़की से कललावा में भेंट की, जहां टाऊन एरिया के चेयरमैन डा० सुरेश ने उसे उसके पिता के साथ बुलवाया था।

('वीर प्रताप' जालन्धर, २० सितम्बर, १९६६)

## (३०) दो जन्मों का हाल जानने वाला बालक—

भटिण्डा, ११ अगस्त (नि. सं.)—आप मानें या न मानें, परन्तु यह बिलकुल सच है कि भटिण्डा से २१ मील दूर गांव

बाजाखाना में एक चार-पांच वर्ष के बालक को अपने पहले दो जन्मों का पूरा-पूरा ज्ञान है।

कहते हैं कि जब यह बालक चार-पांच वर्ष का हुआ तो अपने माता-पिता से कहने लगा कि मैं इससे पहले जन्म में एक बिल्ला था और उससे पहले जन्म में मेरा जन्म एक किसान के घर गांव भगता (भटिण्डा) में हुआ था। चलो मैं तुम्हें अपने पहले माता-पिता से भी मिला लाऊँ।

कहते हैं कि पहले तो उसके घर वालों ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया। परन्तु जब वह लड़का उनको प्रतिदिन तंग करने लगा तो लड़के की मां तथा मामा उसके साथ गांव भगता में पहुँच गए। यह छोटा सा लड़का इनको बस-स्टैण्ड से रास्ता दिखाता हुआ अपने (पहले जन्म वाले) घर ले गया तथा जाते ही अपनी भूतपूर्व मां को मां-मां कह कहकर टांगों से लिपट गया। उसकी पहले जन्म वाली मां हैरान हो गई और उसने पूछा कि 'तुम कौन हो, और मुझे मां कैसे कह रहे हो?' लड़के ने बताया कि आज से लगभग सात-आठ वर्ष पहिले मैं आप ही का बेटा था तथा ट्रैक्टर उलटने से मेरी मृत्यु हो गई थी। उसके बाद फिर से मैंने आप ही के घर में बिल्ले के रूप में जन्म लिया था। परन्तु जब मैं सिर्फ दस महीने का ही था तो आप के कुत्ते ने मुझे मार डाला था, और उसके बाद उस लड़के ने घर वालों के समस्त परिवार के नाम तथा कुछ गुप्त बातें, बताईं तो उसकी भूतपूर्व मां की आंखों में भी आंसू आ गए तथा उसने उस बालक को गले लगा लिया तथा स्वीकार किया कि जो कुछ इस बालक ने बताया है शत-प्रतिशत ठीक है। इतने में उस बालक का

भूतपूर्व पिता तथा भाई खेतों से आ गए। लड़के ने उन को भी पहचान लिया।

अब पता चला है कि बालक साधुओं की तरह बिल्कुल मौन-व्रत धारण किए बैठा रहता है और कभी-कभी होंठों में ही बोलता रहता है—"माँ, मेरा ट्रैक्टर ठीक हो गया है, मैंने खेत जाना है और जल्दी से मेरे लिए रोटियां पका दो इत्यादि।" सैंकड़ों लोग इस बालक को देखने के लिए जा रहे हैं। (दैनिक 'वीर प्रताप', १२ अगस्त १९७१)

## (३१) पूर्वजन्म की स्मृति—

लखनऊ, १४ जनवरी—यहाँ के एक सम्पन्न परिवार में चार वर्ष का एक बालक है, जो अपने पूर्वजन्म की बातें बताता है और उसने अपने पहले के घर और परिवार का पता दिया है और उन्हें पहचाना भी है।

बच्चा जब अपने पूर्वपरिवार में गया, तो जाते ही उसने अपनी पूर्वमाता और बहिन का चरणस्पर्श किया। किन्तु समीप ही बैठी अपनी पत्नी के पैर नहीं छुए। बच्चे से जब उसके पैर छूने को कहा गया तो उसने तुरन्त उत्तर दिया कि वह मेरी पत्नी है। मैं उसके पैर कैसे छू सकता हूँ?

बच्चे को देखकर उसकी पूर्वपत्नी की अश्रुधारा फूट पड़ी। बच्चे ने अपने पूर्वजन्म के साथियों को भी पहचाना।

बच्चे से जब प्रश्न किया गया कि मरते समय तुम्हें कैसा लगा? तो उसने उत्तर दिया कि जैसे आंखों में मिर्च लग रही हो।

बच्चे ने अपनी पूर्वजन्म की मोटर का नम्बर तथा उसका रंग भी बताया। अधिक प्रचार होने के भय से बच्चे के पिता ने अपना और अपने बच्चे का पता नहीं दिया है। बच्चे का पूर्वजन्म का परिवार भी लखनऊ में ही रहता है।

('वीर प्रताप', १६ अगस्त १९७१)

## (३२) पिछले जन्म का हाल जानने वाली नौजवान लड़की की दास्तान—

लन्दन की एक नौजवान लड़की चार्मी आवागमन के सिद्धान्तों पर विश्वास नहीं करती। परन्तु जब उससे प्रश्न किया गया कि वह अपने पूर्वजन्म का हाल कैसे बताती है तो वह बोली कि मैं स्वयं चकित हूँ कि मुझे पूर्वजन्म की बातें कैसे याद हैं? मुझे ऐसा आभास होता है कि मैंने कोई स्वप्न देखा था, जिसका वास्तविक रूप मुझे अब दिखाई दे रहा है।

चार्मी सिविस्केस की गोल्डन स्ट्रीट को देखकर बोली— "बस मैं यहीं रहा करती थी। तीन बच्चे थे और एक पति।"

चार्मी ने अपने मकान को भी पहचान लिया और एक पुरानी किस्म के मकान का दरवाजा खटखटा कर बोली— "प्यारे! मैं आ गई हूँ। दरवाज़ा खोलो, मैं आ गई हूँ।"

और जैसे ही वृद्ध फिलिप्स ब्राऊन ने दरवाज़ा खोला, चार्मी उससे लिपट गई और उसके बूढ़े अधरों का आलिंगन करके बोली "क्या तुम मुझे नहीं पहचानते? मैं तुम्हारी पत्नी हूँ, तुम्हारी एलिया।" और चार्मी को अपना पुराना नाम याद आ गया।

बूढ़े फिलिप्स ब्राऊन ने चार्मी की पीठ पर प्यार-भरा हाथ रखा और कांपती हुई आवाज़ में बोला—'आवाज़ तो मैं पहिचानता हूँ अपनी एलिया की, परन्तु उसे तो मैं अपने हाथों से आज से बीस वर्ष पूर्व ज़मीन में दफ़ना आया था।'

चार्मी के नये पति ने तमाम बातें जानने के बाद उसी समय अपनी पत्नी को तलाक दे दिया। अगले ही दिन नौजवान चार्मी ने बूढ़े फिलिप्स ब्राऊन से शादी करके अपना नाम एलिया रख लिया।

(पाक्षिक 'भीम सैनिक' मेरठ, १५ फर्बरी १९७२)

## (३३) लुधियाना में एक रहस्यपूर्ण बालिका—

लुधियाना, २१ अप्रैल (विशेष सम्वाददाता द्वारा) जबलपुर की एक अढ़ाई वर्षीय लड़की पिछले तीन दिन से यहां आई हुई है। यह लड़की प्रत्येक मंगल व शुक्रवार को व्रत रखती है। दोनों दिन सायं ४ बजे से चौकी में बैठ जाती है।

बताया जाता है कि उस समय एकान्त में कमरे के बाहर बैठे दर्शकों के नाम लेकर अथवा निशानी बता कर बुलाती है और उन्हें आशीर्वाद देती है। कुछ लोगों के मन के प्रश्न भी बताती है।

लड़की के पिता का नाम अशोक कुमार है और वह उसे "सन्तोषी माता" कहते हैं। श्री अशोक कुमार का कहना है कि यह बच्ची ६ अगस्त १९६९ को अपने नाना के घर बम्बई में उत्पन्न हुई थी। जन्म के समय लड़की के मुँह में सारे दान्त थे। वह जन्म से ही बातचीत करती थी।

श्री अशोककुमार के अनुसार लड़की ने सबसे पहले यह भविष्यवाणी की कि १० मिण्ट के भीतर उसकी माता का देहान्त हो जाएगा। उक्त बात पूरी सत्य उतरी।

## लुधियाना आने की कहानी—

लड़की के लुधियाना आने की कहानी भी बड़ी रोचक है। बताया जाता है कि जिन दिनों, दिल्ली में साईं बाबा आये हुए थे, यह और इसके पिता भी वहीं थे। लुधियाना के श्री सतपाल थापर पत्नीसहित सत्य साईं बाबा के दर्शनों के लिए गए हुए थे। वहाँ उन्हें इस लड़की का पता चला। वह लड़की के दर्शनों के लिए गए। उस दिन इस लड़की की चौकी थी।

अन्दर से अचानक आवाज आई कि एक नन्हें बच्चे राजू को बुलाओ। जब आवाज़ दी गई, तो उन्हें बताया गया कि बाहर कई बच्चे हैं। इस पर बताया गया कि इसकी माता ने पीली साढ़ी पहन रखी है और इसी की गोद में राजू बैठा हुआ है।

लोग बच्चे को लड़की के पास ले गए और उसने उसे आशीर्वाद दी।

जब एक दिन लड़की अपने पिता के साथ जबलपुर जाने के लिए रेलवे स्टेशन पर आई, तो लड़की ने अचानक कहा कि वे जबलपुर नहीं बल्कि लुधियाना जाएंगे। अतः जबलपुर की रेल-टिकटें वापिस कर दी गईं और लुधियाना के लिए रवाना हो गए।

लुधियाना में लड़की के आगमन की सूचना सारे नगर में फैल गई। लोगों की भीड़ दर्शनों के लिए एकत्र हो रही है। ('वीर प्रताप' २२ अप्रैल, १९७२)

## (३४) बच्ची ने पूर्वजन्म के पिता को पकड़ लिया

मथुरा, २१ जनवरी (हि०स०)। छात्रा क्षेत्र के पसौली ग्राम में पंडित तेजपाल की पुत्री नथिया उपनाम मंजैदो (आयु साढ़े तीन वर्ष) ने साईकल पर जाते हुए अपने पूर्वजन्म के पिता चौमुंहा के श्री बाबूलाल को पहचान कर पकड़ लिया और साथ ले चलने को कहा। श्री बाबूलाल के आश्चर्य-चकित होने पर लड़की ने उक्त जनों के नाम तथा ९ वर्ष की आयु में कुएं से पानी खींचते समय गिर कर मरने का सारा किस्सा सुनाया। जब लड़की को चौमुंहा लाया गया, तो उसने अपनी माता, भाई, अध्यापकों तथा गिर कर मरने वाले कुएँ आदि सभी कुछ को पहचान लिया। इस बालिका का पूर्व-जन्म का नाम कृष्णादेवी था। बालिका को अपने पूर्वजन्म की सभी बातें याद हैं। ('पंजाब केसरी' जालन्धर)

## (३५) मृत-महिला चिता से जीवित उठी—

कानपुर—रसूलाबाद पुलिस क्षेत्र के अन्तर्गत ग्राम अंगी के ८० वर्षीय किसान जयरामसिंह की ७० वर्षीया पत्नी श्रीमती मुन्नी, जिसकी मृत्यु १७ अगस्त को रात्रि के दस बजे हो गई थी, चिता में से जीवित उठकर यह कहते हुए बाहर आई कि 'ईश्वर ने मैकी को बुलाया है मुझे नहीं।"

बताया जाता है कि मुन्नी लम्बी बीमारी के बाद १७ अगस्त की रात्रि को स्वर्ग सिधार गई। जब उसके शव

को दूसरे प्रातःकाल चिता पर रखा गया तो वह यह कहते हुए उठ खड़ी हुई कि 'मुझे मत जलाओ। ईश्वर ने मैकी को बुलाया है मुझे नहीं।' कुछ शोकाकुल व्यक्ति यह देखने के लिए भागे कि क्या एक मोची की ३८ वर्षीया पत्नी मैकी की वास्तव में मृत्यु हो गई है। मैकी बिना पूर्व किसी बीमारी के मृत पाई गई।

## आवागमन सत्य है

"आर्य गज़ट", लाहौर अपने २३ जून १९३५ के अंक में लिखता है—

पुनर्जन्म का सिद्धात प्रकृति का अटल नियम है। आर्य जाति इसे लाखों वर्षों से मानती आई है। परन्तु आज अमेरिका और यूरोप के लोग भी पुनर्जन्म के सिद्धान्त को स्वीकार करते जा रहे हैं। वहां बहुत से ऐसे लोग मौजूद हैं जो अपने पिछले जन्म के हाल जानते हैं। इस संबंध में यह बात उल्लेखनीय है कि लण्डन के "सण्डे एक्सप्रेस" नामक पत्र में ऐसे कतिपय व्यक्तियों की चिट्ठियां छपी हैं जो अपने पूर्व-जन्म की बातें जानते हैं। प्रत्येक ऐसे व्यक्ति को वह समाचार-पत्र एक पौण्ड पारिश्रमिक देता है। उक्त पत्र में छपी कुछ एक कथाएं निम्न-लिखित हैं :—

### (३६) दो सहस्र वर्ष पहले रोमन सिपाही—

गन याड प्रायली ई. सी.-४ नामक स्थान का निवासी केनन आर सगार्गज नामक एक व्यक्ति अपना वृत्तान्त बताता हुआ लिखता है—

जब मैं पहले पहल लंका में गया तो वहाँ एक मित्र से मिला। मित्र ने बुद्धधर्म ग्रहण कर लिया था। एक दिन वह एक मन्दिर में ले गया। वह मन्दिर राजा दोते गनोलिया

ने ईसा से १६५ वर्ष पूर्व बनवाया था। इस मंदिर को तांबे का महल भी कहा जाता है। जब हम मन्दिर के भीतर पहुँचे तो वहाँ एक महन्त को पत्थर पर बैठे देखा। बातचीत करते हुए महन्त ने मुझ से पूछा—"क्या तुम पूर्वजन्म की बातें जानना चाहते हो?" मैंने मुस्कराते हुए सहमति प्रकट की। महन्त ने कहा :—

"यदि मैं आपको फिर अतीत के संसार में भेज दूं तो आप डरेंगे तो नहीं? इस पत्थर पर बैठ जाइए और मेरी आँखों की ओर देखिए।"

उस समय मैंने ऐसा अनुभव किया मानो मैं अचेत हो रहा हूँ। परन्तु ऐसा प्रतीत हुआ कि मैं एक भयानक और अंधकारपूर्ण सुरंग में से होकर वर्णनातीत द्रुतगति से निकल रहा हूँ। अन्ततः मैंने अपने को किसी विदेश में एक खुले मैदान में पाया। वह देश निश्चय ही लंका नहीं था। दूर अन्तर पर पहाड़ दिखाई देते थे। उन पर सफ़ेदे और देवदारु के पेड़ खड़े थे। पतझड़ की सी ऋतु थी। शीत का अनुभव हो रहा था। मेरे निकट बहुत से तम्बू लगे थे। उनमें आग सुलग रही थी।

कुछ दूरी पर बहुत से सिपाही पंक्तियों में खड़े मार्च कर रहे थे। उनके सिरों पर खोद थे। अफ़सर इटालियन भाषा में संक्षिप्त शब्दों में आदेश दे रहे थे। मैंने इस जीवन में इटालियन भाषा का एक शब्द भी नहीं पढ़ा था, फिर भी अफ़सर जो कुछ कह रहे थे उसे मैं भली भांति समझ रहा था। मैंने उठने का प्रयत्न किया, परन्तु गिर पड़ा।

अन्ततः एक इटालियन अधिकारी कुछ सिपाहियों के साथ मेरे निकट आया। वह मुझे देख कर कहने लगा—

"अभागा युवक, इसके घाव घातक हैं। अब इसका बचना कठिन है। इस लिए यही अच्छा है कि इसका तुरन्त वध करके इसकी मर्मान्तिक पीड़ा को समाप्त कर दिया जाय।" तदनुसार एक सिपाही ने अपनी तलवार नंगी की और मैंने अपने शरीर में प्रचण्ड वेदना अनुभव की। इसके साथ ही सारा संसार अनन्त अंधकार में परिवर्तित हो गया।

## फिर इसी जन्म में—

इसके बाद पुनः मैंने अपने आपको बौद्ध मन्दिर के भीतर लेटे हुए पाया। मेरा मित्र और महन्त मेरी ओर ध्यान से ताक रहे थे। महन्त ने मुझे संबोधित करके कहा कि "आप एक सिपाही थे। कोई दो सहस्र वर्ष पूर्व अलबे नगर के निकट अगस्टस के शासनकाल में इटालियन सेनापति डरेस को हार हुई थी। वहीं आप भी आहत हुए थे। यदि आप जर्मनी आक्रामकों के हाथ आ जाते, तो वे आपको कड़ी व्यथा पहुँचाते और अन्त में देवताओं के सामने आपका बलिदान कर देते।"

## (३७) अठारहवीं शताब्दी में जर्मन था—

केबल रोड, डेग नहम (एसक्स) निवासी श्री एफ़० मास ने निम्नलिखित वृत्तान्त बताया:—

सन् १९१९ में मैं अपनी पलटन के साथ गलोकन नगर (जर्मनी) में गया। वहां पहुँच कर मैंने ऐसा अनुभव किया कि मैंने इस नगर और इसके समीपवर्ती प्रदेश को पहले कभी देखा है और इसके चप्पा-चप्पा से परिचित हूँ, यद्यपि मैंने इस जन्म में पहले कभी उस भूप्रदेश पर पग नहीं रक्खा था।

तदनुसार मैं, किसी को सूचना दिए बिना, अपने कतिपय मित्रों के साथ नगर के प्रसिद्ध गिरजे में गया। भीतर प्रवेश करने के पूर्व ही मैंने अपने साथियों को सब भीतरी वस्तुओं और दीवारों आदि की आकृति और रूप के सम्बन्ध में बताया, यद्यपि इस गिरजे के सम्बन्ध में मैंने पहले कभी किसी पुस्तक में भी कुछ नहीं पढ़ा था। परन्तु मेरे आश्चर्य का कोई अन्त न रहा जब गिरजे के दरबान ने मेरी ओर बड़े विस्मय की दृष्टि से देखा और मुझे एक ऐसे नवयुवक लड़के का चित्र दिखलाया जिसके मुखमण्डल के चिह्न-चक्कर हूबहू मुझ से मिलते थे। इस चित्र पर सन् १७५६ का वर्ष था और लड़के ने अठारहवीं शताब्दी का परिधान पहन रक्खा था।

## (३८) मैं अपनी दादी थी—

एडलाइन सेकटर, डब्ल्यू० सी० निवासिनी मिसिज़ ए० राबर्ट्स का कथन है कि जब मैं सत्रह अठारह वर्ष की थी तो मैं घोर रूप से रुग्ण हो गई, और एक दिन ऐसा आया जबकि मेरे बचने की कोई आशा न रही। एक रात डाक्टरों के कथनानुसार मेरी नाड़ी की गति बन्द हो गई, इस पर भी मैं जीवित रही। इस घटना के तीन वर्ष उपरान्त क्रमशः मुझ में परिवर्तन आता रहा और मेरी विकृत आकृति मेरी दादी की सी हो गई। वे लोग और नातेदार जिन्होंने मेरी दादी देखी थी बताते हैं कि मेरा चेहरा हूबहू मेरी दादी की तरह हो गया। अपनी बीमारी से पहले मैंने फ़्रेञ्च भाषा बिलकुल नहीं पढ़ी थी। परन्तु तीन वर्ष की अवधि में जहाँ मेरे रंग-रूप में इस प्रकार का परिवर्तन आ गया था वहां मैं एक फ़्रेञ्च के समान ही फ़्रांसीसी भाषा में

बातें भी कर सकती थी। मैंने अपनी सहेलियों और नातेदारों को उस युग की बातें बताईं, जब मेरी दादी नवयुवती थी। पता लगाने पर वे बातें अक्षरशः सत्य निकलीं। मैं यह निवेदन कर देना चाहती हूँ कि जिस समय मेरी दादी मरी थी उस समय मैं एक छोटी सी लड़की थी। दादी ने अपने यौवन काल के वृत्तान्त कभी मुझे नहीं सुनाए थे।

## (३६) वह अंग्रेज़ जो पूर्वजन्म में हब्शी था—

चारनन रोड, डण्डोर निवासी श्री एफ़० डब्ल्यू० कर्नर लिखते हैं कि मैं सन् १९११ में आस्ट्रेलिया गया। यद्यपि मैंने सिडनी का टिकट लिया था, और वहीं निवास करने का विचार रखता था, परन्तु वहाँ पहुँचने पर किसी अन्तरङ्ग शान्ति ने मुझे फ़्री मेण्टल (पश्चिमी आस्ट्रेलिया) जाने पर विवश किया। वहाँ जाकर मुझे ऐसा मालूम हुआ कि यह स्थान मेरी जन्म-भूमि है। जब भी मुझे वहाँ से कहीं जाना होता, मुझे अपने आप रास्ता मालूम हो जाता। मैं बिना भूले-चूके यात्रा में गन्तव्य स्थान पर पहुँच जाता, यद्यपि वहाँ न कोई सड़क थी और न कोई पथदर्शक साथ होता था। मैं कई वर्ष तक आस्ट्रेलिया में रहा और समूचे देश की यात्रा की। यात्रा-काल में मुझे ऐसा लगता था कि मैंने पहले भी इन स्थानों को देखा है। जब कुछ प्रदेशों में मुझे पैदल यात्रा करनी पड़ती, तो मैं सदा झाड़ियों में पानी के डबरे ढूंढ लेता। मैं यह भी मालूम कर लेता कि अमुक स्थान पर पहुँच कर मैं क्या कुछ देखूंगा।

इन बातों को दृष्टिगत करके कई बार मुझे इस विचार से विस्मय होता है कि किसी पहले जन्म में मैं आस्ट्रेलिया का आदिम निवासी था।

## (४०) प्राचीनकाल में मिस्रियों का महन्त था—

मर्रे रोड, रिशविज निवासी श्री डब्ल्यू० एच चोरन्स लिखते हैं :—

इस समय मेरी आयु ५४ वर्ष है। जिस समय से मैंने होश सम्भाला है मैं उसी समय से इस बात का अनुभव करता रहा हूँ कि मैं पुरातन काल में मिस्र देश का एक अधिवासी था और मैं मिस्र के प्रमुख महन्तों में से था। मैं प्रतिदिन उनके साथ शोभायात्रा में मन्दिर में जाया करता था। कल्पना की दृष्टि से मैं अब भी मिस्र के नीले आकाश और सफ़ेद कपड़े पहने पादरियों को देखा करता हूँ।

मेरी समझ में यह बात नहीं आती कि मेरे हृदय में इस प्रकार की अनुभूति क्यों उत्पन्न होती है जबकि माता और पिता की ओर से दोनों परिवार सैकड़ों वर्षों से समरसेट में रहते हैं। मेरे पूर्वज विलियम महान् के साथ इंग्लैण्ड में आए थे।

## (४१) एक लड़की की घटना—

काड ब्रिज, कण्टन, मिडल सेक्स, निवासी मिस्टर डब्ल्यू० बर्नार्ड लिखते हैं :—

इस समय मेरी लड़की रोज़ीटा पाँच छः वर्ष की है। वह कहती है कि मैं पूर्वजन्म में वायना में एक डाक्टर थी। वह यह भी बताती है कि अमुक अमुक पुरुष और स्त्रियाँ मेरी नातेदार हैं। मैं इस बात की जाँच करने के लिए कि जो कुछ वह कहती है ठीक है या गलत, मैं वायना गया और अपनी लड़की को भी साथ ले गया। जब हम उस गली में पहुँचे जिसमें डाक्टर रहा करता था तो लड़की मुझे उस घर में ले

गई। मैंने डाक्टर के लड़कों और नातेदारों को अपने आगमन का उद्देश्य बताया। लड़की ने उन सब नातेदारों को पहचान लिया। उसने उनके नाम बता दिए। आपको अवश्य इस बात पर आश्चर्य होगा, परन्तु यह शत प्रतिशत सत्य है।

## (४२) मृत पूर्व-पुरुष का दर्शन—

यह घटना कोई एक वर्ष की है। मेरे एक मित्र, श्री इन्द्रजीत शर्मा, की माता का निधन हुआ। मैं शोक प्रकट करने गया। मेरे मित्र ने मुझे अपनी माता के अन्तिम क्षणों के सम्बन्ध में जो कुछ बताया, वह आश्चर्यजनक है। उसने बताया कि उसकी माता कुछ दिनों से बीमार थी। रोग कोई विशेष न था, केवल ज्वर आता था। जिस रात तड़के उनकी मृत्यु हुई, उसी रात के कोई बारह बजे की बात है कि उसकी माता ने इन्द्रजीत को जगाया और कहने लगी कि 'अब मैं जा रही हूँ।' मेरे मित्र ने कहा, "मां, तुम व्यर्थ ऐसी बातें कर रही हो, तुम्हें कोई अधिक रोग नहीं है। साधारण ज्वर है, चिन्ता की कोई बात नहीं।" परन्तु उसकी माता कहने लगी—"अब चले ही जाना है। तुम्हारे पिता जी आ गये हैं। वह देखो, तुम्हारे पास खड़े हैं।" मेरे मित्र ने इधर-उधर देखा, कहने लगा—"मेरे पिता जी को मरे तो पाँच वर्ष हो चुके हैं, वे कहां से आ गए? फिर वे मुझे दिखाई भी नहीं देते।"

इन्द्रजीत की मां कहने लगी—"मैं उन्हें साफ़ तुम्हारे बाएं हाथ खड़े देख रही हूँ। वे मुझे कह रहे हैं—परमेश्वरी, अब तैयार हो जाओ।"

इन्द्रजीत की मां का नाम परमेश्वरी था। मेरे मित्र ने सोचा, कदाचित् तीव्र ज्वर है, इसी कारण वह ऊल-जलूल बोल रही है। चुनांचे वह डाक्टर को बुलाने चला गया और अपनी पत्नी को अपनी माता के पास बैठा गया। परन्तु जब वह डाक्टर लेकर वापस आया तो डाक्टर ने उसकी परीक्षा करके कहा कि यह बचेगी नहीं। जो भी हो, मैं औषधि दे देता हूँ। चुनांचे उसने टीका लगाया और दवा दे गया कि आध घण्टे बाद पिला देना। परन्तु वह आध घण्टा पूरा न होने पाया था कि इन्द्रजीत की माता चल बसी। सम्भव है, कुछ लोग कहें कि तीव्र ज्वर के कारण इन्द्रजीत की माता ऐसी बातें कर रही थी। परन्तु मैंने जो कुछ लिखा है वह है बिलकुल सत्य। इसमें रत्ती भर भी झूठ या अतिशयोक्ति नहीं है।

(महेन्द्रनाथ त्रिखा, लुधियाना; दैनिक 'प्रताप' जालन्धर २८ अप्रैल, १९६८)

## (४३) पिछले जन्म के हाल बताने वाला लड़का देहली में मृत्यु के बाद जम्मू में जन्मा—

जम्मू, डाक द्वारा—श्रीगोविन्द राम, कच्ची छावनी, जम्मू से लिखते हैं कि जम्मू के मुहल्ला पक्का डंभा में एक साढ़े तीन वर्ष का लड़का अपने पूर्वजन्म के हाल बताता है। वह अपना पिछला नाम जगदीश बताता है, पिता का नाम मोतीलाल, और माता का नाम शान्ति। नई दिल्ली में पिता के होटल का नम्बर ५०४ और बूट शाप नम्बर १६६, घर का १६०७ सिक्स आई०; इलाके का नाम साफ़ नहीं बतलाता। संभवतः ओखला या कोटला बताता है। वह हठ करता

है कि वह अपने पहले घर की ओर जाएगा। इस बच्चे ने यह भी बताया कि वह दसवीं में पढ़ता था। होली वाले दिन बस के नीचे आकर मर गया। मरने के बाद के अनुभव के बारे में उसका कहना है कि वह पास खड़ा होकर अपना शव और रोते हुए परिजन देखता रहा। उसने अपनी जलती हुई चिता को भी देखा। वह कई दिन आकाश में रहा, वहां उसे बहुत से मरे हुए लोग मिले। वह छोटा सा लड़का रेलवे ट्रेन की पूरी शकल बनाता है। यद्यपि ट्रेन उसके माता-पिता ने भी नहीं देखी। माता-पिता बड़े सावधान होकर बात करते हैं, ताकि बच्चे को मानसिक हानि न हो।

(दैनिक 'प्रताप' नई देहली, १० अप्रैल १९६८)

## (४४) लाल भूत का उत्पात—

इलाहाबाद ५ मई—यहां से ३५ मील दूर एक गांव बयारगंज के एक व्यक्ति राभ देवसिंह को 'लाल भूत' ने सता रखा है।

भूत ने अपनी 'कार्यवाहियां' कुछ माह पूर्व आरम्भ की थीं जबकि घर की एक स्त्री के देखते-देखते खाना पकाने का बर्तन चूल्हे पर से ऊपर उठा, कुछ समय तक हवा में लटकता रहा और फिर गायब हो गया।

इसके बाद घटनाओं का क्रम आरम्भ हो गया। सूटकेसों में पड़े तथा दीवारों के साथ लटकते कपड़ों को आग लग जाती है, समय-समय पर घर में ईंटों की वर्षा होती है और अनाज जल उठता है।

श्री सिंह के एक छोटे लड़के का कहना है कि उसने घर के पास एक लाल भूत को घूमते देखा है। गांव के अन्य बहुत से लोगों का भी कहना है कि उन्होंने भूत को देखा है।

सारा गांव इस भूत से आतंकित है, क्योंकि कोई नहीं जानता कि भूत का अगला शिकार कौन होगा।

('वीर प्रताप' ३ मई १९६८)

[ इस प्रकार की कई घटनाएं पता लगाने पर किसी न किसी व्यक्ति की शरारत और दुष्टता प्रमाणित हुई हैं। परन्तु ऐसी सभी घटनाओं को झूठी या पाखण्ड कहना भी कठिन है—सं. रा.। ]

## मौत आप से पनाह मांगती है

आप कहेंगे—"ग़लत, मौत कहाँ पनाह मांगती है हमसे! उल्टे, हम जीवनधारी ही उससे पनाह माँगते है।" पर मैं नम्रतापूर्वक निवेदन करूंगा कि आपने ग़लत समझा है। वस्तुतः मौत ही आपसे पनाह माँगती है। अनन्त वर्षों से लगातार प्रयत्नशील रहने के बावजूद आपको—यानी आपकी आत्मा को—वह मार नहीं सकी है। सच तो यह है कि इतनी लम्बी अवधि में एक भी आत्मा का संहार करने में उसे सफलता नहीं मिली है। फिर पराजित कौन हुआ आप या मौत? पहले पाश्चात्य जगत् की धारणा थी कि मृत्यु के साथ जीवन का अन्त हो जाता है—जीवन पर मृत्यु विजय पाती है। पर अब वह भी कहने लगा है—जीवन अपराजेय है। मृत्यु के बाद भी जीवन का अस्तित्व रहता है—वह कभी नहीं मरता।

आधुनिक ईसाई-जगत् के स्वनामधन्य धर्म-प्रचेता नार्मन विन्सेण्ट पील का कहना है—"पचास वर्ष तक जीवन-मरण की समस्याओं से उलझ कर मुझे जो अनुभव प्राप्त हुए हैं, उनके आधार पर मैं यह कह सकता हूँ कि मृत्यु जीवन की समाप्ति नहीं, वरन् और भी बड़े विस्तार की प्राप्ति है। मृत्यु दो जीवनों के बीच की सीमा-रेखा मात्र है।"

सुप्रसिद्ध मानसशास्त्री डॉ० केनेथ वॉकर भी कहते हैं —"प्राणी बार-बार जन्म लेता है। पुनर्जन्म से इन्कार नहीं किया जा सकता। परन्तु मृत्यु और पुनर्जीवन के बीच की जो शृंखला है, उसका रहस्य जब तक विज्ञान नहीं जान लेता, तब तक पुनर्जन्म के सारे पहलुओं पर पर्याप्त प्रकाश नहीं पड़ सकता।"

पुनर्जन्म के सारे पहलुओं के बारे में तो भारतीय दर्शन भी अन्धकार में ही है। वस्तुतः यह एक ऐसा विषय है, जिसके बारे में आनन-फानन किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंचा जा सकता। प्रवुद्ध विचारक स्टीवर्ट ह्वाइट के शब्दों में, 'हमारी दुनियां जड़ है और मृतकों की दुनियाँ चैतन्य की तीव्र गति के कारण सूक्ष्म। इसी कारण हमारी दृष्टि उस दुनिया में नहीं पहुँच पाती।'

पर यहाँ एक प्रश्न उठता है—वह यह, कि जब मनुष्य बार-बार जन्म लेता है, तब उसे अपना पिछला जीवन याद क्यों नहीं रहता ? आधुनिक काल के सर्वोपरि मनोविज्ञान-वेत्ता फ्रॉयड ने इसका उत्तर इन शब्दों में दिया है—"जन्म के समय की वेदना और यंत्रणा इतनी तीव्र तथा दुःखद होती है कि मानसपट सदा के लिए अवसन्न हो जाता है। जन्म के समय की यह पीड़ा मनोवैज्ञानिक विश्लेषण में प्रायः उभर

आती है। इसी तरह, युवावस्था से प्रौढ़ावस्था में पदार्पण बड़ा पेचीदा होता है—कई झटके ऐसे लगते हैं कि पहले की कई बातें स्मृति से गायब हो जाती हैं।"

परन्तु डा० वॉकर इस कथन से सहमत नहीं हैं। वे कहते हैं कि जन्म के समय मानव-मस्तिष्क की जो अवस्था होती है, उससे फ्रॉयड के तर्क की संगति नहीं बैठती। उनका कहना है—'जन्म के समय शिशु का मस्तिष्क कीट-पतंगों के समान होता है। उस समय वह केवल शरीर से सम्बन्धित कार्यों—जैसे साँस लेना, निगलना, चूमना आदि को ही अंजाम दे सकता है; विचार और स्मृतियां उसकी क्षमता से बाहर होती हैं।···मेरे विचार में हमें पूर्वजन्म इसलिए याद नहीं रहता कि चयन प्रकृति का सनातन गुण है। वह उतनी ही अनुभूतियों और साधन-सामग्रियों को रहने देती है जितनी आवश्यक होती हैं—बाकी को मिटा देती है।'

तो, ये रहे परस्पर-विरोधी दो मत। इनमें से सच कौन है, असलियत क्या है, यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता। वस्तुतः यह अब भी वैज्ञानिक शोध का विषय है। पर इतना तय है कि आत्माएं एक ही शरीर के साथ समाप्त नहीं हो जाती; वे अमर हैं और आवश्यकतानुसार अपना चोला बदलती हैं। सामान्यतः हर आत्मा बिल्कुल नया चोला धारण करती है; पर कभी-कभी वह दूसरी आत्मा के चोले के साथ अपने चोले का परस्पर परिवर्तन भी कर लेती है। दोनों ही बातों के पक्ष में आधुनिक संसार को प्रमाण प्राप्त हुए हैं।

पहले नया चोला धारण करने का प्रसंग लें। इस क्षेत्र में एक गजब का तथ्य—जिसे पुनर्जन्म के पक्ष में सबल प्रमाण माना जा सकता है—सुप्रसिद्ध सम्मोहन-विज्ञान-विशेषज्ञ मोरे बर्न्स टीन ने प्रस्तुत किया है। आज से बारह वर्ष पूर्व, नवम्बर १९५२ में, उन्होंने रूथ सिम्सन्ज़ नामक एक महिला पर अपने सम्मोहन के प्रयोग किये। सन् १९२३ में अमेरिका के आयोवा नामक स्थान में इस महिला का जन्म हुआ था और प्रयोग के समय वह सिम्सन्ज़ नामक एक बीमा एजेंट की पत्नी थी। सम्मोहनावस्था में उक्त महिला अपनी १४६ वर्ष पूर्व की—सन् १८०६ की—अवस्था में पहुँच गई और उसने उस समय की अवस्था के बारे में जो कुछ बयान किया, वह अक्षरशः सत्य साबित हुआ। ब्रिटिश इन्फर्मेशन सर्विस ने भी उसके द्वारा दिये गए वक्तव्य की पुष्टि की। सम्मोहनावस्था में उक्त महिला ने बताया कि वह आयरलैंड की निवासिनी थी। उसका अपना नाम ब्राइडी मर्फी तथा पिता का नाम डंकन मर्फी था। वे बैरिस्टर थे। वह मिस स्ट्रेन के डे स्कूल में पढ़ती थी। उसके पिता का नाम ब्रियन मैकार्थी था और वह बैरिस्टर का बेटा होने के साथ-साथ स्वयं बैरिस्टर था। वह सन्त टेरेसा के गिरजाघर में अर्चना के लिए जाती थी और वहाँ के पादरी का नाम फ़ादर जॉन था। वह स्वयं प्रोटेस्टेंट थी, पर उसका पति कैथोलिक था। उसकी मृत्यु ६६ वर्ष की अवस्था में सीढ़ी से गिरकर हुई थी। उस दिन रविवार था। उसने यह भी बतलाया कि फ़ादर जॉन के कथनानुसार उसकी आत्मा किसी शुद्धि-स्थल पर जाने वाली थी; पर ऐसा नहीं हुआ, अतः वह मृत्यु के बाद भी तब तक अपने घर में ही रही, जब तक फ़ादर जॉन मरे नहीं। जब वे मरे, तब उसने

उनसे कहा कि उन्होंने उसे गलत बतलाया था। अपने पति के घर से विदा होने के बाद वह अपने मायके जाकर रहने लगी और अन्त में सन् १९२३ में अमेरिका के आयोवा नामक स्थान में उसका जन्म हो गया। मरणोत्तर जीवन के सम्बन्ध में उसने बतलाया कि वह पृथ्वी पर के जीवन से अच्छा नहीं था। उस अवस्था में जो कुछ चाहो, नहीं किया जा सकता था। अधिक देर तक किसी से बातचीत भी नहीं की जा सकती थी। खाने-पीने की भी ज़रूरत नहीं पड़ती थी। सम्मोहनावस्था में रूथ सिम्मन्ज ने आयरिश भाषा में बातें भी कीं, जबकि इस जीवन में आयरिश भाषा से उसका कभी परिचय भी नहीं हुआ था। कुछ लोगों ने आशंका प्रकट की कि सम्भवतः ब्राइडी मर्फी या मर्फी-परिवार के सम्बन्ध में कोई पुस्तक कभी प्रकाशित हुई हो और उसके आधार पर उसने वह वक्तव्य दिया हो। पर जांच करने पर पता चला कि इस तरह की कोई पुस्तक कभी प्रकाशित नहीं हुई थी। फिर स्वयं कभी आयरलैण्ड न जाने के बावजूद उसने वहां के भूगोल के बारे में अत्यन्त बारीक बातें बतलाईं—ऐसी बातें, जो किसी पुस्तक में नहीं मिल सकती थीं। उसके घर में कितने कमरे थे, रसोई घर किधर था, घर के सामने किस-किस चीज़ के पेड़ थे, आदि।

पुनर्जन्म का इससे बड़ा सबूत भला और क्या मिलेगा? पुनर्जन्म-सिद्धान्त के विरोधियों के सारे तर्क सम्मोहन के इस प्रयोग ने विफल कर दिये। यह स्पष्ट हो गया कि एक शरीर छोड़ने के बाद आत्मा इधर-उधर घूमती रहती है और फिर नया शरीर धारण कर संसार में आ जाती है।

मुरादाबाद के स्वामी गोपालतीर्थ के आश्रम में विद्याध्ययन कर रही साढ़े ग्यारह वर्षीय बच्ची कल्पना भी पुनर्जन्म की एक अच्छी मिसाल है। इस बच्ची का जन्म २६ जनवरी, १९५३ को हुआ था। जब उक्त बच्ची केवल तीन वर्ष की थी, तभी उसने वेद-मन्त्रों का पाठ करते समय अपने गुरु स्वामी जी की गलती सुधारी थी। कुछ महीने बाद दो अन्य पंडितों की भी उसने गलती पकड़ी थी। इस लड़की ने बाद में राजस्थान के राज्यपाल के समक्ष अपने वेदज्ञान का प्रदर्शन किया। उसे चारों वेद कण्ठस्थ हैं। सर्वविदित है कि वेदमन्त्रों का उच्चारण बड़ा कठिन है। महर्षि दुर्वासा तक से उच्चारण में भूल हुई थी, जिस पर सरस्वती ने व्यंग्यपूर्वक हँस दिया था। पर इतनी छोटी बच्ची से उच्चारण में कोई भूल नहीं होती। जयपुर के कुछ पंडितों ने उसकी परीक्षा लेने के क्रम में कुछ ऐसे मन्त्रों का भी उल्लेख किया, जो सामान्यतः प्रचलन में नहीं हैं। इस बच्ची ने न केवल उन मन्त्रों को पूरा-पूरा सुना दिया, बल्कि यह भी बतला दिया कि वे मन्त्र किस-किस वेद के थे। स्वामी गोपालतीर्थ और आश्रमवासियों का कहना है कि कल्पना को कभी वेद नहीं पढ़ाये गए—तीन वर्ष की अवस्था में किसी को वेद पढ़ाये भी नहीं जा सकते। निश्चय ही, अपने पूर्वजन्म के अध्ययन के आधार पर कल्पना वेद की पंडिता है। स्वामी जी के इस कथन से शायद ही किसी का मतभेद हो।

आत्मा के नया चोला धारण करने की बात इस प्रसंग से भी पुष्ट होती है। लेकिन कभी-कभी आत्मा किसी दूसरे आत्मा के शरीर में भी प्रविष्ट हो जाती है। इसका एक

अत्यन्त सवल प्रमाण सन् १८७४ ईसवी में प्राप्त हुआ था। उस वर्ष रूस का एक धनी यहूदी बीमार पड़ा और २२ सितम्बर को उसकी दशा इतनी बिगड़ गई कि लोगों ने उसका अन्तिम क्षण आया मान कर प्रार्थना, आदि शुरू कर दी। पर कुछ देर बाद ही उसकी दशा सुधरने लगी। उसने एक बार आंखे खोलीं और फिर थका-हारा-सा वह सो गया। दूसरे दिन जब वह सोकर उठा, उसकी हालत ही दूसरी थी। न तो वह अपने सगे-सम्बन्धियों को पहचानता था और न उनकी भाषा ही समझता था। अपनी मातृभाषा इब्रानी और रूसी भाषा, दोनों के अलावा वह कोई तीसरी ही भाषा बोल रहा था। फिर, जब उसने शीशे में अपना चेहरा देखा, तो बड़े ज़ोर से चीत्कार कर उठा और घर छोड़कर भागने लगा। अब डाक्टरों ने उसे विक्षिप्त घोषित कर दिया और उसे एक कमरे में बन्द कर दिया गया। स्वभावतः ही, इस अद्भुत परिवर्तन का समाचार दावानल की भाँति चारों ओर फैल गया और सरकारी डॉ० उसकी जाँच करने आये। अब पता चला कि वह अंग्रेज़ी बोलता था और लैटिन लिपि में लिखता भी था। इससे यह धारणा गलत साबित हो गई कि वह पागल हो गया था। अतः उसे सन्त पीटर्सबर्ग के चिकित्सा-विश्वविद्यालय में ले जाया गया, जहां उसने कहा—"यह अजीब नाटक हो गया मेरे साथ। मैं उत्तरी अमेरिका के ब्रिटिश कोलम्बिया प्रदेश के 'न्यू वेस्ट मिन्स्टर' नामक नगर का निवासी हूँ। मेरा नाम इब्राहिम डरहम है, इब्राहिम चारको नहीं। मेरी एक पत्नी और लड़का है। पहले मैं लंगड़ा था—यह शरीर मेरा नहीं है, पता नहीं, यह सब क्या हो गया—कैसे हो गया।" उसके इस वक्तव्य के आधार पर अमेरिका के न्यू वेस्ट

मिन्स्टर नगर में जांच की गई, तो पता चला कि वहाँ भी ठीक ऐसी ही एक घटना घटी थी। इब्राहिम डरहम नामक व्यापारी एक संगीन बीमारी से मुक्त होने के बाद २२ सितम्बर को—उसी दिन—पागल हो गया था। वह अपने को इब्राहिम चारको बतलाता था तथा इब्रानी और रूसी भाषाएँ बोलता था। अब स्थिति स्पष्ट हो गयी कि उन दोनों व्यक्तियों की आत्माओं ने परस्पर अपने चोले बदल लिए थे। पर यहाँ एक समस्या ऐसी उपस्थित हुई कि सब लोग परेशान हो उठे। परिवारवालों के सहमत हो जाने के बावजूद उनकी पत्नियां इस बात के लिए तैयार नहीं थी कि वे एक भिन्न स्वरूपवाले को अपना पति स्वीकार कर लें। उनके जाने-पहचाने पति में अपना पति नहीं था और जो उनका पति था, वह उनके लिए सर्वथा अपरिचित था। आखिर, किसी तरह समझाने-बुझाने पर उन्होंने अपने पति का नया शरीर स्वीकार कर लिया।

ठीक इसी तरह की एक घटना कुछ वर्ष पूर्व उत्तर-प्रदेश के अलीगढ़ ज़िले में घटी थी। इस ज़िले में हैबदपुर नाम का एक गांव है। इस गांव के एक ब्राह्मण का छः-वर्षीय पुत्र रमेश बुरी तरह बीमार पड़ा और काफ़ी चिकित्सा तथा सेवा-शुश्रूषा के बाद चंगा हुआ। पर वह बच्चा बराबर रटने लगा कि "उस पर क़िसी भूतनी ने जादू कर दिया है। न तो वह घर उसका था और न ही शरीर।" उसने कहा—'मैं रमेश ज़रूर हूँ, पर मेरा घर घर्रा में है। (घर्रा हैबदपुर गांव से ६ मील दूरस्थ एक कस्बा है।) फिर, मैं बच्चा भी नहीं हूँ। मेरी अवस्था ३१ वर्ष की है। मेरी पत्नी है, बच्चे हैं! मैं कैसे आ गया यहां? मैं बच्चा कैसे बन गया? यह ज़रूर किसी डायन या भूतनी की

करामात है। उसके घर वालों ने उसे डाँट-डपट कर चुप कर दिया, फिर घर्रा के रमेश का पता लगाया। जिस दिन यह बच्चा लम्बी बीमारी के बाद होश में आया था, उसी दिन घर्रा का रमेश स्वर्गवासी हो गया था। पर वस्तुतः स्वर्गवासी कौन हुआ था, यह बालक रमेश के घरवालों के सामने स्पष्ट था।

आत्माओं का यह शरीर-परिवर्तन भी इसी तथ्य की ओर संकेत करता है कि शरीर छोड़ कर भी आत्मा जीवित रहती है। हां, उसका आभास हमें तभी मिलता हैं, जब वह किसी शरीर को धारण करती है। पर कुछ लोगों का यह भी दावा है कि वे शरीरहीन आत्माओं से सम्पर्क स्थापित कर लेते हैं। इन आत्माओं को वे प्रेतात्मा कहते हैं। नार्मन विन्सेंट पील महोदय ने एक स्थान पर लिखा है—
"एक पादरी होने के कारण ऐसे अनेक लोगों से मेरा सम्बन्ध रहा है, जिन्हें प्रेतात्माओं से साक्षात्कार करने की क्षमता प्राप्त है। वे व्यक्ति काफ़ी विद्वान् और आधुनिक वैज्ञानिक विचार-धाराओं को मानने वाले हैं। अतः उनकी बातों पर अविश्वास करने का मैं कोई कारण नहीं पाता। वे कहते हैं कि प्रेतात्माओं की दुनियां में वे अपार सौन्दर्य पाते हैं—साथ ही जाने-पहचाने चेहरे भी। वह दुनिया इस दुनिया से कहीं अधिक सुन्दर है। अतः अब मुझे यह निश्चय हो गया है कि हम एक अविनाशी जगत् में निवास करते हैं, जहां मृत्यु का अर्थ एक अपेक्षाकृत ऊँचे और सुन्दर जीवन की प्राप्ति है।"

अब ज़रा सोचकर बतलाइए—मृत्यु बड़ी है कि आप? मृत्यु से आप हारते हैं या मृत्यु आप से हारती है? कौन किससे पनाह मांग रहा है?

—'श्रीरश्मि'

('समाज-विकास' से साभार)

Shri Kanth Kaul

Sd/-

1.7.75

Guptaganga,
Nishat,
Kashmir.








13-5-73

